वन्दे जिनवरम्

-:निर्वाण पथिक:-

स्वर्ण ज्योति

सकलनकर्ता :

श्री श्री १००८ महा सति प्रवर्तनी राजमति जी महाराज की शिष्या महां सति श्री ईश्वरा देवी जी महाराज की शिष्यानुशिष्या

"साध्वी स्वर्ण जी"

प्रकाशक :
ला० जगदीश लाल जैन
प्रो० मैं० जगदीश ब्रादर्ज,
गान्धी मारकीट,
सदर बाजार देहली

मूल्य १)

मुद्रक
ला० फ
जैन प्रिं
अम्वाला

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक मे महासति अंजना की जीवनी, चन्दन अनाथी मुनि बीस विहरमानों की स्तुति तथा कतिपय संग्रह है।

महासति अजना चरित्र की लेखिका महासती स्वर्णा जी म० हैं। लेखिका मे एक ऐसी विशेषता है जो उल्लेखनीय है।

समस्त जीवन घटनाओ को एक कविता की लडी मे पिरो दिया। ऐसी महानात्माओ के जीवन चरित्र मे समाज शिक्षा प्राप्त कर उन्नति के डगर पर बढ सकता है।

यद्यपि हमारे श्रमणी वर्ग मे यह सद् प्रेरणा की जागृति हो। यदा कदा हम महापुरुषो के आदर्शो का अवलोकन करते है। हमारा मन अपने पूर्वजो के प्रति नत मस्तक हुए बिना नही रहता।

इसी आशा के साथ —

—मुनि धर्मेन्द्र जी

तर्ज :—आने वाले कल की...

वीर कान्ता चली उस पथ पर, जिस पै चली चन्दन वाला।
वीतराग से प्रीत लगाकर, सुख दुनियां का तज डाला।
वीर...

१ कई वर्षों से दीक्षा की धुन लगी हुई थी तन मन में।
मीरा की तरह ही काटा, इसने समय प्रभु चिन्तन में।
मिली न जब तक इसे इजाजत, घर में ही रह सयंम पाला।
वीर...

२ मात पिता ने प्यार से रोका, भाई बहन ने सम...
अपने परायों ने भी टोका, सखियों ने भी ...
स्वर्णा सति जी के उपदेशों, ने ऐसा जादू ... डाला।
वीर...

३ जगदीश मुनि जी के आने से, कठिनाई भी हल हुई।
अटल इरादा देख के इस का, घर से इजाज़त मिल गई।
आज दूज के दिन और शुभ घड़ी, पी लिया अमृत का प्याला।
वीर—

४ आज नगर के सब नर नारी, खुशियां खूब मनाएं रे।
तेरी इस कुर्बानी पै, श्रद्धा के फूल चढ़ाए रे।
बाल अवस्था में ही तुमने, इतना मुश्किल काम सम्भाला।
वीर...

५ सारे ही भारत की जनता, करती है बस यही ...
जैसा उत्साह आज है तेरा, सदा रहे ये ही ...
आत्म आनन्द, मेहर करे, सत धर्म हो तेरा ...

६ जिस राह पै तुम आज चली हो, उस पै ही...
लाख मुसीबत आए बेशक, हरगिज न ...।
इन्सान अगर दृढ हो जाएं, झुक जाता है ऊपर ...



कुमारी वीर शान्ता जैन

रविवार–साप्ताहिक आरती

तर्ज —ॐ जय जगदीश हरे।

ॐ जय शारद माता अम्बे जय शारद माता,
विद्या शुभ वरदानी, तू ही जग माता। ॐ जय
१ वीतराग के श्री मुख, गिरा जो प्रगटानी, अम्बे०
अक्षर रूपी घट घट, व्यापक ब्रह्माणी। ॐ जय
२ वाग्वादिनी तेरा जो ध्यान धरे, अम्बे०
होय प्रबुद्ध विशारद, सब सन्मान करे। ॐ जय
३ हंस वाहिनी सरस्वती, सन्मति दान करो, अम्बे०
होय बाल धी वृद्धि, जडता दोष हरो। ॐ जय
४ सिद्धि दायिनी भगवती, सुरनर यश गावे, अम्बे०
तुम सुमरन से माता, पाठ याद आवे। ॐ जय
५ "ॐ वम्भिए लिवियै" नित्य प्रति पाठ करे, अम्बे०
होय उत्तीर्ण विद्या, पण्डिता वीच सरे। ॐ जय
६ प्रसन्न हो कर माता, काव्य शक्ति दीजे, अम्बे०
नमत "चौथमल" चरनन, विनती सुन लीजे। ॐ जय

सोमवार

तर्ज —ॐ जय जगदीश हरे।

जय जिनवर चन्दा, स्वामी जय जिनवर चन्दा,
सुख सम्पत्ति के दाता, करते आनन्दा।
ॐ जय जिनवर चन्दा। जय १
१ जयन्त विमान से आगे, लक्ष्मी के नन्दा, स्वामी०
महासेन घर जन्मे, चन्द्र पुरी चन्दा। ॐ जय

२ कौशल पुर है सुन्दर, जन्में जिनराया, स्वामी०
क्रौंच पक्षी पद लक्षण, कनक वरण काया। ॐ जय ..

३ संयम ले केवल पद पा, ज्योति विकसाई, स्वामी०
सब प्राणी हित प्रभु ने, वाणी प्रगटाई। ॐ जय ..

४ ब्रह्म लग्न में एक चित से, सुमति गुणगावे, स्वामी०
भक्त शिरोमणी हो कर, नित्यानन्द पावे। ॐ जय ..

५ 'चौथमल' कहे प्रभु का पावन नाम सरे, स्वामी०
शुद्ध बुद्ध वाणी हो, दुर्गुण दोष हरे। ॐ जय—

शुक्रवार

तर्ज– ॐ जय जगदीश हरे।

जय जिनवर प्यारा, स्वामी जय जिनवर प्यारा।
सुविधि नाथ सुखकारी, जाने जग सारा।
ॐ जय जिनवर प्यारा। लय०

१ काकंदी नगरी अति सुन्दर, सुग्रीव महाराया, स्वामी०
रामा राणी जाया, सब जन सुख पाया। ॐ जय...

२ नाम नाथ का नीका, पुष्प दन्त सोहे स्वामी०
मकर चिन्ह के धारी, सुर नर मन मोहे। ॐ जय...

३ शुभ्रानन शुभ ज्योति, लेश्या शुभ पावे, स्वामी०
उज्जवल दर्शन धारी, उच्च गति पावे। ॐ जय...

४ शुद्ध हृदय से जो नर, सुविधि नाथ ध्यावे स्वामी०
सुविद्धि हो उसकी, सुन्दर फल पावे। ॐ जय ..

५ 'चौथमल' आशा कर, शरण लिया तेरा, स्वामी०
कृपा किरण से हृदय, कमल खिले मेरा। ॐ जय ..

शनिवार

तर्ज— ॐ जय जगदीश हरे।

ॐ मुनि सुव्रत स्वामी, स्वामी मुनि सुव्रत स्वामी।
सकट नाशक प्रभु वर प्रणमु शिरनामी।
ॐ मुनिवर सुव्रत स्वामी 'जय।

१ अपराजित से चव कर, राज गृही आये, स्वामी०
नृप सुमित्र कुल दीपक, पद्मा के जाये। ॐ मुनि

२ कूर्म सुलक्षण सोहे, श्याम वरण धारे, स्वामी०
केवल ज्ञान उजागर, भक्तन रखवारे। ॐ मुनि

३ विचर विचर कर प्रभु ने, लाखों जन तारे स्वामी०
आवागमन मिटा कर, पाये सुख सारे। ॐ मुनि ..

४ ओम् ह्रीं मुनि सुव्रत, जाप जपे भारी, स्वामी०
मन्द ग्रह टल जावे, पावे सुख भारी। ॐ मुनि

५ जो नरशुद्धि मन ध्यावे, सब दुःख विनसावे स्वामी०
'चौथ मुनि' मन वाछित, सुख सपति पावे। ॐ मुनि

सिद्ध स्तवन

तर्ज— मांच

सेवो सिद्ध सदा जय कार, जासे होवे मंगलाचार ।। लय।

१ अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार।
अन्तरयामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भण्डार ।।

२ कर पणट्ट कमट्ठ अट्ठ गुण, युक्त मुक्त संसार।
पायो पद परमेष्ठि तास पद, बन्दु वारम्बार।

३ सिद्ध प्रभु का सुमरण जग में, सकल सिद्ध दातार।
मन वांछित पूरण सुर तरू सम, चिन्ता चूरण हार।

४ जये जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मंझार।
तीर्थंकर हूं प्रण में उनको, जब होवे अणगार।

५ सूर्योदय के समय भक्ति युक्त, स्थिर चित दृढ़ता धार।
जय 'सिद्ध' यह जाप तास घर, होवे ऋद्धि अपार।

६ सिद्ध स्तुति पढ़े भाव से, प्रति दिन जो नर नार।
सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, वना रहे सरदार।

७ माधव मुनि कहे सकल संघ में, बढ़े हमेशा प्यार।
विद्या विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार।

चौवीसी आरती

तर्ज– ॐ जय जगदीश हरे ।

जय जिन अव तारी, प्रभु जय जिन अवतारी,

अशुभ ग्रह टल जावे, जपता जय कारी ॥

१ चन्द्र सुविधि जिनेश्वर, है मोती वरण स्वामी०

पद्म वासु पूज्य जी, है लाल वरण वरणा ।ॐ

२ ऋषभ अजित और सम्भव, अभिनन्दन स्वामी०

सुमति सुपार्श्व शीतल (श्रेयास) सिरि अ शनामी ।ॐ

३ विमल अनत धर्मजिन, शान्ति शान्ति करणा, स्वामी०

कुन्थु अरह अरु नेमि, वीर कनक वरणा ।ॐ

४ मल्लि पार्श्व प्रभु है, जग मम ज्यों पन्ना, स्वामी०

मुनि सुव्रत नेमिश्वर, नील कमल वदना ।ॐ

५ 'चौथमल' कहे लीजे, जिनवर का शरणा, 'स्वामी०

विजय लक्ष्मी पावे, नित्य नमो चरणा ।ॐ

श्री नव जिवर का जाप

तर्ज- पंछी मूहें बोल।

मंगल चाहो रे श्री जिनवर का, ध्यान लगाओ रे ॥ लप

१ ॐ ह्री श्री अर्हं श्री सम्भव नाथ सुख कारी रे।
पद्म प्रभु और चन्दा प्रभु, सुमरो हितकारी रे।

२ सुविधि नाथ जो वासु पूज्य जी, शान्ति पार्श्व मनाओ रे।
मुनि सुव्रत अरिष्ट नेमी जय आनन्द पावो रे।

३ रवि शशि मंगल वुद्ध शुक्र गुरू ग्रह दोप टल जावे रे।
केतु राहु शनि जोर न चाले, जो गुण गावे रे।

४ द्वाद्दश लोगस्स नमोत्थुण को नित दिन पाठ उचारो रे।
दया दान तप जप से, होवे सफल जमारो रे।

५ दो हजार अठारह साल में, सुनो सभी नर नारी रे।
नव निधि दाता नव जिनवर, है आनन्द कारी रे।

भगवान महावीर

जो भगवति त्रिशला तनय, सिद्धार्थ कुल का भान है,
लिया जन्म क्षत्रिय कुल में, प्रिय नाम श्री वर्द्धमान है,
जो स्वर्ण वर्ण प्रलम्ब भुज, सरसिज नयन अभिराम है
करुणा सदन मर्दन मदन, आनन्द मय गुण धाम है,
जो अनन्त ज्ञानी है, प्रभु, और अनन्त शक्तिवान है,
किस मुख से गुण वर्णन न करू, मेरी तो एक जबान है,
योगेन्द्र मुनि चिन्तन निरत, जिस को कि आठोयाम है,
उस वर्द्धमान जिनेश को, मेरा सदा प्रणाम है,

हार और हाथी

यह अमर पति खडग पति नर पति राजा।
म० सभी लालच को ध्याता जी।
जो परम शान्त उपशान्त हुआ वही मुक्ति पाता जी।
१ यह चम्पा नगरी बसे लोग धन वन्ता म०।
कोणिक नृप राज करन्दा जी।
और वहल कुमर हक हार हाथी से मौज करन्दा जी।
जब जल क्रीडा करने को गगा जल माही म०।
वहल कुमर जब जावे जी।
सब राणियों का परिवार साथ खूब खेल मनावे जी।
फिर करे लोक प्रशसा पुन्य वन्तो की म०।
वैरी का दिल घबराता जीजो।
२ यह पद्मावती पटनार राजा कोणिक की म०।
भूप से कुबुद्धि भिडाई जी।
लवो हार हाथी को माग यदि अपनी ठकुराई जी।
जब वहल कुमर पर कोणिक हुकम चलाया म०।
कुमर तो कही नही माने जी।
उठ गया नाना जी के पास कोणिक राजा के छाने जी।
तब कोणिक राजा ने दो तीन दूत पठाया महाराज।
शरण आया निज दाता जी जो।
३ जब युद्ध भूमि पर हुआ भूप इकट्ठा म०।
चेडा ने बाण चलाया जी।
और काली कुमर दस भ्रात जिन्हों का जोर हटाया जी।
जब कोणिक राजा ने मदद के लिये बुलाया म०।
शक्रेन्द्र चमरेन्द्र आया जी।

करके सूत्रो का पाठ गुरु को शीश नवाया जी।
पारने की आज्ञा हाथ जोड़ कर मागी।
महाराज फिर नगरी में सिधारे जी—कृपा।
२ उस नगरी में तीन ब्राह्मण भाई रहते।
महाराज जिन्हों की तीन ही नारी जी।
नाग श्री थी उन में मुख्य और ऋद्धि घर सारी जी।
बारी उस दिन थी नाग श्री की आई।
महाराज उसने सब भोजन बनाया जी।
कड़बा तूबा रिंध गया जल्दी से पता न पाया जी।
पता लगने पर नई सब्जी और चढ़ाई।
महाराज तूबां रख दिया किनारे जी—कृपा।
३ होन हार मुनि उस घर अन्दर जा पहुंचे।
महाराज खुशी हुई नाग श्री महान।
उसने समझा उकुरडी घर पहूंची है मेरे आन।
वस वस करते सब डाल दिया पात्र में।
म० मुनि ने आश्चर्य पाया जी।
ले कर आहार गुरु चरणों में आ शीश नवाया जी।
गुरु देव देख हैरान हुए भोजन को।
म० बोले ए निश्चय प्यारे जी—कृपा।
४ यह जहर बराबर सारी भाजी जानो।
म० इसे बिल्कुल मत खाना जी।
इसे बाहर आवो पलट हुए मुनि तुरत रवाना जी।
सारे देखा कोई फासुक जगह नही पाई।
महाराज बूंद एक तले गिराई जी।
आई सैकड़ों कीड़िया दौड़ २ सुगन्धि पाई जी।
जिस ने खाया प्राण उसने छोडे।

महाराज चित मुनि राज विचारे जी—कृपा।
५ कहा गुरु देवो ने जीव न मरने पावे।
महाराज फ्रामुक है पेट हमारा जी।
खुश हो कर खा गए मुनिराज तब साग वो सारा जी
कर लिया सथारा तुरत उसी जगल मे।
महाराज सब जीवो के खिमाया जी।
नही किया जरा भी क्रोध ध्यान उत्तम मन ध्याया जी
काल करके मुनि स्वार्थ सिद्ध अन्दर पहुचे।
महाराज हुऐ वहा जय २ कारे जी—कृपा।
६ तेतीस सागर की आयु पूर्ण करके।
महाराज महाविदेह क्षेत्र मे जासी जी।
वहा ले कर सयम भार फिर केवल पद पासी जी।
क्षय करके आठो कर्म मोक्ष पावो गे।
महाराज जगत का देखो नजारा जी।
दुख जन्म मरण के काट मिले गा पद निर्वाणा जी।
गुरु देव देख रहे वाट तपस्वी जी की।
महाराज मुनि जी क्यो न पधारे जी—कृपा।
७ साधु को भेज कर सारी खबर मगवाई।
महाराज भेद जब असली जाना जी।
हुआ कष्ट गुरु को बहुत कौन यहा करे व्याख्याना जी।
चम्पा नगरी मे भेज सैकडो साधु।
महाराज खबर सारे फैलाई जी।
आचार्य ताड गये नाग श्री ने जहर खिलाई जी।
ब्राह्मणो ने मुनी निन्दा शहर मे होती।
महाराज सोच मे पडे विचारे जी—कृपा।
८ उसी वक्त निकाला नाग श्री को घर मे।

महाराज दुखी वह हुई भारी जी।
हुआ पाप उदय तत्काल रोग सोलह हुए जारी जी।
जिसतर्फ जावे उसी तर्फ से गाली खावे।
महाराज कर्मो ने दुखी बनाया जी
काल करके आखिर कार वास नर्कों में पाया जी।
इक इक नरक में दो दो फेरे पावे।
महाराज जोर से यम खड़े मारे जी—कृपा।
९ रुल कर के अनन्ता काल जीव वह पापी।
महाराज जन्म द्रोपदी का पाया जी।
ले कर के संयम करनी स्वर्ग पंचम जिन पाया जी।
महाविदेह में करनी कर मुक्ति पावे गी।
महाराज ज्ञाता सूत्र में आया जी।
उसे पाप कर्म से भाई प्रभू ने साफ बताया जी।
दो हज़ार दो सम्वत् पोष महीना।
महाराज पटियाला नगरी माही जी।
महावीर प्रभु प्रताप अमर मुनि लावणी गाई जी।
रौनक होती है खूब कथा के अन्दर।
महाराज जीव यहां कई संवारे जी।
कृपा करके इक दिन चम्पा नगरी में पधारे जी।

द्वारिका नगरी

वाईसवां श्री नेम जिनन्द है, छोड़ दिया संसार का फंद है।
तिन ही काल तिन समय की वात है,
सुनी वैराग करी पाप क्षय जात है (१)
द्वारिका नगरी तना विस्तार है, सांभल क्रोध कषाय निवार है

अडतालीस कोस की लम्बी ए जान जो,
छत्तीस कोस की चौडी पहचान जो, (२)
सोने का कोट रत्नामय किंगरा,
हेठा से चावडा ऊपर से साकडा,
सतरा गज ऊचा बाहरा गज नीवा है,
आठ गज छ गज चौडा है बीच मे (३)
एक हाथ किंगरा ऊचा लम्बा मोठा है,
अर्ध हथ चावडा किया सो मोठा है,
आठ गज खाई चौडी ने ऊची गई,
शोभती हीरों की बुर्ज फिरनी रही, (४)
बहुतर क्रोड घर कोट मझारा है,
साठ करोड घर नगरी से बारहा है,
वर्षा हुई दिन तीन सुख कारा है,
सौनेया करी ने भरया भण्डारा है, (५)
वे श्रामण देवता एह रचना करी,
प्रत्यक्ष जान लो देवता नी पुरी,
श्री कृष्ण जी का महल छयानवे हजार है,
इक्कीस भूमिया उचा सार है, (६)
बल भद्र जी का महल चोपन हजार है,
भूमि भर भूमि से गजिल अठार है,
बहुत्तर हजार है वास प्रभु देवरा,
दस भूमिया ऊचा छज्जा सुवर्णरा, (७)
दसो दसार ना दम दस भूमिया,
ऋद्धि घनो घनो राजो को थी प्रिया,
महल आठ भूमिया सर्व राजा तना शोभता,
भवन सत भूमियाँ अन्य रियामत का, (८)

घर सत भूमियां सघला राजान जो,
इस में शंका कोई भूल मत आन जो,
पुन्य वंता सब लोक वसता तिहा,
सकल संतोष दातार गुण वंता है (९)
इम राज करता श्री कृष्ण मुरार है,
दर्शन जिन्हों का प्रिय सुखकार है,
सोलह वर्ष का राज मैं थापियां,
वर्ष चालीस में मंडलीक राजिया, (१०)
चौदह वर्ष फिर देश को साधिया,
शूरों में वीर वासु देव पद लाधियां,
सत्तर में वर्ष त्रिखण्डी हो गया,
एक हजार वर्ष आयु का कहा, (११)
पुण्य प्रताप से ऋद्धि आई हाथ में,
उन का जोड़ करो कौन कौन साथ में,
समुद्र विजय आदि दस दसार है,
लोपे नही कोई कृष्ण जी की कार है, (१२)
बलभद्र आदि पाच महावीर है
अर्जन पर्जन आदि रणधीर है,
बलवन्त कुमार साढ़े तीन करोड़ है,
पर्जन कुमार आदि भाईयों की जोड़ है (१३)
साम्बु प्रमुख भाई भाई है दोहला,
साठ हजार दुर दन्त सोहे भला,
वीर इक्कीस हजार है वॉकडा गर्जना,
वीर सैन आदि शत्रु दल भञ्जना, (१४)
महा सैन प्रमुख बलवन्त योद्धा घना,
छप्पन्न हजार सोभता वीर फौजा तना,

उग्रसेन राजा आदि सोलह हजार है,
मोटे राजा श्री कृष्ण जी के लार है, (१५)
रुकमणी आदि हजार बत्तीस है
राणिया महल मे सोहे जगीस है
एक एक के साथ मे दो दो विराङ्गना,
छयानवे हजार गिनती वरी अंगना (१६)
इतना ही रूप श्री कृष्ण वैक्रिय करे
सुख पसार के पावे पुण्य की ऋद्धि भरे,
समुद्र देश्या के अनेक प्रकार है,
अनग सेन मर्द मे मन्दार है (१७)
ए तनवर सेवर दीपे ठे अति घना,
चरण श्री कृष्ण जी के सेवे ह नर जना,
श्री कृष्ण जी का बेटा साठ हजार है,
बेटियो का चालीस हजार परिवार है (१८)
नाग पचास परिवार पोता तना
सुन्दर सोभना शान्ति मे अति घणा,
सब का अधिपति अटूट महाराज है,
पगोपगी साथे रती या राज है, (१९)
हाथी घोडा रथ ग्यारीस २ लाख है
अडतालीस लाख पैदल पहे युद्ध की साख है,
बारह हजार देवता सेवा करे सदा
वासु देव पद देव पद पावे की आज्ञा न लोपे कदा (२०)
श्री कृष्ण बलभद्र जोडी भाईयो की दीपती
चन्द्र सूर्य सरीखी द्वारा मे सोभती।
धर तेज घणा दीपता पूरण चन्द्र सा,
घर दरबारी रती नर नरिन्द्र सा, (२१)

सूरा पना सेती कैसे मूरा पना जी अब हम भये जी निराश
कारज सुधारो स्वामी आपना जी पूरो २ मन की आसरे
स्वामी सयम सुख दी जी खान
रथ पायक पैदल तज्यों जी कुमर धारणी जी मात
श्रेणिक राजे महोत्सव कियों जी चारित्र दियो जिनराज रे स्वामी
मयम सुख दी जी खान।
पांच महाव्रत पालते जी पालन पांच आचार
दोप व्यालीस टालते जी लेवन मूझता अहार रे
स्वामी संयम खण्डे की धार
तप कर काया सोखमी जी पहुंचे अनुत्तर विमान
महा विदेह में सीझसी जी पावसी केवल ज्ञान रे
स्वामी सयम सुख दी जी खान
कर जोड़ी पुन्य उपन्यों जी जो गावे नर नार
पद पावे निर्वाण का जी जन्म मरण मिट जाय रे
स्वामी संयम सुख दी जी खान

"महामति जी की अमर कहानी"

सूनो सुनो ए दुनियां वालो महासति जी की अमर कहानी
१ हिन्दुस्तान में एक नगर था आगरा शहर सुहाना।
पिता हुए बलदेव सिह जी० धन वन्ती जी माता।
उन की गोद पवित्र करने, आए जगत विख्याता।
उत्तम कुल में उत्तम प्राणी, पुण्य वान कहलाता।
पुण्य योग से चवकर आएं, मात पिता हर्पाणी सुनो
२ वचपन खेल कूद में गुजरा, फिर ज्ञान ध्यान में मग्न हुए।
जीव अजीव का रहस्य वताया, शस्त्रों मे प्रवीण हुए।
गुरणी के चरणो में दीक्षा ले कर, क्रिया में संलग्न हुए।

मुमति गुप्ति पाल पवित्र, सम्प्रदाय मे शामिल हुए।
श्री अमर सिह जी आचार्य सव जग के थेहित ध्यानी सुनो
३ उत्पातिया बुद्धि तेज हुई, तव मिथ्या मत का खडन किया।
वादी जन आ प्रश्न करे तो झट उसको ला जवाव किया।
सागर से गम्भीर सती जी धीरजता की निशानी।
मजीठिया रग से रग चढा तव छाई प्रेम की लाली।
परोपकारी सव जग के थे महासति लासानी सुनो
४ देश २ मे विचर २ कर खूब धर्म प्रचार किया।
चार शिष्यनी हुई आप की आगे से सन्तोष किया।
जीवी कर्म देवी जी भगवान राज मति जी को तार दिया।
जो भी कोई शरण मे आया आत्म का कल्याण किया।
ज्ञान चारित्र तप के वल से तारे भवियन प्राणी सुनो
५ छोटी चेली राज मति जी स्याल कोट से आये।
पति छोड कर दिक्षा धारी मेवा खूब वजावे।
आज्ञा कारी रहे सदा फिर ज्ञान ध्यान चितलावे।
वाग आप का खूब खिला है चन्दन के सम सोहे।
श्री हीरा पन्ना चन्दा देवी जी ये जग मे नामी सुनो
६ मानक देवी जी तपस्या करते विनय से ज्ञान को पाया।
आया काल ले गया उनको जग अधेरा छाया।
चरणो मे रह रत्न देई जी सेवा मैं चित लाया।
आया काल ले गया डाली से फुल आला।
ईश्वरा देवी जी का नाम प्यारा मुन लो 'स्वर्ण' कहानी . सुनो

❀ धन्ना शालभद्र ❀

धन्ना जी चौकी पर थयों जी देखी है बूंद आकाश।
१ चमकयों चित सुजान का जी, रोवती देखी है नार ओ।
सेठ जी शालभद्र जी ने त्यागी है नार...
धन्ना कहे सुन हे सखि री तुम क्यों रोवती नार।
२ बत्तीस दिन में छोड़ सी जी बांधव बत्तीस नार ओ।
सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी है नार...
धन्ना कहे सुन हे सखी री शाल भद्र वड़ा हैं गवार।
३ जो वस्तु होवे छोड़नी जी डिल न करिये लगार ओ।
सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी है नार......
बलदी कामन इम कहे जी भाई समान न कोय।
४ कहनी वात सुहेलडी जी करनी दुहेलड़ी होय ओ।
सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी है नार......
धन्ना कहे सुन हे सखि री हम तुम छोड़ी आठ।
५ हम तो पिया जी हंस कर कहा जी तुम ने कर लई साच।
ओ सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी है नार......
सूरा वचन फिर फिर नही जी जन्म न वारम्वार।
संयम हमारे चित वसियों जी और नही कुछ काज।
ओ सेठ जी शाल भद्र जी ने त्यागी है नार......
धन्ना जी उठे महल से जी महलों में पड़ी है पुकार।
कुछ खुले कुछ भिड़े रहे जी जिम तिम रहे किवाड़।
ओ सठ जी शाल भद्र जी ने त्यागी है नार .....
धन्ना जी उठे महलसे जी आये नगर मझार।
हौली हौली चालते जी आये शाल भद्र जी के द्वार।
ओ सेठ जी......

साले को स्वाधान कियो जी उठ उठ सोच विचार।
काल अचानक मारसी जी ज्यो भीतर पर बाज।
श्रो मेठ जी शाल भद्र जी ने त्यागी है नार .
धन्ना शब्द सुना सखी री महलो मे पडी ए पुकार।
रोवे रुदन करे घणा जी, तोडे २ मोतिया दे हार।
श्रो सेठ —
शाल भद्र उठ्यो महल से जी महलो पडी ए पुकार।
नेह तुम्हारा जान सू जी सयम लेवो म्हारे साथ।
श्रो सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी नार
सूरा पने सेती कैसे सूरा पना जी अब हम भये जी निराश
कारज सुधारो स्वामी आपना जी पूरो २ मन की श्रास।
श्रो सेठ जी साल भद्र जी ने त्यागी है नार
दो सूरे खडे हुए जी धन्ना शाल भद्र सार।
समोसरन पहुचे यकी जी सयम लियो तत्काल।
श्रो सेठ—— .
केतक दिन के अन्तरे जी तपस्या करीये अपार।
ग्राम नगर मे विचरत्या जी आये गुरा जी के द्वार।
श्रो सेठ जी शाल भद्र .
गुरा सेती इम कहे जी हम तो करे सँथार।
जिम सुख होवे बच्चा तिम करो जी डिल न करिये लगार।
श्रो मेठ जी शाल भद्र जी ने —
दो माई आई दर्शन को जी बच्चा दर्शन देय।
धन्ना पलक खोली नहीं जी शालभद्र दियो चमकाय।
श्रो सेठ जी शालभद्र .
धन्ना जी मुक्त गये जी शालभद्र छव्वीसवे देवलोक।
एक पलक के खोलने से कैसा एह पया है वियोग।
श्रो मेठ जी शालभद्र

महा विदेह में सीझसी जी पावसी केवल ज्ञान ।
इन में शंका है नही जी अगे वीर वचन प्रमाण ।
ओ सेठ जी शालभद्र......

पांडवों का सजाह

हस्त कल्प पुर अति भलो जित्थे पांडव राजा रायो जी ।
तिस घर रानी कुन्ता सति वलि विजय समुद्रा दोयजी ।
बली विजय समुद्रा दोय पाचों पॉडव वांदसा, ।
मन मोह्यो जी .....
तीन पुत्र कुन्ती जाय वलि विजय समुद्रा दोय जी ।
पांच सहोदर ए हुआ नाले कुमर सरीखा होय जी ।
नाले कुमर ...
इक दिन स्थेवर पधारियाँ पांचों पाँडव वाँदन जाये जी ।
सुन वाणी वैरागियों म्हारी समय समय ओख्रा जाए जी ।
म्हारी ....
संसार प्रेवड़ा ए हवा, भाईयों लागी कौन वुझावे जी ।
सुन वाणी वैरागियों म्हारे भव भव के दुख जाएं जी ।
म्हारे ....
अरिहंत चक्रव्रत न रहा न रहा इन्द्र राजा भूपो जी ।
धन योजन सव कार में भाईयों कार में सव स्वरूपो जी ।
भाईयों ....
पाँडव प्रते स्थेवरों मैं तां लेसु संयम भारो जी ।
राज पुत्र को सौंप के भाई द्रोपदा से करांगे विचारो जी ।
भाई द्रोपदा ....
स्थेवर प्रते पांडवो भाईयों लेसु संयम भारो जी ।
संयम मार्ग अति भलो भाईयों ढ़िल न करियो लगारो जी ।
भाईयों ....

वलती द्रोपदा इम कहे मैं वी लेसु मयम भारो जी।
कत व्यूहली कामनी मेंनु भला न लागे गृह वासो जी।
मेंनु ...
पाच महाव्रत आदरे ऋपि पानेने पांच आचारो जी।
दोप व्यालीस टाल के ऋपि लेन्दे ने असूझता आहारो जी।
ऋपि ..
मयम लेई ने तप किया किया माम गमन का त्यागो जी।
जब लग नेम जी न वाधु नित आहार करन का त्यागो जी।
नित आहार करन का ....
हस्त कल्प पुर आवियो तिहा पारने का दिन आवे जी।
नगर फिरन्ते गोचरी सुनया नेम जी पहुचे निर्वाणो जी।
सुनया नेम ......
आहार करना युक्त नही अपना आसन करो जी तैयारो जी।
आहार कुम्बी सारा पलटया ऋपि चढे विमल गिरनारो जी।
ऋपि चढे . ..
सिला ऊपर मथरे किया पादोपगमन सथारा जी।
दो मासे अनशन किया ऋपि पढे वृक्ष की डालो जी।
ऋपि पढे .
दान शील तप भावना ऋपि पाले पांच आचारो जी।
दोप व्यालीस टाल के ऋपि शिवपुर मार्ग जावे जी।
शिवपुर मार्ग

विजय कुमार

घन विजय कुमर और विजया नाम कुमारी २।
भर योवन मे पाल्यो शील के ममता मारी ॥
१- ये मच्छ देश कौसम्बी नामे नगरी २।

तिहाँ बाग बगीचे खूब के शोभा सगरी ।
एक धन्ना नामे सेठ वसे सुखकारी ।
सुत विजय कंवर जी धर्म कर्म हितकारी ।
उसे विजया कुमरी पुन्य वन्त मिली छः नारी २ ।
भर योबन में ....

२- ओ कर सोलह शृंगार पिया पे जाती ।
और गहने पहरे खूब घूंधर धुमधाती ।
बालम से सुन्दर प्रेम धरी वतलाती ।
कायरो की छाती थर थर थर्राती ।
वह हित कर बोले विजय कुमर सुन नारी ।
भर यौवन में । ....

३- वे शील व्रत की वात करे तन मन से ।
मैंने कृष्ण पक्ष का नेम लिया मुनिवर से ।
ये सुन कर बोली सुन्दर नयना झरती ।
मैंने शुकल पक्ष का त्याग लिया नही डरती ।
इक शँय्या पाले शील दोनों ब्रह्मचारी २ ।
भर योवन ... ...

४- श्री बिमल केवली व्याख्यान जो उन का कीधा ।
जिन दास श्रावक सुन कर आया सीधा ।
धन भाग मुनि दर्शन से हृदय भीजा ।
जिन आप लिया अवतार के ये यश लीधा ।
यह मात पिता सुनी बात हुई लाचारी २ ।
भर योवन में ... .

५- ये सकल भेद जव जान्या कुमर कुमरी का ।
ए पश्चिम पने में शील पाल रहा नीका ।
समझाया समझे नही के कहना उन का ।

शुद्ध लीना सयम पाल जगत सब जीता ।
शुद्ध पाल के सयम भार आत्मा तारी २ ।
भर यौवन मे ।.. ..

❀ मेघ कुमार ❀

त्यागी वैरागी मेहा जिन समझाया ।
जिन समझाया मेहा मुड घर नही आया ।
१- श्रेणिक राजा सुत धारणी जाया ।
मेघ कुमार तस नाम धराया त्यागी
२- तेरे तो कारण मेहा श्री जिन आया ।
वाणी सुनी ने मेहा सयम पाया त्यागी
३- शैय्या सथारा मेहा आसन लाया ।
आवत जावत मेहा साधु सताया त्यागी
४- नींद विहूनी मेहा आर्त लाया ।
मन माही चिन्ते मेहा मैं मुनि राया त्यागी
५- आदर देवे मुझ ने साध सुहाया ।
आज की रैन मेहा नजर न आया . त्यागी
६- प्रगट प्रभाते पूछू श्री जिन राया ।
जाए मिलु गा अपनी धारणी माया . त्यागी
७- वन्दना तो कीधी विधि से श्री जिन राया ।
पूछन की बिरिया मेहा नैन लज्जाया त्यागी
८- वीर कहे सुन धारणी जाया ।
आज दी रैन मेहा तू दुख पाया - — त्यागी
९- गज भव होता रे मेहा धूजती काया ।
जीव दया से मेहा तू चित लाया . त्यागी
१०- तिर्यच भव से मेहा मनुष्य भव पाया ।
पिछला भव मेहा वीर बताया . त्यागी

११- त्रिविधे २ करी तन वोसराया ।
दो नैना विना कारमी काया .. त्यागा
१२ मास खमन मेहा भावना भावे ।
विजय विमान मेहा जा सुख पाया ... त्यागी
१३- एक तो भव से मैहा सिद्धों मे जासी ।
देव सूरत मुनि ने गुण गाया ...... त्यागी

धन्ना शालि भद्र

मेरे शाली भद्र से वीर, मेरे घर नारी ।
धन धन्ना जी ने, कैसी ममता मारी ॥

१ थारे कमी नही काई वात, क्यों तू घबरावे ।
तब हाथ जोड़ सुभद्रा, यू फरमावे ।
मेरे एक वीर अति वल्लभ, पीयर कहावे ।
श्रेणिक राजा खुद देखन को घर जावे ।
उस दिन से नार नित्य, एक एक छिटकावे ।
कर वत्तीस त्यागन, संयम में चित लावे ।
इस कारण कन्ता, सोच लगी अति भारी धन...... ।

२ वह कायर वीर तेरा, एक एक नित्य छोडें ।
जो लेना उसने योग, त्रिया नेह क्यों जोडे ।
यह खवर नहीं जग वीच, काल आ दौडे ।
सुन कर सुभद्रा दोनों कर को जोडे ।
ये बातां करनी सहज करी कुण होडे ।
धन शालिभद्र से शूर जगत में थोड़े ।
तुम कायर कंत क्यों बैठे घर मंझारी—धन .. .. ।

३ कहे धन्ना जी समझाय, सभी सुनो प्यारी ।
मैने तो आज से त्यागी आठों नारी ।

अब लेना संयम धार, आत्मा तारी ।
तुम खड़ी रहो सब दूर, लगो मुझे खारी ।
तुम भगनि मेरी, कह चले तीन बारी ।
श्री मति आदि ने पायो झाल फिर आडी ।
भोली ननदी का वीर, ऐसी क्यो विचारी—धन ।

४ वे बोले गद् गद् बैन बैठी है अगाडी ।
भर भर नैना से नीर भीज गई साडी ।
आप लीनी बात को तान भूल से काडी ।
उठ खड़े हुए सरदार परले को झाटी ।
इतने वर्षो की प्रीत, तनक नही पाली ।
उत्तम पुरुषो की रीत यही निराली ।
अब चलो महल मे मानो बात हमारी—धन ।

५ कहे धन्ना जी समझाय, बात सुन लीजो ।
मतलब का सब जग होय नाम मत लीजो ।
मेरे चित मे रमया योग भोग मत दीजो ।
यह अल्प सुखा पर काहे को हम रीझो ।
अब चलो हमारे सग ढील मत कीजो ।
मुक्ति सग मे कर साथ, ज्ञान मे भीजो ।
सुन आठो प्रमदा कीनी सग तैयारी—धन ।

६ श्री शालि भद्र को, धन्ना जी बतलाया ।
उतरो अब नीचे, कायर क्यो ललचाया ।
तब दोनो मिल के सयम को अपनाया ।
गुरु हीरा लाल प्रसाद, यह मैंने गाया ।
उन्नीसो सत्तवन, ज्येष्ठ मास जब आया ।
धन्ना का वर्णन मुनियो ने फरमाया ।
वे महा मुनि महाराज गुणो के धारी—धन ।

तारण समर्थ कोई न मिल्या माता पुत्र पिता परिवार।
माता ...

१८- ए आठो ही कामणी रे जम्बु सुख विलसो संसार।
दिन पीछे पडया पाछे जम्बु लेना संयम भार।

१९- ए आठो ही कामणी माता समझाई एको ही रात।
जिन जीका धर्म पिछानिया री माता संयम लेसी म्हारेसाथ
माता

२०- मोहे मत करो मोरी माता जी माता मोहे किया बंधे कर्म
हालर हलर काहे करो माता पालो जिन जी का धर्म।
माता

२१- माता पिता को तारिया जम्बु तारी आठो ही नार।
सास समुर को तारिया रे जम्बु पाँच सौ प्रभव परिवार
माता .. ..

२२- पांच सो सताईस जने जी लीधो संयम भार।
ग्यारह जीव मुक्त गये जी बाकी स्वर्ग मंझार।
जम्बु भला चेतिया जी भलो लियो संयम भार।

❀ धन्ना जी ❀

धन्ना मैं तो वारी रे, रे बेटा मैं तो वारी रे।
धन्ना अजे नहीं योग काल ॥

१ श्री जिन वचन विचार के, धन्ना कीता एक प्रश्न।
वादल वर्पै प्रेम का धन्ना भीज गया सारा अंग—धन्ना

२ यह वतीस कामनी, धन्ना सुन्दर रुप रसाल।
तेरा विरह मैं न सह सकां धन्ना मत छोड़ो निराधार ॥

३ तुम विन यह घर नही शोभता, धन्ना तू है संसारी रत्न।
दीप बिना मन्दिर सूना, धन्ना तुम विन यह घर सूना—धन्ना

४ चाद विना कैसी चादनी, धन्ना नग विन मुन्द्री जेम।
शीशे विना कैसी आरसी, धन्ना पिया विन गोरी केम—धन्ना
५ पख विना कैसा पखीडा, धन्ना निर्धन मानव है केम।
गुरु विन कैसा चेलडा, धन्ना पिया विन गोरी केम—धन्ना
६ पान फूल विन रुखडा, धन्ना फल विन वेल है केम।
लून विना कैसा भोजन, धन्ना पिया विन गोरडी केम—धन्ना
७ प्रेम से पाली प्रीतडी, धन्ना इन से प्रीत न तोड।
विना कत्ता मूत ज्यो, धन्ना ज्यो टूटे तिम जोड—धन्ना
८ नीर विना कैसी नदी, धन्ना कान विना कैसा राग।
नैन विना कैसा निरखना, धन्ना नर विन नारी निर्भाग—धन्ना
९ नो मासे उदर राख्या, धन्ना, गर्भ तना दुख जोय।
मैं जाना जा केवली, धन्ना और न जाने कोय—धन्ना
१० और वचन सुनो तात जी, धन्ना तू ता भयो कठोर।
वहुत दुखा से पाल्या, धन्ना यू कैसे छिटकाय—धन्ना
११ यह वचन सुनी मात ना, धन्ना बोले वारम्वार।
वीर वाणी मैं साभलो माता, लेसा मैं सयम भार—धन्ना
माता मेरी भोलिये
१२ और सुनो मेरी माता जी, मुझे न भावे घर वार।
यह सुख मैंनू न रुचे, माता सव दुखा दी खान—धन्ना
१३ जन्म मरन दुख मैं सहा, माता भमया चारो ओर।
थोडे सुखा दे कारणे, माता रत्न हीरा दिया खोय—धन्ना
१४ उगे गा सो फिर ढले, माता फूले सो कुमलाय।
आयु क्षणे क्षणे जा रही, माता जन्मया सो मर जाये—धन्ना
१५ जैसो चचल विजली, माता ऐसा ही ससार।
दूव अनी जल विन्दुआ, माता भारत न लागे वार—धन्ना
१६ देश प्रदेश मे माता जी मैं किस से करागा स्नेह।
आवे काल ले जासी माता ज्यू आधी यह देह—धन्ना

१७ अनुमति दीधी मात ने, धन्ना लीनो संयम भार।
वेले २ पारना, ऋषि लैन्दे सूझता आहार—धन्ना
१८ निर्मल चारित्र पाल के ऋषि पहुंचे स्वर्ग विमान।
महा विदेह में सीझसी मुनि पावे केवल ज्ञान—धन्ना

दशारण नरेश

१ मै तो वे मच्छराला हो राजा, मान न मूक्यों जी कोई।
मै तो वे क्षत्रीय पद पाया, दर्शन करने को आया॥
मैं तो वे मच्छराला हो राजा
२ मेरा है वहु देश भण्डारी, मुझ सम और न कोई।
मेरे वे दल वल अति दोय, इन्द्र सम ऋद्धि जोई—मैं
३ आया वे सुर पति अलवेला, श्याम घटा जिन छाई।
बाहन वे एरापति वनया जिन ऋद्धि बनाई—मैं
४ गाल्या वे मेरा मान हंकारा, मैं क्षत्री नाम धराऊं।
क्षत्री हो कर खड़ा हुं अकेला अव कैसे पीठ दिखाऊ—मैं
५ इन्द्र से मै जीत न सकां जे करुं क्रोड़ उपाय।
इच्छा धारी देव कहाये, होवे किस विध बड़ाई—मैं
६ इन्द्र है अव्रती अपच्चक्खानी, व्रत उदय न आवे।
मैने तो मानुष देह पाई, सयम का फल पावे—मैं
७ वेगा ही प्रभु मुझ को तारो, देर न लावो कोई।
जो क्षण जावे मुड़ नही आवे यह जिन वन्ता की वाणी—मैं
८ वेगा ही तिहां सयम लीधो दशारण भद्र नरिन्दो।
इन्द्र वे तिहा चरणी नमियों धन धन राय मुनिन्दो—मै
९ और है मुझ में शक्ति घणेरी जो मैंने आज दिखाई।
हारया मै इन ही विरिया तू सूरा मै कायर भाई—मैं
१० सयम पाले महा मुनिराई जिन केवल पद पाया।
पहुंचे है ऋषि मुक्ति मझारी चरनन शीश नवाया—मैं

काली राणी

काली राणी सफल किया अवतार वह तो पाई भवदधिपार
१ कोणिक नृप की छोटी माता श्रेणिक नृप की नार।
वीर जिनन्द की वाणी सुन, लीधा सयम भार—काली
२ चन्दन बाला जैसी मिली है गुरानी, नित्य नमु चरणार
विनय सहित पढी अ ग ग्यारह, निर्मल बुद्धि अपार—काली
३ सुमनि गुप्त युत सयम पाला, चढी प्रणाम की धार।
आज्ञा ले कर निज गुरनी की, तपस्या करी अगीकार—काली
४ निज शक्ति लख सति आराध्या, रत्ना वाली तप हार।
चार लडी सम्पूर्ण कीनी, आठवे अग अधिकार—काली
५ पाच वर्ष त्रय मास दो दिन कम, इतना काल विचार।
धन्य महा सति तप आराध्या, वदना वारम्वार—काली
६ आठ वर्ष कुल सयम पाल्या, कर्म किया सब छार।
जन्म जरा और मरण मिटाया, पहुची मोक्ष मझार—काली
७ मुनि नन्द लाल तना शिष्य गावे विलाडा शहर मझार।
ऐसी सति के सिमरण सेती, होवे मगला चार—काली

कपिल मुनि

वान्दु नित कम्पिल ऋषिराया, रे वान्दु .. ।
धन्य पुरुष वह जगत बीच, निज आतम समझाया।
१- जी ब्राह्मण केरी जात उज्जैयनी, नगरी में रहता।
तिहा भूप दो मासे सोना, नित्य विप्र दान देता।
स० विप्र की नारी, कहे पिया से वारम्वारी।
तुम जावो होवो झट त्यारी-तुम जावो हो झट त्यारी।
स्वर्ण दो मासे दे गया जी धन्य .. .

२- जी स्वर्ण काज नारी के कहन से, लेना चित चाहा।
जी दिन उगे यदि जाय स्वर्ण फिर हाथ नही आया।
म० के इक दिन भाई सूता सी नीद के माई।
जब अदड़ी रातड़ी आई २ नीद से चमक उठ धाया—धन्य
३- जी घर से निकल्या वाट मैं जाता दुष्ट घेर लीना।
जी चोर जान कर पकड भूप पे हाजिर जा कीना।
म० लगा तव धुजने २ तू सच्च वता दे मुझ ने।
सव गुनाह माफ है तुझ ने २ विप्र से इम कहे राया—जी धन्य
४- जी विप्र कहे कर जोड़ भूप से अर्जी सुन लीजे।
जी स्वर्ण काज निकला निज घर से चाहे चोर कीजे।
म० नृप खुश हुई २ तू मॉग २ वर सोई।
मै देऊंगा तुझ को वोही २ विप्र तव मन में हुलसाया—जी धन्य
५- कम्पिल ब्राह्मण मन में चिन्तवे तोला इक मॉगु।
अधिका लोभ बढ़ाया उस ने राज मॉग लेसुं।
म० के मन सुलटाया २ जिस कारण घर से आया।
यह हाल जिन्हों से पाया, २ चेतन को ज्ञान देइ समझाया—जी धन्य
६- प्रणामों की लहर चढ़ी तव शुकल ध्यान ध्याया।
तत क्षण राज सभा के माही केवल ज्ञान पाया।
म० महोत्सव सुर कीना म० औगा पात्रा हाजिर कर दीना।
महाराज था यह यश लीना २ पॉच सौ चोरो को समझाया।
७- कर्म खपाये मुक्त विराजे कंपिल ऋषि राया।
तिन कारण मेरा मन निश दिन दर्शन को चाहा।
दर्शन कब पाउ म० पद पांचों के गुण गाउं।
शिवपुर का नित सुख चाहुं २ खूब चन्द यही मन भाय।
जी धन्य पुरुष वो जगत विच निज आतम समझाया।

"धर्म रुचि अणगार"

१- चम्पा नगरी निरुपम सुन्दर, जहाँ धर्म रुचि ऋषि आया।
मास पारणे गुरु आज्ञा लेई ने गोचरिया सिधाया।
मुनिवर धर्म रुचि ऋषि वान्दु .

२- नीची दृष्टि धरन पर सोहे, मुनीश्वर गुण भण्डारे।
भिक्षा अटल करता आया, नाग श्री घर द्वारे।

३- खारो तुम्वो जहर हलाहल मुनिवर ने वहरायो।
सहजे उकरडी आई हम घर कहो वाहर कौन जाये .

४- पूरण जानी पाछे फिरया, गुरु आगे जा धरियो।
कौन दातार मिल्या वत्स तैंने, पूर्ण पात्र भरियो ..

५- ना ना करते मुझे वहरायो भाव अधिका आनी।
चाखी ने गुरु निर्णय कीधो, जहर हलाहल जानी .

६- यह भोजन अति कडवा खारो, जे मुनिवर तू खासी।
निर्वल कोठे जहर हलाहल अकालो मर जासी

७- आज्ञा ले परठण चाल्या, निपध ठौर नही पाया।
विन्दु नीचे एक गिराया, कीडियो ने ढेर लगाया

८- अल्प आहार थी इतनी हिंसा, इस को अनर्थ जानी।
परम अभय रस भाव दया के, कीडिया करुणा आनी-- --

९- देह पडता दया नीपजे, ते मोटा उपकारो।
खीर खांड सम जान मुनि तत्क्षण कर गया आहारो

१०- प्रवल पीड शरीर मे व्यापी, आवन शक्ति नाही।
पादोपगमन किया सथारो, समता दृढ राखी

११- स्वार्थ सिद्ध पहुचा शुभ योगे, महा रमणीक विमाने।
धृग २ इस नाग श्री ने मुनिवर को विष दीधे
हुई फजीत कर्म वहु वाधे, पहूची नर्क मंझारे।
धन्य धन्य इन धर्म रुचि को कर गए खेवा पारे

२- तव मुनिवर वोले नाथ सुनो रे राजा।
महाराज नहीं किसे दुःख मिटाया जी।
इस कारण लीना योग भोग सब ही छिटकाया जी।
तब नर पति वोले तात तुम्हारा मैं हूं।
महाराज मनुष्य भव दुर्लभ पाया जी।
तुम चलो हमारे महल सैर कर सुफल हो काया जी।
तुम पोते ही अनाथ सुनो रे सेना।
महाराज वचन यह कह सुनायो जी।
तुम साधु हो के झूठ वोलना कहा वतलाया जी।
मैं राजा हूं मगध देश का मालिक।
महाराज मेरे वहु घोड़े हाथी जी।
जब पुण्य————......—...

३- यह नाथ अनाथ का भेद नहीं तुम जाना।
महाराज सुनो तुम इक चित लाई जी।
इक नगरी कसुम्वी पिता वहां धन संचय भारी जी।
मुझ प्रथम वय में वेदना अंग में आई।
महाराज उसे मुझे वहुत सताया जी।
अजी कीने बहुत उपाय मिली न योग युगाई जी।
यह पिता हमारा दान देता मुझ कारण।
म० नहीं कोई दुःख मिटाया जी।
सब मात तात और वहन कुटुम्ब ने जोर लगाया जी।
अय सुन राजन मेरी नार प्यार वहु करती।

❀❀❀

म० नही कोई दुख की पाती जी ।अजी-

४- एक वक्त पीड टले मुझ तन की ।
महाराज चित मे ऐसी आई जी ।
लेऊ खन्त दन्त निरारम्भ प्रवर्ज्या वहु सुखदाई जी ।
ऐसी चिन्तता सुख से निद्रा आई ।
महाराज वेदना सब विरलाई जी ।
अब सुखी हुआ सुनाथ आये विचरु वन माही जी ।
यह आतम सुख दुख को मैंने नही जाना ।
महाराज छोड मिथ्या दुखदाई जी ।
अब लीनी समकित धार अन्तर भाव दिया छिटकाइ जी
श्री मानक चन्द महाराज के चरणो माहि ।
महाराज मेरी अब गत विरलाती जी । अजी

बलभद्र मुनि

१- मास खमन के पारणे, तपसी मोटा मुनि राय रे ।
तुगिया पुर मे समोसरया, मुनिवर गोचरी जाय रे ।
मुनि बाल भद्र वसे जी वैराग मे
२- तेज दीपे जी दिदार मे रमणी होई हैरान रे ।
सूरत मोही ने सुन्दरी घर घर फिरती नाल रे
३- तब मुनिवर इम चितवे धृग २ हमारो रूप रे ।
धृग योवन ए कारमा रमणी मोही कूप रे ।
४- आज पाछे बस्ती थका अन्न पानी का त्याग रे ।
वन मे मिले छ मोसला ऐसा काया मे प्रेम रे
५- वन माही वसता थका, मोह, अटवी के जीव रे ।
हिरण सगा आश्रय लिया सेवा करे निश दीस रे

६- एक हिरन अटवी विषे नैनी झरतों नीर रे।
जाती स्मरण उपन्यो पूर्व पुण्य प्रभाव रे।......
७- मास खमन के पारने सैन कर लै जावे रे।
खाती दीखो आवियों रोटी रावल लयाओ रे......
८- मुनिवर देखी ने हरषयों सरया वाँछित काज रे।
वन माही मुनिवर भेंटियो धन हमारे भाग रे ...
९- चढ़दे भाव वैरावियों प्रगटे पुण्य अंकूर रे।
तीनों योग आई मिले, हिरण देखे दूर रे ....
१०- धन खातीं यह मानवी धन खातिन के भाग रे।
सांधा की सेवा करे खर्ची वाँधे लार रे ....
११- मृगला भावे भावना नैनी झरतों नीर रे।
मैं बहराऊ हाथ से जे मैं मानव होऊं रे ...
१२- तिन काले तिन ही समय वायु चली असराल रे।
अध कटो डालो पड़यो तीनों कर गये काल रे।
१३- पांचवे देवलोक उपने दस सागर स्थिति पाई रे।
ऋषि चौथ मल जी वीनवे तीनो ही एक ठाम रे।
मुनि बाल भद्र वसे जी वैराग में...........

मोरा देवी

१

नगर वनिताभली विराजे जगमग २ सोहे जी।
कंचन माहि कोट विराजे वलि सुरनर ने मन मोहो जी।
जिन क्रोड़ पूर्व लग पामी साता मोरा देवी माता जी।

२

नगर वनिता १२ जोजन पूर्व पश्चिम जानो जी।
नो जोजन की बीच में पोली वलि उत्तर दक्षिण जानो जी।
—जिन क्रोड़...

३

मोने का कोट किंगरा रत्ना का दरवाजा जी।
अध विच हीरा पन्ना सोहे वली मोतिया दा लड लम्वा जी।
—जिन क्रोड ..

४

श्री आद नाथ जी आये उपने मोरा देवी कुखो जी।
ज्ञान जग मे होई वधाई वली ऋषभ जिनेश्वर जाया वेटा जी।
—जिन क्रोड..

५

गैण्या ऊपर वैठी सोहे तेवर तकिया गादी जी।
भरत वाहुवल सरीखे पोते वली जव विच दीपे दादी जी।
—जिन क्रोड .

६

अठानवे नो लडिया पोता, निव २ पावो लागे जी।
रुप अनूपम अटल विराजे वलो देव कन्ता मुख अगे जी।
—जिन क्रोड

७

पर पोता वली सर पोता वली नर पोता घनेरी जी।
सारिया वहुआ पाव लगी माजी सीमा दे दे थकी जी।
—जिन क्रोड ..

८

ब्रह्मी मुन्दरी दोनो पोतिया रहिया अखड कवारी जी।
मोटी सतिया मुक्त विराजे वली जग विच महिमा भारी जी।

९

कदे न अग मे होई असाता टसका एक ना कीता जी।
जब लग जीवे मोरा देवी माता वलि औषध कभी न लीता जी।
—जिन क्रोड...

१०

पैंसठ हजार पीढ़ी नज़र में देखी नाम जिन्हां दा धरिया जी।
शोक संताप कदे न दीठा वली पूरा पुण्य जिन्हां ने करया जी।
—जिन कोड़ ..

११

रत्न सिंहासन बैठी सोहे ऊपर चंवर डुलन्तो जी।
पूर्व का पुण्य ऐसा कीना वली मांजी साहिब कहन्तो जी।
—जिन कोंड़ ..

१२

पांच सौ धनुष की ऊंची काया मोरा देवी माता जी।
जीवी जहां लग योवन रहियो वली देखी पूर्वली माया जी।
—जिन कोड़...

१३

हाथी घोड़ा मानिक मोती घर विच माल घनेरा जी।
जब लग जीवे मोरा देवी माता वली दिता दान बहुतेरा जी।
—जिन कोड़...

१४

श्री आदनाथ जी यहां पधारे दीनी भरत वधाई जी।
तीन वधाई इकट्ठी होई वली पुत्र नंदन को आई जी।

१५

इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता नर नारी बृन्दो जी।
समोसरण में साहिब सोहे वली ज्यूं तारयां विच चन्दो जी।

१६

जग तारण ने ज्योति प्रकाशन ध्याया निर्मल ध्यानो जी।
ऐसी साहिबी पुत्र भोगे वली कौन चितारे माई जी।

१७

देवी रचना समोसरन की ध्याया निर्मल ध्यानो जी।
मोहनी कम जीतया मोग देवी माता वली पाया केवल ज्ञानो जी।
—जिन श्रोड..

१८

घोला वस्त्र कदे न श्रोढया शोग कदे न कीना जी।
केसरी साडी नोरंगिया चूडा वली इस में केवल लीता जी।
—जिन श्रोड

१९

अन एकासना कदे न कीना श्राबिल ते वली नीवी जी।
नुगे समाध मोग देवी माता वली सीधा मुक्ति पहुची जी।
—जिन श्रोड

२०

ए चोविसी सब तो पहिलो शिव नगरी मे पैठी जी।
मुक्ते पहूची मोरा देवी माता वली हाथी होद बैठी जी।
—जिन श्रोड

२१

श्रादनाथ जी को केवल उपन्यों मुक्ते पहूचो माता जी।
हीरा चन्द जी के जो गुण गावे वलि ते नर पावे साता जी।
—जिन श्रोड

२२

सम्वत् अठारह वर्ष तीसके मेरठ शहर चोमासा जी।
सनक बदी दसवी दिन जाने वली पाया तीन विलासो जी।
—जिन श्रोड

स्थूल भद्र

१ एक समय चारों शिष्य चले है करन तप।
देही पर कोप कर स्वामी स्थूल भद्र जी।
एक रहों सिंह गुफा रचक न डोलयो मन।
एक रहो कूप कंठ एक अहि विल विम्ब जी।
स्वामी रहो गनका के सरस न लियो आहार।
शील को न लाया दाग जीते आठों मद जी।
कहते है भगवति दास मानिये विशेष गुरु।
कठिन कमान कसी स्वामी स्थूल भद्र जी।

२ साधु मन कोध उठयो समझत न देखयो मुनि।
कठिन तपौ है तप देही को जलाई जी।
चार मास खड़ा रहा एक ही चरण भार।
लिया नही आहार महावीर की दुहाई जी।
बाकी की न करनी सार कौन ठौर रहा मुनि।
एक समय चारों शिष्य चारौ गुरु भाई जी।
जात बड़ो पात बड़ो क्रिया करतूत बड़ो।
कहते है भगवति दास कौन सी बड़ाई जी।

३ हित कर प्रीत कर अमृत वचन कर।
गुरु समझावे बच्चा ईर्षा न आनिये।
और तप तपना सुहेला साध साध्वी को।
शील व्रत पालना दुहेली बात जान जो।
पावक प्रसंग धृत डलत रहत नहीं।
जाको राखे साध नेह-सग में व्याख्यानिये।
सो तो राखे स्थूल भद्र कहते हैं भगवति दास।
पारस पाषाण स्वय बने तो पछानिये।

४ एक माधु क्रोध करि स्वामी स्थूल भद्र पर।
गये हैं नगर घर वैश्या के वारणे।
आज्ञा लई विशेष मन्दिर कियो प्रवेश।
पाच महाव्रत जिन जी के लगे है चितारन।
साध जान गणका ने वदना त्रिविध करी।
कहते हैं भगवतिदास लगी है विचारणे।
ए तो नही स्थूल भद्र आया मुनि कोप कर।
करत उपाय जिया लगी है धिक्कारने।

५ धृग २ जन्म कर्म धृग सब मेरा है।
धृग करतूत सब धृग मेरो घर जी।
धन २ साधु तुम साधयो सकल मन।
धर्म के जहाज तुम तारणे सु नार जी।
गग के प्रसग, जल मलिन भी गग होत।
चन्दन के सग, नीम चन्दन होवत जी।
कहते है भगवति दास कीजिए चोमास मुनि।
दीन जान कृपा कीजो माको तो आधार जी।

६ सज के शृगार नार सुन्दर नत्य करं।
नैन के कटाक्ष मार बोले अनूप जी।
दियो है डिगाय मुनि रहो नही एक क्षण।
रहा है लुभाय देख गनका का रूप जी।
आतुर भयो अधीन मीन जैसे तडफत।
छूटी है समाधि अब जागो मन भूप जी।
पाच सुमति तीन गुप्ति पाच महाव्रत मोटे।
कहते हैं भगवति दास घाले सब कूप जी।

७ गनका तो जगे इम आतुर भयो हो किम।
देत है नेपाल भूप रत्न कम्वल जी।
सो तो मोको आन दे पोषिये प्रसन्न देह।
प्रसन्न मुनि भए, काम अध वल जी।
राजन के द्वार मुनि मागने गयो है दान।
साध जान दियो दान लायो नही पल जी।
आनयो है आनन्द लाल काम के जो लागे वाण।
कहते है भगवति दास दियो भेस वल जी।

८ आन दियो गनको को गनका चतुर त्रिया।
हाथ पांव धोए पोंछ दियो कीच डार जी।
हा हा कार साधु करे रत्न अमोल लाल।
कामणी गवार जाकी काही जाने सार जी।
रचक सुखों के काज रत्न सयम तज।
कहते है भगवति दास काही करे क्षार जी।

९ इस का तो मोल वहु रत्न अमोल लाल।
जाओ गुरु पास मेरा यही उपकार जी।
चले है विलख चित जिया में धिक्कार अति।
गुरु के समीप मुख बोंल न सके बोल जी।
गुरु है ज्ञान वान लब्धि के धरण हार।
वह तो जाने बात सब गुण अवगुण की।
गुरु कहे आवो शिष्य लेवो तुम प्रायश्चित।
लेई व्रत पालो शिष्य तुम शुद्ध मन जी।
कहते भगवति दास आदि तिथि चेत मास।
पढ़े गुने जो सदा स्वामी स्थूल भद्र जी।

द्विमुख राय

१ यह कपिलपुर का द्विमुख रायबडभागी म०।
गृह-स्तम्भ देख हुए वैरागी जी।
यह त्याग दिया ससार मोक्ष से मनसा लागी जी।
यह ब्रह्मराय और गुणमाला तस-रानी म०।
रानी यूं कहे राजा से जी।
इक चित्र शाला बनवायो मेरा मन लागे तासे जी।
राजा ने नींव खुदवाई पाचवे दिन
म० मनी मे मुकट ज्यूं पाया जी।
जब चित्र शाला बन गई राजा का दिल हुलसाया जी।
सरदार मुकुट सिंहासन ऊपर बैठे
म० सभा मे जग मग लागी जी—यह त्याग
२ यह मुकुट प्रभावे द्विमुखराय दरशाया
म० द्विमुख तब राये कहलाया जी।
यह देश विदेश के मांहि राये का यश फैलाया जी।
सुन उज्जैनी के चड प्रद्योतन राजा
म० दूत से मुकुट मगवाया जी।
तब द्विमुखराय को पाये दूत को कहे मन चाहा जी।
शिवा देवी पटनार अनल गिरी हाथी
म० अग्नि भीरु रथ भी साथी जी—यह त्याग
३ यह लोहा जघा दूत चार चीज मुझे देवो
म० मकुट तब सामने जावो जी।
सुन के दूत उज्जैनीराय से कहे सब हाल जो होवे जी।
चट आया उज्जैनी पति फौज ले भारी म०
द्विमुख तब करी तैयारी जी।

युद्ध जीता द्विमुख राय मुकुट की है वलिहारी जी।
उज्जैनी पति को बांध के महल मे लाया म०।
वहां रहा मान को त्यागो जी—यह त्याग
४ यह मदन मन्जरी गुण माला की जाई
म० अवन्ति पति देख के मोहे जी।
द्विमुख राय से कहे सेवक पना मैंने माना जी
मदन मन्जरी परनावो दास रहूंगा
म० राये ने दी परनाये जी।
उज्जैनी का राय दहेज मैं दीया हुलजाई जी
राज ने दीनी शिक्षा गया उज्जैनी म०
हुआ रानी का रागी जी—यह
५ एक समय प्रजा ने इन्द्र स्तम्भ शृगारा म०
ध्वजा मनि माला पहनाई जी।
राजा प्रजा ने पूजा स्तम्भ की हुई वड़याई जी।
महोत्सव करी ने किया खड़ा स्तम्भ धरती पर म०
देख के मन में चिन्ते जी।
धृग २ यह संसार स्तम्भ जैसे सब से वीते जी।
यह जन्म मरन मिटाने का मार्ग संयम है म०।
लेके सिद्ध हुए वीतरागी जी।
यह त्याग दिया ससार मोक्ष से मनसा लागी जी।

भगवान महावीर

हा इक जगल के दरम्यान लाकर अन्तर ध्यान खडे थे।
महावीर भगवान हा इक जगल के दरम्यान।

कोई ग्वाला, गऊ रखवाला, पालन वाला, गऊो के।
गऊआ चारण, के वह कारण, आया मावारण, चोना ले।
जहा थे करुणा नियान हा इक

आया ग्वाल, पाया ग्वाल, रखना ख्याल, इधर निगाह।
मै हू जाता, अभी हू आता, कोई गऊ माता, विगर न जाता।
कह के हुआ वह रवान, हा इक

स्वामी आप, रहे चुप चाप, करते, जाप, वीतराग।
गऊआ मारी, वारम्वारी, आप मुहारी गईया भाग।
अचल था उनका ध्यान हा इक

आया जो पाली, गऊआ वाली, जगह वह खाली देखी जव।
कहा दुडाईया, तै सब गाईया, नही हटाईया, विगरी जात।
बोले वह सख्त जवान हा इक

ग्वाल ने फटके, किलिया घटके, कानो मे जडके, दीनी ठोक।
महावीर, अति गम्भीर, वन्दे धीर, खडे तज शोक।
ग्वाल बडा क्रोधवान हा इक

परिग्रह जरिया, कारज सारिया, न आसु भरिया, नाम महावीर
हुए आन, केवल ज्ञान, गये निर्वाण, छोड शरीर।
तिर्थंकर है वर्द्धमान हा इक

मैं बलिहार, वारम्वार, कहे मुनियार, मुन्शी राम।
जो जिन ध्यावे, जन्म न पावे, अमर हो जावे उनका नाम।
सिद्ध शिला विराजमान हा इक जगल के दरम्यान।

गोतम स्वामी

मोरे आनंद मंगल कर दो जल्दी गनधर गोतम स्वामी जी।
१- मैं शरण तुम्हारी आया हूं, आकर के ही सुख पाया हूं।
सम्पद का खजाना भरदो जल्दी गनधर गोतम ...
२- मैं जाप जपूं स्वामी तेरा, मेरा ठाट वाट का लगे डेरा।
मेरे सिर पर पजा धर दो जल्दी गनधर .. ।
३- मैं गोयमा गोयमा जाप जपू तुम विघ्न सभी मेरे दूर करो।
दुर्गति का ताला जड़ दो जल्दी गनधर .. ...
४- तुम महावीर के शिष्य भारी लब्धी पूरन के भंडारी।
मन वान्छित फल तुम कर दो जल्दी गनधर........
५- मुनि यश मल जी ने गाया है चल कर माधो पुर आया है।
अर्जी सुन खुशी तुम कर दो जल्दी गनधर गोतम स्वामी जी।

रुकमणी का बारह मासा

राजा भीष्म के घर रुकमणी, रूप मे धनी, वेद में भनी,
के राज दुलारी, वर दीना नारद मुनि जी ने कृष्ण मुरारी।
१- चेत चिन्ता करे, धीर न धरे, न उन विन सरे. जिया नित
तरसे, कहो किस विध मिलना होगा, श्याम सुन्दर से।
सुन के गुरू जी के वैन, पडे न चैन, हमें दिन रैन, प्रीत है
हर से, देखेंगे ईश्वर कव लेंगे आन उधर से।
रुकमन मैया, माने न कहा, वाप हो रहा, मेरे उपर से
जव लग्न लिखा शिशुपाल को भेजा घर से।
ढाल–मै व्यथा कहूं सुन लीजे, तन सोच सोच में छीजे,
तुम आकर दर्शन दीजे, सुध वेग हमारी लीजे,
मैं कर रही तुम को याद, मेरी मुराद, तुम्हें हितकारी,
वर दीना नारद मुनि जी ने कृष्ण मुरारी।

१- आई मौसम वैसाख, मुझे अभिलाश, तुम्हारी साख,
सभी कोई जाने, मैं रहू रघुवर से आगम नागम,
पहिचाने मेटो मेरी सब पीड पटो, हैं भीड धन न धीर, न दिल
टिकाने मैं सिमरण तेरा करू मेरा दिन जाने।
जिसे कहू मरन की बात, कही न जात नींद न आत, हुई
हैराने, तुम तिस पर हुए बेदर्द दर्द कौन जाने ।

ढाल–मुझे दीन जान तुम आवो, काहे की लाज रखाओ,
मेरे सभी गुनाह बतलाओ, किस औगन से विसराओ,
मेरे सभी गुनाह बख्शाओ, भूलो मत ओट निभावो,
तुम होकर दीन दयाल, मेरे करतार, मेरे भरतार,
तुम्हे बनवारी—वर दीना नारद मुनि

२ दूजा आया महीना जेठ, लगी अलसेठ, हुई न भेट,
कही से प्यारे, जहा हो रहे हाल बेहाल तुम्हारे मारे,
एक बूढा ब्राह्मण जाये लिया बुलवाय, पास बिठलाय,
बहुत समभाय, अब चलो द्वारका जहाँ है बन्सरी वाले,
मैं देउ दर्व अपार, कि मत घबराय, जभी आ जाय,
कि निकट तुम्हारे हमे भरोसा लगा बडा उन का रे,

ढाल–ऐसे नही पोरस मेरे, कारज तो जाऊ तेरे, रास्ते मैं सिह
बघेरे, मुझे मार अकेला गेरे, वहाँ प्राण बचे न मेरे,
तडफे गी ब्राह्मणी तेरे, मैं किस विध जीता रहू, भूठ न
कहू, कि हासी भरू, मैं लाज दुलारी —वर

४ लगा महीना हाड, लगी है भाड, देई क्यो छाड मोहन मन
भावन, मैं दासी तन के लगी तुम्हारे दामन, दगो मेरी तकदीर,
जिना तकसीर, हुई बेपीर, लगे तरसावन, शुभ घडी घडी
तब जानू जब सुनु तुम्हारा आवन ।

ढाल–मैं लिखू प्रेम की पाती, वर हाथे लिखी न जाती,

मेरे मन मे ऐसी आती, मंगवाय जहर ले खाती, यहाँ तुम विन कोई न साथी, मै खड़ी निकट घबराती, अर्ज करूं महाराज, आप वृजराज, तुम्ही को लाज मेरी है सारी—वर

५ सावन सुनो नन्द लाल, संग भूपाल, लेके शिशुपाल, कुन्दन पुर छाये, यमराज से मुझ को दीसे काल चढ आये, सिंह ने घेरी गाय, करो सहाय, नही ढिल जाय, तजूंगी काय, कहो मेरी वार, इतना चिर कहाँ लगाये, जल में गिरन गज गस्से, वेबस हो फ़से, आन कर दस्से, वेग छुड़ाओ, निज भक्त जान कर पहुंचे जल्द वचाओ।

ढाल—ओ वीता है सावन महीना, हरि आये नही परवीना, किसमत है मेरी हीना, दुख कर्मो ने लिख दीना, मैं विचार यही कर लीना, दुष्कर है मेरा जीना, मैं वैठी विपदा भरू, हाय क्या करूं, विरह में जलूं कि इस विध तुमरी, वर दीना ... ..

६- भाद्रों मे भरोसा मुझे, तक्कु मै तुझे, विपदन मुझे, उठे मेरे तन में, फरजिन्द नाद का वसा हमारे मन में, सिर हुवा फिरे शिशुपाल, जाय न नाल, पड़ा है रचाल पुरी कुंदन में, जैसे घेरा है केतु शशि को नभ में, द्रोपदी के उतारे चीर, हुए नंगे शरीर, प्रगटे वल वीर, याद किये मन में, वंसी वर हो कर वैठे मजाजा तन के

ढाल—मिट जाएं दुःख हमारा, ऐसा है नाम तुम्हारा जो कुछ है दिल में सारा, तूं ही है पूछन हारा मेरा भी करो गुजारा, द्रोपदा के रक्षग हारा मुझ पर है मुश्किल घनी, देख इस घड़ी, आन कर बनी, विपद है भारी—वर———

७- अस्तु मन सुया हुवा कुमार मन विचार, हुवा तैयार,
- कि मुरत उठाई, अब चलो द्वारका नाथ क्या दिल मे ठहराई, है साडे सत सो कोस, किया अफसोस, हुआ गमोस, अक्ल घबराई, सो रहे तरवर के तले नींद जब आई। अन्तर जामी भगवान, आप गये जान, लिये पहिचान, हुए जी सहाई सोतो को ले गये आप कान्ह रघुराई

टाल—खुल गई आँख तिहारे, मैं आ गया किस जगह रे वहा शम्र बने है दिवारे, गज बधे है मतवारे, द्विज पूछना फिरे है मारे, कहा बसे द्वारका वाले, तुम हो कर दीना नाथ, पकड कर हाथ, ले चलो साथ, भवन गिरधारी—वर . ---

८- कतक करो अस्नान, बहुत सन्मान, किये पकवान अधिक बनवा के, चिन के धर दिये थाल अगाडी लाके, खुरचन मेवा शहतूत, मलाई, दूध, खुराक पूर, मक्खन मगवा के, ब्राह्मण के आगे धर दिये कद मिलाके, मोदक मेवा घी दाल, कि सवक मुहाल, मधुर पकवाके, नव नव विध के भोजन बहु भात पकवा के, कचरी पापड त्रिखूट, पकोडी मुठ, ले कूट लिये पिसवाके, खुश हुए ब्राह्मण अपने मन मे याके

ढाल—भारी जल की भर लाओ, हरि हाथो को धुलवायो मन अपने मे मुस्काओ, कर जोरि शीश नवाओ तुम लायक नही सह मारे, तैनु बार बार समझावे, ब्राह्मण मन मे हुवा मग्न, लगी जब लगन मिटी सब थकन, मिली दक्षनारी वर. — ---

९- मघर मन लग रहा, ब्राह्मण खा गया, आप से किहां रुकमणी जी ने, शिशु पाल को दैवो ठण्ड़ा पानी पीने वे मुख हो कर, हठ करे, टारा न टरे, निडर न डरे रहम नहीं कीने, वर जोंरो जोरी मांग तुम्हारी छीने मै पकड़ तुम्हारे चरण, पड़ी हूं शरण, कि पालन करन, सभी तज दीने, मैंने व्रत और तप जप तेरे ही कारण कीने, हारे वाचत आप सुभान, कर में लिख परवान,..... ... .

ढाल—जावो सारथी रथ वेग ले आना, न कभी देर लगाना, मैंने कुदन पुर को जाना, कुंदन पुर करो धमाना, रुकमण की जा कर खबर' सदेशा जबर, आ जाये सबर विपद विचारी वर ....

१०- पोह पूछत वलराम, कहा गये श्याम, कौन से गाम, हमारे भाई, वतलाओ द्वारका में नहीं देते दिखाई, इतनी सुन के ग्वाल, वतावे हाल, गये गोपाल, कहे सुनाई, एक बुडा व्रह्मण ले गया गैल लगाई, ...

ढाल—यादव वेश सब आवे. हाथी और घोड़े ले आवे, कई लाख गिने न जावे, हल मूसल ले आवे, उठ कुंदन पुर को ध्यावे रुकमनी को दिखाये, वरात अड़ी, अटारी खडी, कहे सब नर नारी—वर............

११- सखि आय महीना माघ, मन की हुई आस मैं उन की दास, मोहन मन भाये, शिशु पाल योदे मन में सब घबराये, रुकमैया कहे सुन बात

बैठ जा तात, बताओ बात, कहे क्यो आये, ये
यादव बशी यहा किसने बुलाए, ये ढोर चरावन
हार, ढोल गवार, न जाने मार, कहो क्यो आये,
राजे यह अहीर जात क्यो आये

ढाल—अब यत्न कौन सा कीजे, रुकमणी को किस को दीजे,
कहना किस का कीजे, दोनवा मे किस को दीजे,
और अपना किस को कीजे, और पगला किस को कीजे,
रुकमणी की जननी कहे, कि दिल गम गहे, क्यो कर पत
रहे, कथ तुम्हारी। बर

१२ फागन फूली अग, अजब का ढग, सखि लई सग, रुकमणी
आई, देवी की पूजा करने मगल गाती, आई शिशुपाल सुनावे
शो", जमावे जोर, खड़े है सिपाही, चौकस रहना नही आने
पावे कान्ह रघुराई। रुकमणी वर मागे दान, मिले पति
कान्ह, वह भगवान, रह सुनाई, देवी की पूजा करने बाहर
आई।

ढाल—रुक्मणी को रथ मे डाला, ले चले भवन नन्द लाला,
रुक्मणी कहे युद्ध करे मतवाला, हरि ने भी बाण सम्भाला,
रुक्मणी कहे सुन दीन दयाला, मत मारे तुम्हारा यह साला,
भूछा मूडी लिया पकड, लिया जब जकड, हुआ दिल
फिकर, हुआ चुप कारी कर दीना

१२ फागुण फाग खेले मुनि तन से सहे परिसह भारी।
सोमल पै कुछ रोष किया नही अहो कर्म गति न्यारी।
केवल ज्ञान परम पद पाया इन्द्र नमे बारम्वारी।
आतम राम आनन्द चढे तब पहुंचे मुक्ति मंझारी। गुरां—मैं

नेम नाथ जी का बारह मास

१- चढ़्या चेत महीना, नेमी ब्याहवन आये।
जाके संग बराती, यादव खूब सुहाये॥
हस्ती चतुरंगी सैना, गल भूषण पाये।
छाई रैन गगन में, महिमा वर्णी न जाय॥
२- आई रुत वैसाखी, जूना गढ़ मे आये।
स्वर्ण रथ में बिराजे, नेमि खूब सुहाये॥
कन्नी अद्भुत कुंडल, कर में कंगन पाये।
प्रभु की देख छवि को, सुर नर सभी हर्षाये॥
३- जेठ युक्त बनाओ दीजे प्रभु का उत्तारा।
नहीं है खबर किसे की, कीजे क्या करतारा॥
प्रभु के हो रथ आगे, पशुओं ने करी है पुकारा।
स्वामी सब जीवन के, तुम ही हो रक्ष पाला॥
४- आया आषाढ़ महीना, पशुओं का सुन कर बैना।
चित भयों रे उदासी, भर भर आयो नैना॥
रथ से निकले जल्दी, त्यागा तन का गहना।
चंदू लाल पिछाना, झूठा जगत का रहना॥
५- सावन सुनयों राजुल ने, नेमि छोड़ के चलिया।
तड़फे बाग मछलियां, सीना ज्यों तड़फाया॥
नैनो से नीर ज्यूं बरसे, मानो मेघ उछलिया।
संग साठ सहेली, राजुल पैडा मलिया॥

७- असोज आसा छोडो जावो घर को नारी ।
त्यागा जगत है सारा, भक्ति श्री जिन की धारी ॥
है सब स्वार्थ के साथी, क्या सुत बधव नारी ।
भक्ति श्री जिन जी की, भव से तारन हारी ॥

८- कार्तिक कृपा कीजो, मोहे संग ले जाओ ।
मोहे दर्शन दे कर, मन का भ्रम मिटाओ ॥
दुष्कर मोह की नदिया, इस से पार लगावो ।
चन्दु लाल को तारो, दोनो जिन गुण गावो ॥

९- मघर मन मे जानो, ये जग रैन का सुपना ।
है सब स्वार्थ के साथी, न कोई दीसे अपना ॥
चलो संग हमारे, जे भव सागर टप्पना ।
निस दिन ध्यान लगाके, जिन गुण हीये मे जपना ॥

१०- पोह परम त्यागी, गिरनर करो है तैयारी ।
अगे नेम जिनेश्वर, पीछे राजुल नारी ॥
मोडन राजुल ताई, नर व नारी सारी ।
राजुल एक न मानी, भक्ति श्री जिन की धारी ॥

११- चढया माघ महीना, दोनो गिरनार आये ।
कीनी कठिन तपस्या, दृढ मन ध्यान लगाये ॥
राजुल नेम जिनेश्वर, दोनो मुक्त पधारे ।
मिल कर चौसठ इन्द्र, जय २ कार उच्चारे ॥

१२- फागुण फूली सी फगवा, दूजा चेत जो आया ।
इन्द्र वेद ग्रह सारे, सुन्दर साज सजाया ॥
दीजो दान मुक्त का, काटो भव की माया ।
सागू होय अधीना, चर्णो शीश नवाया ॥

१ - सुर नर गुण गावत हारे, प्रभु तुम गुण गाया ।
चन्दु लाल कहन्दा, बारह मास बनाया ॥
रहन्दा, कोटले नगरी, दृढ़ मन ध्यान लगाया ।
मेरी पूरो जी आशा, चरण कमलों मे आया ॥

❀ नेम जी के बारह मास ❀

१. चैत्र चित में विचारा, पिया २ मै पुकारा ।
कित्थे काल गुजारा, नेम जी आये न कोल ।
अब तो आजा नेम जी, मेरी जिन्दड़ी न रोल ॥

२. वैसाख वस नहियों तेरे, खोटे भाग ने मेरे ।
ला लये गिरनार डेरे, पहुचे मुक्ती दे कोल ॥
अब तो

३. जेठ जुदा हुआ जानी, लगी प्रेम दी तानी ।
राजुल पगली दिवानी, वाल कैसा दे खोल ॥
अब तो ...

४. आषाड रंग होया पीला, तन सुक होया तीला ।
अब करो कुछ हीला, दुःखा पा लिया जोर ॥
अब तो ..

५. सावन सज २ रहियां, सैय्या झूलन गईयां ।
मै ता गमा विच पईआ, रहीयां असुआ नू डोल ॥
अब तो ... ..

६. भादो भ्रम मिटावा, मुख ते मुख पति लावा ।
संयम नाल निभावा, जावा मुक्ति दे कोल ॥
अब तो . ——

७ अस्सु आस घनेरी, प्रभु जी लग रही तेरी।
दर्शन देजो इक वेरी, रही वन २ डोल।
अब तो

८ कत्तक करो कुछ कारे, चल्ले नेम प्यारे।
राजुल नेम पुकारे, रो रो करदी है शोर॥
अब तो

९ मघर मन मे विचारे, चल्ले प्राण हमारे।
राजुल नेम पुकारे, नेम जी आये न कोल॥
अब तो

१० पोह आप न आये, लिख पत्र पहुचाये।
अल्ले जन्म दिलाये, टाके जिगर दे खोल॥

११ माघ मालन दा पहरा, रहा फिर आटो पहरा।
कीना साडे नाल वायदा, दित्ता जुल्म गुजार॥
अब तो

१२ फागुण फाग महीना, होली पिया सग खेला।
रंग छतीस घोला, देवा अपर टोल॥
अब तो आजा नेम जी, साडी जिन्दडी न रोल।

मोरा देवी का बारह मास

(१)

मोरां देवी जी, सोच करन है मन मे,
मेरा ऋषभ गया किस वन मे।
प्रथम महीना जी, लगा आषाढ चौमासा,
इन्द्र बरसन की आशा॥
मोरा देवी जी, मन मे भई उदासा, प्रभु ऋषभ गया वनवासा।

दोहा–ऋषभ प्रभु वन को गये, जगत सुधारन काज।
मैं तड़फत घर में रही, आठो पहर बारह मास।
पुत्र तुम सब ही जी मगन हो रहे धन में।
मेरा ऋषभ गया किस वन में।

(२)

सावन महीना जी, रिम झिम मेहा बरसे।
मेरा पुत्र विना जिया तरसे।
भरतादिक जी, सौ पुत्र के डर से,
मेरा नन्द निकल गया घर मे।
दोहा–नगरी अयोध्या यू जुरे, कहां गये महाराज।
देत उलाम्भा भरत को, मेरा पुत्र मिलावो आज।
अजी मेरे सुत विन जी, मेरे प्राण निकल सी छिन मे।
मेरा ....

(३)

भाद्रो महीना जी, तज धन दौलत माया, वह गये अकेली काया।
भरतादिक जी, तो मन में हर्षाया, यह राज बिना कमाया पाया।
दोहा–नित नये नाटक होत है, कर रहे भोग विलास।
यह माया सब ऋषभ की, वह छोड़ गये बनवास।
अजी जग तारण जी, दु:खी होनगे वन में। मेरा. ....

(४)

अस्सु महीना जी, सूरत की छवी लागी, पुत्र हो गये वैरागी।
धन के लोभी जी, पुत्र उससे भए वैरागी, कभी खबर नले बड़भागी।
दोहा–भरत कहे सुन मात जी, मत कर व्यर्थ विलाप।
तीन लोक तारन तरन, आयेगे प्रभु आप।
इन्द्र पद सेवे जी, नही रहो विघ्न में। मेरा.....

(५)

रतक महीना जी, कब वह ऋपभ घर आवे।
मोहे मूरत आन दिखावे
न ही कागज जी, मुझ को पुत्र पठावे।
मेरा जिया बहुत दुख पावे।
दोहा—झुरती निस दिन पुत्र को, रो रो आँख उगाड।
जा मिलती मैं ऋपभ से, जो देत विधाता पाख।
मोर पपैया जी, मग्न जु रहते वन मे। मेरा

(६)

मघर महीना जी, भरत बहुवलि भाई, आपस मे करे लडाई।
भरत यू कहता जी, मानो मेरी दुहाई, सब सैना चढ कर आई।
दोहा—बारह वर्ष लडते हुए, इन्द्र रहे समभाग।
चक्रवत चिंता करे। भय चन्द्र यश राए।
जीत कारन जी, खडे रहे वहु वल से। मेरा

(७)

पोह महीना जी, पडे ठंड का पाला, ऋतु आई कठिन सयाला।
कहा वह होगा जी, ऋपभ जगत प्रति पाला, मैं रटू ऋपभ की माला।
दोहा—क्या कोई पर्वत की ओट मे, होगा मेरा नंद।
ठंड ताप की विपत सहेगा, सहे बहुत दुख वृन्द।
भरत मेरे सुन का जी, नही फिकर तेरे मन मे। मेरा

(८)

माघ महीना जी, किसे रहु दुख मेरा, सब पुत्र विना अंधेरा।
पुत्र घर आवो जी, मैं देखु मुख तेरा, कोई देवे ऋपभ का वेरा।
दोहा—इन्द्रादिक जी को नमे, रहे सदा कर जोड।
राना रमन की सम्पदा, वह गये पलक मे छोड।
ऐसा निर्मोही जी। पटक गया विहर वन मे। मेरा

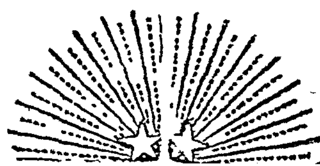
१३ रात समय बोल्या गीदड़, राजे पकड़ मगायो।
अल्ला चाप ले आवी ने कर्म बहुत यूं बांध्यो। धन २
१४ पूर्व भव बदला लिया, ज्ञानी भाप सुनाए।
किये कर्म छूटे नहीं, सोनी संशय मिटाये। धन २
१५ सोनी संयम पाल के, गयो देव लोके।
महा विदेह में सीझसी, तिहां जावे जी मोक्षे। धन २
१६ दान शील तप भावना, जग में तत्व सारो।
कर्म खपाये मुक्ते गये, वरत्या जय २ जी कारो। धन २

निर्मोही राजा

१ वन्दु नाभि राय जी के नन्द आदि के कर्ता।
श्री चरम जिनेश्वर वर्द्धमान दुःख हर्ता।
चोविस तीर्थंकर दुष्कर करनी करता।
हुआ अष्ट कर्म दल शिव रमणी को वरता।
सुर नर मुनि जन सिमरण उन का करता।
जो निश दिन सिमरे नीच गति नहीं पड़ता।
सत्गुरु बतलाई मीठी जिन की बाणी २।
जिन जीत्या मोहनी कर्म सो उत्तम प्राणी।
२ इक दिन सुर राज ने उपयोग ज्ञान विच लाया।
निर्मोही राजा देख चित हुलसाला।
तब बोल्या सुरपति दृढ़ धर्मी महाराजा।
कटुम्बे सेती जिन मोहनी कर्म हटाया।
कोई सुर नर इन की शक्ति नही डिगाया।
मिथ्यात्वी सुर इक लैन पारखा आया।
योगी का रूप बना वीण वजानी—जिन...
३ जब कुमर गये वन सैर महल को आया।

दरवाजे ऊपर दासी को यह वतलाया।
कहे सुन चेरी तेरा कुमर वाघ ने खाया।
मैं खवर करन को दौडा ही चल आया।
दासी कहे योगी क्यो इतना घवराया।
तैंने कपड रगे नही मर्म योग का पाया।
अरे कौन दासी कौन शाम यह कूड कहानी। जिन
४ ए दासी मूल विकाय भला क्यो रोवे।
तू चल माता के पास जिसे दुख होवे।
कहे सुन माता मेरी बात पडी क्यो सोवे।
तेरे सुत को पकडे शेर पडा वहा खोवे।
माता कहे योगी चिन्ता तेरे क्यो होवे।
यह जन्म मरन ससार किसे कौन रोवे।
यह झूठा है ससार जगत सब फानी। जिन
५ यह माता वडी कठोर नही गम खाया।
तू चल त्रिया के पास दिखा कर माया।
कोई मुर्दा कुमर वनाय सामने लाया।
कहे सुन वेटी तेरा कत वाघ ने खाया।
जव राणी रही खामोश योगी घवराया।
इस कत विरह मे जरा फिक्र नही लाया।
फिर रोवे गी दिन रात विपद जव जानी। जिन
६ कहे सुन योगी मति हीन ज्ञान नही पाया।
तेरे हृदय मे मिथ्यात्व अन्धेरा छाया।
यहाँ कोई किसी का नहीं जगत सव माया।
सव मेरी मेरी करें भ्रम ने खाया।
ज्यो भरा नाव का पूर किनारे आया।
तव उतर चले जिस पार जिधर जी चाहा।
तैंने उमर गवा लई योगी युक्त नही जानी। जिन

७ शर्मिन्दा हो योगी राज सभा में आया।
कहे पुत्र हीन तुम हुए सुनो महाराजा।
तेरा सूना हो गया राज अन्धेरा छाया।
नही कुमर दूसरा बड़ा जुल्म यह आया।
राजा कहे योगी क्यों इतना घबराया।
जो होनी थी सो होई शास्त्र में गाया।
जो जन्मा है सो मरे समझ अज्ञानी। जिन
८ तब असली रूप बनाय सामने आया।
इक दिन सुर राज ने यश तेरा सी गाया।
मैं नहीं श्रद्धया लैन पारखा आया।
इन्द्र जो भाख्या उस से अधिका पाया।
कर नमस्कार सुर देव लोक को धाया।
उन्नी सौ अठती फागुन शुदि में गाया।
कहे खूब चन्द कर जोड़ मेरे गुरु ज्ञानी। जिन
९ मै एक रात चिन्ता में अति घबराया।
हो मोह के वस नैना से जल वर्षाया।
मुझ मानसी दु:ख ने आन घना सताया।
तब निर्मोही राजे का ध्यान मेरे चित आया।
मेरी जल्दी वल्दी ठंडी हो गई काया।
दु:ख दूर हुआ सन्तोष मेरे मन आया।
गुरु राम बख्श प्रसाद कही यह वाणी।
जिन जीत्या मोहनी कर्म सो उत्तम प्राणी।



सीता

सीता– सुन अर्ज मेरी तु स्वामी, अकेली छोडमैंनू न जावी।
मैंनु मस दे वस न पावी जी, मैं तो नाल तेरे हुन व्याही।
मापया तेरेलड लाई, अब वनो न तुम दुखदाई।
जी मैं चलु तुम्हारे साथ, तुम पकडो मेरा हाथ।

राम– सुन सिया नी मेरी रानी, तैनु कहु हकीकत सारी।
तूतां छोटी जैसी नारी जी, तैथों ए दु ख सहा न जावे।
जब रात जगल विच आवे, कई राक्षस आन डरावे।
तुतां छोड दे मेरा ख्याल, हुन होश सुरत सम्भाल।

सीता– भावे होवे जी दु ख बहुतेरा, करुं जगल दे विच डेरा।
मैं ता लड फडया हुन तेरा जी, जब ईश्वर नू यह भावे।
एहदी गत वी न मेटी जावे, जी चलु तुम्हारे साथ।
तुम पकडो मेरा हाथ

राम– सुन सिया नी मेरी रानी तू ता वडी है दोईं जहानी।
तेरी एह गल मन मे भावे जी, पति वाजो न नार सुहावे।
विन शास्त्र भी फरमावे, जी तू छोट दे मेरा ख्याल।
हुन होश सुरत सम्भाल

दूसरी ढाल- पईयां पैर विच आज नी माई तोरे।
जीदी रव्हा गी मैं फेर मिलां गी।
अपने पुत्र को राज दिया री माता।
हम को दिया वनवास जी। ज्यू दी
बोल्या चाल्या माफ करी नी माई।
हम चले परदेश अच्छा माई। ज्यू

तीसरा–गफलत की तन मन वित्तनीक दूर बन।
मम मेरी दुश्मन दूर २ मैं थकी हा।

स्वामी मेरे सदके तेरे कर लो डेरा।
हुआ अन्धेरा करले नेड़े मेरी जान... ....
चौथी– जी मैनुं लक्ष्मण ने किया वन्द कार से वाहर न जावी।
योगी भिक्षा लै लै तू मन का भरम मिटा ले।
भिक्षा लेवो होवो तुम वाहर जंगल गये आवेगे स्वामी।
योगी इतने फरेब क्यों करता जिया धडक २ मेरा करदा
भिक्षा लेवो होवो तुम वाहर जंगल गये ओनगे स्वामी।
हीरे लाल थाल मैं भरती तेरे पास अर्ज मैं करती।
भिक्षा लेवो होवो तुम वाहर ऐवे जी मेरा सिर न खाओ
पांचवीं–राम चन्द्र लश्मण आए हैं वाहर से आये शिकार से।
महली अन्धेरा क्यों हुआ, क्या सिया तू लुकी छुपी है।
क्या तैनु रावन फड के ले गया, राम चन्द्र रोवे।
लक्षमण वरजे वडे भाई जी तुसी न रोवो।
जाँदी ताँ सीता जान देवो लै गडवा मुत्र धो लवो।

एवन्ता कुमार

एवन्ता मुनिवर नाव तराई बहता नीर में। एवन्ता
१ पोलास पुरी नगरी का राजा, विजय सैन भूपाल।
श्री देवी अङ्ग उपन्या, कोई एवन्ता कुमार। एवन्ता
२ वेले वेले करे पारना, गनधर पदवी पाया।
भगवन्ता की आज्ञा लेकर, गौतम गोत्तरी आया। एवन्ता
३ खेल रहा था खेल कुमर जी, देख्या गौतम आता।
घर घर माहीं फिरे घूमता, पूछे उन की वाता। एवन्ता
४ अशनादिक लेवन के कारण, घूमता फ़िरता राहां।
अंगुली पकड़ कुवर एवन्ता लाया, गोतम लारा। एवन्ता

५ मात बोली अहो पुन्य वन्ता, भली जहाज घर आनी।
हर्ष धरी ने आहार वहराया, श्री देवी महारानी। एवन्ता
६ कुवर कहे मुझ पात्र देवो, भार घणा तुम पासे।
पात्र तो मैं उस को देवाँ दीक्षा ले मुझ पासे। एवन्ता
७ लारे लारे चालया बालक, भैय्या मोरा भाग।
वचन सुनया जब भगवन्ता, छायो मन वराग। एवन्ता
८ घर आ कर माता से बोले, अनुमति की अरदास।
वचन पुत्र का साँभली सरे, मन मे आई आस। एवन्ता
९ तू क्या जाने साधु पना को बाल अवस्था थारी।
उत्तर ऐसा दिया कुवर जी, माता कहे बलिहारी। एवन्ता
१० नही जानु सो जानु माता, माता अचरज पावे।
यह बेटा तेरी कैसी बाता मेरी समझ मे न आवे। एवन्ता
११ जो जन्मया वह निश्चय मरेगा यह माता मैं जानु।
पर कवे और किम दिन मरसी, यह वाता नही जानु एवन्ता
१२ जैसे कर्म करे यह जीवडा, वैसी ही मति होवे।
यह बाताँ मैं वीर से सुनके, सयम को चित चहावे। एवन्ता
१३ एक दिन का राज भोगवो, कहा हमारा मानो।
तब कुवर सिंहासन बैठयो, प्रथम हुकम सुनाओ। एवन्ता
१४ तीन लाख सौनैया लावो, श्री भण्डार के माई।
दो लाख का ओगा पात्र, एक लाख देवो नाई। एवन्ता
१५ महोत्सव करी ने दीक्षा लीधी, हुआ बाल अनगार।
भगवन्ता का चरण भेटिया, धन ज्यारो जमार। एवन्ता
१६ वर्षा काल बीतिया पाछे, मुनिवर थडले जावे।
पाल बाँध पानी मे पात्र, नावाँ जान तिरावे। एवन्ता
१७ नाव तिरे मोरी नाव तिरे यू मुख मे शब्द उचारे।
साधा के मन शंका उपजी क्रिया लागे थारे। एवन्ता

१८ भगवन्त वोले सब साधां से , भक्ति करो सदैव ।
हीलना निन्दना मत करो सरे यह चर्म शरीरी जीव एवन्ता

१९ भगवन्ता का वचन सुनी ने सब ही शीश नवाया ।
एवन्ता की हुड़ी निकली, आगम माही गाया । एवन्ता

२० उन्नी सौ चालीस साल भिलाड़ा शहर मंझार ।
रत्न चन्द महाराज प्रसादे गावे हीरा लाल । एवन्ता

(सुभद्रा सती)

१ चम्पा नगरी सति ए सुभद्रा मुनिवर गोचरी जावे जी ।
धिग ३ मैनु ए संसारो , भव भव वीर जिनन्द शरणा ।

२ मुनिवर अखी सति तिन का ज्यूं काढया यह नारी दुराचारो जी

३ सास ससुर ननन्द दो वहना घर वड़ा परिवारो जी ।

४ सुभद्रा सति ने तेला कीना शासन देव ध्यावे जी ।

५ देवते का सिहासन कम्पया यह सति किन सताई जी ।

६ देव लोक से देवता आया खड़ा सति के पासे जी ।

७ कहो सति यह नगरी जलावा कहो तो पानी डुवावा जी ।

८ न देवता जी तुम नगरी जलावो न तूं पानी डुवावो जी ।

९ इक देवता जी मेरा काम जो करियो सतिदा कलंक मिटावोजी

१० चम्पा नगरी के चारों दरवाजे देवता ने वद करायों जी ।

११ राजा ने ढंढोरा फेरया, कोई खोले किवाड़ों जी ।

१२ उधर सति ने तप जो कीना सामायक कर आवे जी ।

ढाल दूसरी

१३ सुभद्रा अन्दरों निकली , लागी सासु के पांव ।
रे जीव जिन धर्म कीजिए ......

१४ राज दरबार न जाईए, श्रक धतूरा ग्वाय।
काहे कारण फल लगा काहे कारण ग्वाय रे। जीव

१५ वडी जेठानी बोलदी वडे वडे बोल।
कोयला उजला न होय भाँवे साबुन धोय। रे

१६ वडे वचन न बोलिये, डरिये करतार।
सच्चे रत्ना की पारखा तू क्या जाने गवार। रे

१७ कूप किनारे जाय के, जप के मन्त्र नवकार।
कच्चे धागे से छलनी, भर लाई तिनवार। रे

१८ दरवाजे सति श्राये के छिडके जल नीर।
तीन दरवाजे खुल गये हो जय जय श्रागीर। रे

१६ चौथे दरवाजे सति श्राई जब, देवते पकडी है बाँह।
तेथी चगी जे होवे, खोले चौथा द्वार। रे

२० हस्ती चढी सति श्रा गई, सब नमे चरणार।
शील परीक्षा हो गई, होया मगलाचार। रे

यह नही देश तुम्हारा

भूले क्यो परदेसिया यह नही देश तुम्हारा।

१- यह दुनिया स्वप्ने की न्याई, कोई दिन रैन बसेरा।
श्राखिर को पछतावोगे भाइयो, अब समझन दा वेला रे.
भाइयो

२- लाखो इस दुनिया मे श्राए, लाखो ने हुकम चलाया।
वारो वारी चले गये मारे, रहन किसे नही पाया र.

३- झूठी दौलत झूठी दुनिया, झूठे बहिन श्रौर भाई।
जेहडे नाम प्रभु का लैन्दे, कर गये सफल कमाई रे

४- न कोई बहन ते न कोई भाई, न घोड़ा न हाथी।
न कोई नौकर न कोई चाकर, न संगी न साथी
५- सोच करो अब अपने मन में, रात गई दिन आया।
सत विद्या दा सूरज चढ़या, घर २ आन जगाया –
६- इन श्वासों का नही है भरोसा, दम आया नही आया।
उस दिन यहां से कूच करोगे, जब हाकम ने हुकम सुनाया रे ..
७- जिस रास्ते असां चलना है सबने सागर ठाठां मारे।
अमलां वाले लंघ लंघ जादे, रह गए ओगुण हारे रे...
८- ओथे जाके क्या करोगे, जित्थे गल कोई नही सुनदा।
तू उदास क्यों होया रे बन्दे, जो करता सो भरता रे भाईयो
भूले क्यों परदेसिया यह नहीं देश तुम्हारा भूले—

इलायची कुमार

१- नाम एला पुत्र जानिए धन दत्त सेठ का पूत जी।
नटवी देखी मोहलिया न राखा घर तना सूत जी।
कर्म न छूटे रे प्राणियों ––––
२- पूर्व नेह के कारणे गया नटवी के लार जी।
निज कुल छोड़ी रे नट भयो, न आनी शर्म लगार जी...कर्म
३- आप कमाया रे कर्मड़ा, दीजे किसने दोष जी।
कर्म विपाक भुगत्या बिना, न होवे जीव ने मोक्ष जी कर्म
४- नट वर आया रे नाच वा, ऊंचा बांस विशेष जी।
तिहां राय देखन आवियां, मिलया लोक अनेक जी – कर्म
५- सेठ कुमार तिहां आवियों, देखा नटवी का रूप जी।
पूर्व नेह तब जागियों, लागा बचन अनूप जी. कर्म

६- नाटक नारी का देख कर, उपज्या हर्ष अपार जी।
दान मान देई करी, पहुचा घर मझार जी कर्म
७- वहा जाई ने बैठियो, मन मे चिन्ता अपार जी।
जोर कोई चाले नही, चित मे चिन्ते कुमार जी कर्म
८- भोजन का वेला हुवा, जननी देखे है वाट जी।
अजहु आयो न लाडलो, लाग्यो मन उचाट जी कर्म
९- माता दासी ने यू कहे, देखो नगर मझार जी।
लावो कुमार बुलाय के, होवे हर्ष अपार जी कर्म
१०- दासी महलां मे जाय के, लगी कुवर के पाव जी।
भोजन का वेला हुआ, चलो महल उत्साह जी।
११- एक दो वार बोलावियो, वोले नही लगार जी।
दासी माता पै आए के रोवे जारो जार जी कर्म
१२- काम धाम छोडी करी, माता आई कुमर पास जी।
क्या मन चिन्ता उपजी, करो कुवर प्रकाश जी कर्म
१३- हाथ जोड कुवर कहे, लाग्या माता के पॉव जी।
अर्ज सुनो मुझ मायडी, जे आवे तुझ दाय जी कर्म
१४- नाटक देखण मैं गया, देखा रूप अपार जी।
ते मुझ ने परनाय दो, मेरे मन राग अपार जी कर्म
१५- माता तेहने समझावती, सुन २ म्हारा अंग जात जी।
नटवी माय रे जावना, लाजे माता और तात जी कर्म
१६- पिता तेहने समझावता, सुन सुन प्यारा पूत जी।
व्याहु रम्भा रे सारखी, उस मे अधिक स्वरूप जी कर्म
१७- स्त्री तेहने समझावती, सुन सुन वालम मीत जी।
थोडे सुख्या के कारणे, काहो कुल नू क्यों नीच जी कर्म
१८- समझायो समझे नही, मिलया कुटुम्ब परिवार जी।
वात न मानी रे वालका, पूर्व कर्म विचार जी कर्म

४५ वहु वीती थोड़ी रही, थोड़ी २ भी जाय।
इस थोड़ी के कारणे, किम तान चुकाय...कर्म
४६ बांस चढया डम डम करे, देखे आवीं ने लोक।
नाटी से नटनी हुई, नट से नटवर थाय...कर्म
४७ थाल भरी शुद्ध मोद के, पदमनी उभी द्वार।
लेवो२ करता लेवे नही, धन निर्लोभी अणगार...कर्म
४८ इम तिहां मुनिवर देखिया, धन धन साधु निराग।
धिक २ विषयी जीव ने, इम पाम्या वैराग...कर्म
४९ संवर भावे रे केवली, थयो मुनि कर्म खपाय।
केवल महिमा सुर करे, लब्धि विजय गुण गाय...कर्म

खंदक अणगार

खंदक मुनि महाराज जी, तन खाल खिचाई ॥
१ राजग्रही इक नगरी कहावे, बल राजा जी राज चलाय।
सुखी बसे नर नार जी तन खाल
२ राज माता ने बालक जाया, खंदक जी शुभ नाम धराया।
सुन्दर रूप अपार जी तन
३ दिन २ चढ़ता रूप था भारी, खंदक कुमर हुए गुण धारी।
बहत्तर कला होशियार जी तन
४ गुरुवर ज्ञानी विचरत आए, विजय सैन महामुनि राए।
ठहरे बाग मंझार जी तन
५ खंदक जी दर्शन को जावें, वाणी सुन मन में हर्षावे।
दीक्षा को हुए तैयार जी तन
६ मात पिता हित कर समझावे, संयम पालन कठिन बतावे।
यह है खंडे की धार जी . तन

७ न जानू कब काल दबावे , मन की मन मे ही रह जावे ।
सारु मैं आत्म काज जी- तन

८ दीक्षा उत्सव रचया भारी, जय २ बोले सब नर नारी ।
सयम लिया सुखकार जी तन

९ राज माता यू हुकम सुनावे , पाच सौ चाकर साथ मे जावें ।
जो करे सार सभाल जी तन

१० मास २ तप करते भारी, पैदल चल कर जनता तारी ।
तारण तरण जहाज जी तन

११ विचरत कुन्ती नगरी आए, बहनोई तिहा राज चलावें ।
उतरे बाग मझार जी तन

१२- पाच सौ चाकर मन मे विचारे, बहन नगर मे मुनि पधारे ।
करते हैं भोजन आहार जी तन

१३- मुनिवर गौचरी शहर पधारे, ताप गर्म लू चल रहा सारे ।
तपसी महामुनि राज जी तन

१४- चौपड खेले राजा रानी, घूमते देखे मुनिवर ज्ञानी ।
रानी रोवे जारो जार जी तन

१५- रानी कहे मेरी मा का जाया, ऐसे मुनियो ने बहकाया ।
होगा दुखी आपार जी तन

१६- क्रोध चढा राजा को भारी, मुनि को ले जावो वन मझारी ।
उतार दो तन खाल जी तन

१७- जालिम मुनिवर के पास आए, हुकम राजा का खोल सुनाए ।
ले गए वन मझार जी तन

१८- निदईयो ने खाल उतारी, जुल्म हुआ वहा अति भारी ।
वहे रक्त की धार जा तन

१९- मुनिवर क्रोध जरा नही लावे, अपने सारे कर्म खपावे ।
शान्ति के भण्डार जी तन

२०- कष्ट सहा पर नही घबराए, कम खपा शिव लोक सिधारे।
कर गये वेड़ा पार जी.. तन

२१- धन्य २ ऐसे मुनिवर प्यारे, क्रोध मान के टालन हारे।
आप तरे जग तार जी . तन

२२- सांझ हुई मुनिवर नहीं आए सारे सेवक देखने आए।
नहीं मिले मुनिराज जी तन

२३- राजा ने देखा नजारा, पूछा कौन है देश तुम्हारा।
फिर रहे गली बाजार जी तन

२४- खदक मुनि विचरत आए. भोजन कारण शहर मे आए।
वो नही मिल रहे आज जी तन

२५- राजा सुनकर के घबराये, निर अपराधी मुनि मरवाए।
धिकार है वारम्वार जी तन

२६- हा हा कर मचा अब सारे, रोवे राजा रानी सारे।
हो रहे सब लचार जी.. तन

२७- राजा रानी संयम धारे, पांच सौ चाकर मन में विचारें।
संयम लेवे धार जी.. तन

२८- मात पिता भी दीक्षा धारे, कर्म खपा शिव लोक पधारे।
करते जै २ कार जी तन

२९- 'अमर लहौरी' मुनि गुण गावे, चरण कमल में शीश झुकावे।
वन्दना वारम्वार जी...तन

"सम्राट चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न"

दोहा—शासन नायक सुरतरु, भय भंजन भगवंत।
त्रिशला नन्द जिनन्द को, नमु सदा हर्षन्त ॥ १ ॥
बली प्रणमु गौतम गुरु, तप संयम दातार।

तास प्रसादे मैं कहू, स्वप्न सोलह अधिकार ॥ २ ॥
पाटली पुर नगरी माहिं चन्द गुप्त राजिन्द ।
वाराव्रत धारी गुणी, प्रजा को सुख कन्द । ३ ॥
चौदा पूर्व धारी मुनि, भद्रवाहु मुनिराज ।
समोसरे उद्यान मे, तारण तरण जहाज ॥ ४ ॥
पक्खी पौषध की माहि, देखे स्वप्ने सोल ।
पूछे नृप ने जोड कर, अर्थ करो मुनि खोल ॥ ५ ॥

२ढाल–कल्प वृक्ष की शाखा टूटी, अर्थ सुनो इस जमाने का ।
अव जो राजा होवेगा, वह सयम को नही लेवेगा ॥
दूजे अस्त भया सूर्य अकाले, भेद सुनो अव इस का सही ।
पाच मे आरे जन्म जो लेगा, उस को केवल ज्ञान नही ॥
नही मनपयव अवधि पूर्ण, यह अधकार भयो भारी ।
भद्रवाहु मुनि कहे भूप से, पाचमा आरा दु खकारी ॥

२- चॉद देखा तुम छलनी जैसा, तीसरे सुपने के माही ।
भिन्न २ समाचारी होवेगी, वोल फर्क कुछ दर्शाई ॥
भूत भूतनी नाचते हिल मिल, चौथे स्वप्ने के माहि ।
देव गुरु, धर्म खोटा जिनको, लोक मानेगा अधिकाई ॥
दया धर्म पर बहुत जलेगे, थोडे सत्य धर्म धारी, भद्र -

३- पाचवे देखा सर्प भयकर, वारह फण कर फुकारे ।
कितने साल पीछे काल पडेगा, वारह वप तक भयकारे ॥
उत्तम साधु कर सथारा, आत्म कारज सारेगे ।
कायर होवे ढील पडेगे, हिंसा धम विस्तारेगे ॥
खोटा दे उपदेश लोगो को, होवेगे वे घर वारी भद्र -

४- छटे स्वप्न मे देव विमान को, आता सो देखा फिरता ।
जिसका अर्थ सुनो राजिन्द्र, दिल अन्दर न हो स्थिरता ॥

ऊगा तरुण सूर्या आकाश, और छिपा भानु ज्ञानों।
यह दो सपनों की होगी हानि, शासन सूत्र पर मत मानों ॥
केवल और आत्मिक ज्योति, घट भी छिपेंगे भारी, भद्र .
५- छिकना कमल कुल्ली के ऊपर, दिखाया भेद गयो भाई।
नार वर्ण में सनातन के मत, धर्म चलेगा मनमानी ॥
शासन में भनि छोटी होगी मुनगण विरला देखेगा।
स्थान भीतरी सून करेंगे नर, बहुत नरों में फैलेगा ॥
६ अग्नि का चमत्कार छोड़के, भेद पूर्ण उस का होता।
उद्योत होगा मत्य धर्म का, बाकी रहेगा सब थोड़ा।
समुद्र सूखा तीन दिशा का, दक्षिण दिशा थोड़ा पानी।
दक्षिण दिशा में धर्म रहेगा, तीन दिशा होगी हानि।
पंच कल्याण भयो जिन पुर में, धर्म हानि तहाँ उठानी—भद्र
७ दसवें सोने की थाली जिस में, कुत्ता देखा खीर खाता।
उत्तम कुल की लक्ष्मी जो होगी, रहेगी मध्यम हाथा।
नटखट नीचा चोर जुआरी, सुखी होगा धन वाला।
साहूकार जो फुरेगा दिन में, गहू न सकेगा मन की ज्वाला।
धन सम्पति सज्जन की हानि, सत्यवादी जन नर नाने। भद्र ..
८ हस्ती के ऊपर ग्यारवें स्वप्ने, देखा बांदर जो बैठा।
नीच पुरुष जो होगा मालिक, ऊँचा पुरुष रहेगा हेठा।
बारहवें स्वप्ने देखा तुम ने, समुद्र मर्यादा छोड़ी।
बेटा बेटी माता पिता की, मर्यादा रखे थोड़ी।
बहु सास का करे न कहना, उलटा देगी दुःख भारी। भद्र
९ नीच शद्री सो क्षत्री होगा, वचन दे के नट जावेगा।
दगाबाज विश्वास घाती नर, सच्चे नर को हटावेगा।
भले पुरुष का आदर कमती, पापी आदर पावेगा।
गुरुदेव की सेवा ओछी, चेला चेली चाहेगा।

अपनी बढाई करेगा मुख से , गुरु को होगा दुख भारी । भद्र
१० जोत्या देख्या स्वप्न तेहरवें , बछड़ा नीका रथ माही ।
बालपने में धर्म करेगे, मयम लेगें हर्षाई ।
लज्जा से मयम को पाले, तप जप मे चित देवेगा ।
बूढा झूठा होवे गा , और आलस अधिका रहेगा ।
एक मरीखा नही मब बालक बूटा, समूचा किया अर्थ जारी ।भद्र
११ रत्नो की ज्योति मन्दी देखी, चौदवें स्वप्ने के माही ।
भारत क्षेत्र मे मन्त साध का , हित एक सा होगा नाही ।
क्रोधी क्लेशी और अभिमानी, अपनी बात जमावेगा ।
भली सीख जो देगा कोई , अवगुण उस का बतावे गा ।
अल्प होवेगा मयम वन्ता , होवेंगे बहुत पाखण्ड धारी । भद्र
१२ राजकुमार सो चढयो पोठी पर, देखा स्वप्ने पन्द्रवें ।
राजा जैन धर्म तजेगा, राचेगा मिथ्यापन में ।
बात करेगा जो मचावट की, उस की थोडी मानेगे ।
धर्मी पुरुष करो ठठा, पापी आदर पावें गे ।
होवेंगे कोई मिथ्याधारी सच्चे की होगी हानि भारी । भद्र
१३ लडते देख्या हस्ती सोलवें बिन महावत आपस माहीं ।
बार बार दुष्काल पडेगा मन चाहा वर्षे नाही ।
मात-पिता गुरु बाना करते । बिच बिच बात करेगा छोटा ।
भाई भाई मे सम्पत ओछी बोलेगा निरर्थक खोटा ।
पिता पक्ष का आदर कमती त्रिया पक्ष करेगा जारी । भद्र
१४ पुत्री मर्यादा पण छोडेगी गुणी जन थोडा होवे गा ।
झगडा टंटा निर्णय करके राजा माहि धन खोवे गा ।
कहना न माने भले पुरुष का । फिर पीछे पछतावे गा ।
छत्तीस हजार वर्ष तक राजन ऐसी रीत कर पावेगा ।
अथ मुनी सोला स्वप्ने का । राजा भय हृद धर्म धारी । भद्र

'श्री गज़ सुखमाल मुनि'

चित समता धारी जी के गजसुखमाल मुनि—टेक।

१ पिता वसुदेव देवकी माता, कृष्ण चन्द्र जी के लघु भ्राता।
द्वारका नगर मंझारी जी के गज ... चित ...

२ नेम जिनन्द की सुन कर वाणी, दुनियां समझ दुखां दी खानी।
दीक्षा ले ममता मारी जी के गज ...चित.....

३ आज्ञा ले शमशान में जावे, एकाग्र हो ध्यान लगावे।
मन वच काया संवारी जी के गज . चित......

४ सोमल ने सिर पाल बनाई, खैर अंगारे दिये जलाई।
पूर्वला वैर चितारी जी के गज.... चित......

५ मुनिवर क्रोध जरा नहीं कीना, तत्क्षण प्रकट केवल ज्ञान लीना
कर्म की मैल उतारी जी के गज.... चित . ...

६ धन्य धन्य ऐसे ऋषि हमारे, क्रोध मान को टालन हारे।
जाऊं निश दिन बलिहारी जी के गज .... चित......

७ श्री गुरू राम स्वरूप हमारे, अमर मुनि को तारणहारे।
सेवा मैं करू तुम्हारी जी के गज..... चित......

"सुन भैन भूआ गल मेरिये नी"

सुन माता मेरिये भोलिये नी,
तैनूं मूढ़ संसार दी होश नहीं।
ऐथे नारियां सारियां पैन कुम्भी,
हीरे लाल मोती नहियों सग जासी।
चंगा खावना पीवना ओढ़नाई,
पीड़े पलग तलाईयां दुःखदाई।
कौड़ी वास्ते काहनू मैं लाल हारा,
करो बचन माता लवाँ योग ताई।

सुन भैन भूआ गल मेरिये नी,
ऐथे सुख ससार दे दुख दाई।
अरि यान मारे निक्के बालकां नू,
न ही छोडदा वृद्ध जवान मारे।
जेहडे शान दुशाले पहनदे नी,
लड्डू खान पेट ओना दुख पाने।
पन्ना छोड भुआ मैंनू जान देवी,
नवा योग तै फेर मैं नाथ बाने।

ऐसे वीर वडी ऐस बेटी नू,
दया दान सन्तोष नरक सीन पाने।
साधे नारियां मेरिया भजन पास,
दम्मन हार शृंगार सब अंग चाने।
रूपे स्वर्ण दा जल जेहडा दसनिये,
तेरा दाज दौन सब पता हाने।
पन्ना छोड ससे मैंनू जान दईंगा,
नवा योग जेहडा जिदा मुक्त पाने।

तेरे नाल सहियो मेरी प्रीत नागी,
नान्नू हुण दिया तोगा लावनिये।
जिहडा रसिया है मेरे मागे नूं,
जेहडा नाम ते भोग बनावनीरे
नवा योगा नू छिद्र छुड आईंओ,
अग धूप तै पोने नावनीये।
सन पानी तेर नू नाल मेरे,
साहन कूड दे दन बनावनीय।

नवा नवरा पाप जिन झुठाट,
मेनू ससु दी सानी सभा र ते।

ऐत्थे हट हवेलियां माड़ियां नी,
जित्थे आवना जावना काल मेरे।
एत्थे घोड़ियां जोड़िया पैन कुम्भी,
सगे सम्बन्ध नहीं चलना नाल मेरे।
पिता सीस देवो ते मैं योग लवां,
लाके बैठियां गुरां जी दे पास डेरे।

उत्तम पर्व सम्वत्सरी दा दिन लोको,
बहुत करन मिथ्याती आरम्भ लोको।
जित्थे पानी दी बून्द न नजर आये,
ओत्थे आन चलाये ने बम्ब लोको।
भारी कर्मा ने पालया खंध लोको,
जिन्हां बल बलेटियां नूं फम्ब लोको।
'शेरूराम' आखे ओन्हाँ दी अक्ल मारी,
वोये अक्क ते मंगदे ने अम्ब लोको।

'बड़े बड़े हार के चल्ले'

बड़े बड़े हार के चल्ले पता नही कर्म खेलदा।

चल्ले मुसाफिर कल्ले पता नहीं कर्म खेल दा।
जन्म २ दे धर्म बिछोडे, पैंडे कठिन दिन रह गये ने थोड़े।
पापां दी गठरी न हल्ले, पता नही कर्म खेलदा।
चल्ले मुसाफ़िर कल्ले, पता नहीं कम खेलदा।

रावण जैसे प्रतापी राजे, लक्ष्मी खड़ी रही विच दरवाजे।
आगए ने काल दे थल्ले, पता नही कर्म खेलदा।
धियां पुत्र घर पुत्रां घर पोत्रे, अन्त समय तेरे कोल खलोते।
चल्ले मुसाफिर कल्ले पता नही कर्म खेलदा।

जन्म-जन्म दीया मन वडिग्राईया।
ग्रन्त समय तेग्यिा ग्रना पयगईया।
ला लए नी छाया छल्ले, पता नही कर्म खेलदा।
चल्ले मुसाफिर कल्ले पता नही कर्म खेलदा।
मन मैला तन धो-धो के रखया दुखड़े लगे नी कवल्ले।
पता नही कर्म खेलदा
चल्ले मुसाफिर कल्ले, पता नही कर्म खेलदा।
मन वस कीता तन नू भी मारया।
ग्राप तरे ग्रोरो को भी तारया,
स्वर्ग मिहामन मल्ले, पता नही कर्म खेलदा।
चल्ले मुसाफिर कल्ले, पता नही कर्म खेलदा।

होली

होली खेलेंगे मत सुजान, देखो मन मे वैराग्य जो धर के भला।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलेंगे मत सुजान।
काहे की रे गुलाब बनावे, ते काहे के कुम कुमे भर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलगे मत सुजान।
ज्ञान गुलाल फेन्ट मे बाधो, तै क्रिया के कुम कर्म भर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलेंग मत सुजान।
ग्रबीर लगा मै तन पै तपका, तो सत्य री शोभा कर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलेंगे मत सुजान।
घोला रग सयम का प्रेम मे, तो तप पिचकारी भर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलेंगे मत सुजान।
सुमन सहेली सग होना खेलते, तो कुमती मे नेह भर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलेंगे मत सुजान।
पिरले राज मुक्ति रा तो ग्रविचल सुख रो भर के।
देखो मन मे वैराग्य जो धर के, होली खेलग मत सुजान।

इक दिन चलना

वचनों के झूठे गुरां के वे मुख, सूरत इन्हां दी न कोई।
अन्ध कुम्भी नर्क विच्च वासा, निन्दा करन पराई।
धर्म राज तेथों लेखा जो मंगदा, दिया जवाब न जाई।
के इक दिन चलना सजनी, के इक दिन चलना।
डेरा जाय जंगल मलना, के इक दिन चलना।
खारे खुह कदे मिठे न होंदे, भावें लख्खा मनना गुड़ पाईए।
नागां दे वच्चे कदे मित्र न हुन्दे, भावें मोतिया चोग चुगाईए।
ये मूर्ख वन्दा समझ न जाने, भावें वार-२ समझाईए।
के इक दिन चलना

जन्म मरण तेरे जी दा विलाहा, विच्च दलगीरी घाटा।
अजकल तेरा सत्य वेला दीदा, दामत करी जानी हासा।
जे बंदया पत रखनी अपनी, छोड़ कुरे दा वासा।
के इक दिन चलना

इकना नूं तूं दुध पिलावे, इक नदियां फिरन प्यासे।
इकना नूं तू टाकियां न देवें, इक पहनन मलमल खासे।
जन्म मरण तेरे जो दा विलाहा, जो हरदम तेरे पासे।
के इक दिन चलना

थम्बा वाज़ मरीद व सौदे, फंग्गा वाज न परियां।
पुत्रां वाज न मांवा सोवन, होवन दौलत भरियां।
वीरां वाज न भैना सोवन, फ़ंद उडीकन खड़ियां।
कन्ता वाज ना नारां सोवन, होवन हूरां भरियां।
लद गया भौरे निमाना ते, खाली कर गया गलियां।
के इक दिन चलना

पैर पसारे पया विच वेड़े, किधर गए वे तेरे घर दे
जिन्हां दी खातिर तूं करे कमाईयां, नेड़े न आवन डरदे।

जिह्डे तेरे मित्र प्यारे, कडो–कडी करदे।
कोरा ठिकरा जवा दी विन्नी, ए खर्चा तैंने धरदे।
के इक दिन चलना

धरती जैसा गरीब न कोई इन्द्र जैसा राजा।
जानकी जैसी माता न कोई, लक्ष्मण जैसा भ्राता।
दया धर्म जैसा धर्म न कोई, मोक्ष मार्ग पहुचाता।
के इक दिन चलना

"शील महत्व"

शील मुन्दडी खरी है प्यारी, जे पहने नर नार जी।
१ सोला वर्ष के जम्बू स्वामी, लीना है सयम भार जी।
कर्म खपाए मुनि मुक्ति विराज्या, वरते जै जै कार जी शील
२ विजय सेठ विजया सेठानी, पलग धरी तलवार जी।
एक शैय्या पर दोनो सोवे शील तणा प्रभाव जी शील
३ नेमनाथ जब परणी आए, जाए चढे गिरनार जी।
पशुआ पुकार सुनी जब स्वामी, तज दी राजुल नार जी शील
४ सेठ सुदर्शन सूली चढया, जिन सिमरया नवकार जी।
सूली टूट सिंहासन बनया, देव करें जै जै कार जी शील
५ चम्पा नगरी ताला जडया, जडया देव मुरार जी।
सती सुभद्रा ने ताला खोल्या, देव नमें चरणार जी शील
६ गजसुखमाल ने ध्यान जो कीना, विच ससाणामे जाय जी।
सोमल ससुरे को क्रोध जो आया, बांधी मिट्टी दीपाल जी शील
७ क्षमावार के महामुनि राया, पाया केवल ज्ञान जी।
कर्म खपा मुनिवर अपने, जा पहुचे निर्वाण जी शील
८ दान शील तप भावना भावे, शिवपुर मारग चार जी।
कर्म खपा मुनि मुक्ति विराजे, होवे जै जै कार जी शील

विजयकुमर और विजयाकुमरी

धन २ विजय सेठ सेठानी, विजया पाल्यो शील महान।

१ परणी में निज पति आई, हिवड़े हर्ष अपार।
पिउ मन्दिर पहुंची मदमाती, सज सोलह शृँगार।
वारी २ सज सोलह शृँगार . धन २ विजय सेठ सेठानी

२ अन्धेरी को व्रत हमारो सुन सेठानी वात।
तीन दिवस दे रहा पीछे जी, कोई सुख विलसो संसार।
धन २ विजय सेठ सेठानी

३ बचन मुनी मुखडो कुमलाओ, वदन गया विरलाय।
कैसे निवसी प्रीत पिउ जी, अब काये करूं उपाय।
धन २ विजय सेठ सेठानी

४ उतरयो मुखड़ो देख सेठ जी, करे प्रेम से वात।
तू क्यों सोच करे सुख लीनी, तीन दिवस की वात।
धन २ विजय सेठ सेठानी

५ कहे सेठानी सुनो सेठ जी, खूब वनी है आज।
अन्धेरी को व्रत आपके, मेरे उजाली जान।
धन २ विजय सेठ सेठानी

६ इसी कारण है अर्ज आपसे, परणो दूजी नार।
सुख विलसो उस साथ प्रेम से, मैं लेसूं संयम भार।
धन २ विजय सेठ सेठानी...

७ संयम भार लेवो मत सजनि, दूजी परनू ना।
शील पालसा दोनों प्रेम से, उत्तम अवसर जान।
धन २ विजय सेठ सेठानी...

८ घृत अग्नि के पास निबे नहीं, जो पाले सो पुण्यवान।
दोनों सोता एक सेज में, मन को रखा तान।
धन २ विजय सेठ सेठानी...

९ इसी तरह १२ वर्ष लगे, पाल्यो शील सुजान।
विमल केवली करी प्रशसा, दोनो उत्तम प्राण।
धन २ विजय सेठ सेठानी

१० प्रगट हुई जब बात दोनो की, लीनो सयम भार।
शील पाल के निर्मल देह धरी, धन २ तस अवतार।
धन २ विजय सेठ सेठानी

११ शील पाल के राजेन्द्र बन गये, और आजेन्द्र कहाय।
शील पाल के कुन्दन बन गये, नित्त सच्चा बन जाये।
वारी २ नित्त सच्चा बन जाये
धन २ विजय सेठ सेठानी

"जीर्ण और पूर्ण सेठ"

वह चौमासी ग्यारहवीं जी, विचरत सयम धीर।
विशालापुर मे आविया जी, स्वामी श्री महावीर
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

बलदेव नो छे देहरो जी, जहा प्रभु काउसग्ग कीध।
पच्चक्खाणी चौमास की जी, स्वामी जी एह तप कीध।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

जीण सेठ तिहाँ वसे जी, पाले श्रावक धर्म।
आकारे करी ओलख्या जी, जाने धर्म न मर्म।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

आज छे उपवासिया जी, जाने धम न मर्म।
कल करसी प्रभु पारणो जी, मैं सही कर देस्यू दान।
जगत्त गुरु त्रिशला नन्दन वीर

घर आया छे पाहुणों जी, नेतिया एक न वार।
प्रभु जी क्यों नही आवसी, मैं विनती करू वारम्वार।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

पीछे मैं करसूं पारणो जी, स्वामी ने प्रति लाभ।
होसी मनोरथ माहरो जी, ज्यों वरसाले आभ।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर ..

सदा सेठ इम चिन्तवे जी, सफल होसी मुझ आश।
पक्ष मास गिनता थका जी, पूर्ण थयो चौमास।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर ..

सामग्री सव आहार की जी, सहजे हो गई तैयार।
प्रभु जी नो मार्ग देखता जी, वैठा घर के वाहिर।
जगत गुरु त्रशला नन्दन वीर...

अवसर उठया प्रभु गोचरी जी, श्री सिद्धार्थ पूत।
विशालापुर में आविया जी, पूर्ण घर पहुंच।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर ..

मिथ्याती जाने नही जी, जग माहि सुरतरू एह।
दासी प्रते इम कहे, वाई साधु को भिक्षा देय।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

चाटुकर ने वाकुला जी, आन प्रभु जी ने दीध।
निरागी लेई करी जी, स्वामी जी पारणो कीध।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

देव वजावे दुंदभि जी, वोले वे कर जोड़।
सौनैट्या री वर्षा हुई जी, साढे वारह क्रोड़।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर—

धन २ दासी तू सही जी, धन थारो अवतार।
दान दियो श्री वीर ने जी, पामयो भवजल पार।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर...

राजादिक सहु आविया जी, धन २ पूण सेठ।
उत्तम करनी थे करी जी, और सहु तुम हेठ।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
लोक कहे तुम क्या दियो जी, पारणो कीधो वीर।
लाजा मरता इम कहे, मैं तो वहरायो बुरो ने खीर।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
जीर्ण सेठ मुनी तिहा जी, वाजयो दुदभि नाद।
अन्त कियो प्रभु पारणो जी, मन में थया विखवाद।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
मैं जग मे अभागिया जी, म्यारे नहीं आया स्वामी।
कल्प वृक्ष किम पामियो जी, म्हारा मगल ठाम।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
जो २ मनोरथ मैं किया जी, ते २ रहा मन माय।
निर्धन जिम २ चिन्तवे जी, ते सहु निर्फल जाय।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
प्रभु जी कीनो पारणो जी, कीनो उग्र विहार।
आया पास सतानिया जी, वे मुनि केवल धार।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
विशाला पुरनो राजवी जी, लोक सहु आनन्द।
राय प्रश्न पूछे ऐसे जी, सद्गुरु चरण पाय वृन्द।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर
म्हारे नगर मे कौन छै जी, पुण्यवत ने जसवन्त।
कहे केवली आज छै जी, जीर्ण सेठ महन्त।
जगत गुर त्रिशला नन्दन वीर
कहे सेठ किन कारणे जी, जीर्ण सेठ महन्त।
दान दियो श्री वीर ने जी, पूर्णते यशवन्त।
जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर

७ द्रव आवश्यक बहु, किया गया व्यर्थ महुं।
अनुयोग द्वार देखी जाओ रे ...
८ शुद्ध भव आवश्यक, राई सम होवे अघ।
मेरु जी अवृत उड़ायो रे ...
९ स्वर्गो के सुख चाहो, स्थानक मांहि वेगा आवो।
दोनों काल आवश्यक उठायो रे .....
१० संशयों मे उलझ रहा, अन्त मे वैराग्य भया।
सोई भव आवश्यक बताओ रे . ..

पार्श्वनाथ जी

१- काशी देश बनारसी, इन्द्रपुरी सम सम जानो जी।
अश्वसैन तिहा राजवी, वामा तस घर नारो जी ॥
श्री पार्श्व जिन वन्दिए... ....

२- प्राणत कल्प थकी चव्या, बतीस सागर स्थिति भोगीजी।
वामा कुखे आय उपन्या, तेवीसवे जिन जोगी जी ।
३- चौदा स्वप्न माता देखियो, जन्मा बाल कुमारो जी।
पार्श्वनाथ नाम दियो, नील वर्ण तन प्यारो जी . ।
४- नौ हाथ प्रभु तन शोभतो, सहस्त्र आठ लक्षण जानो जी
यौवन वय प्रभु परणियो, श्री प्रभावती नारो जी... ।
५- तिन अवसर गंगा तटे कमठ नामे तपधारी जी।
तापसों के संग परवरे, सग बहु नरनारी जी...।
६- वामा कहे श्री पार्श्व से, मै निरखू तपधारी जी।
—माता दे मन समझावने, प्रभु जी ने करी तैयारी जी ।
७- कमठ सुनी यह वार्ता, राजकुंवर यहां आवे जी।
मानता बहु करवावने, लकड़ा बहुत जलावे जी ।

८- पार्श्व प्रभु तिहा आय के, अवधि ज्ञान करे देखे जी।
नाग नागनी दा जोडला, अग्नि माहि वध होवे जी ।
९- प्रभु कहे हे तापसा, यह काई मिथ्या मति धारो जी।
जीव जले इस आग में, यह क्या कियो आचारो जी ।
१०- कमठ कहे हे राजवी, तू क्या जाने जोग वाता जी।
वालपने हम तप तपया, हम जाने सकल सिद्धात जी ।
११- प्रभु जी काठ पडाविया, चाकरा हाथ पडायो जी।
नाग नागनी तिहा देख के, प्रभु जी ने हाथ धराये जी ।
१२- नवकार मत्र सुनावियो, शरणे चार वताओ जी।
काल करी तिन अवसरो, थयो भवनपति रायो जी ।
१३- नागकुमार की जात मे, धरणेन्द्र पद पायो जी।
पद्मावती सुराङ्गना, नागिन का जीव थायो जी ।
१४- तीस वष घर मे रह्यो, पांच इन्द्री सुख भोगो जी।
पार्श्वनाथ महामुनि, सयम लेवा योगो जी ।
१५- लोकातिक तिहा आवियो, प्रतिवोध्या जग स्वामी जी।
तीन सौ साथे सयम लिया, प्रभु जी अन्तरयामी जी ।
१६- वाग माही विराज के, निश्चल ध्यान लगाओ जी।
कमठ तापसी अज्ञान वशे, मेघमाली तिहा आयो जी - ।
१७- अपना वैर सम्भाल के, सुर जायो तत्कालो जी।
प्रभु जी देख, के ध्यान मे, किनी वायु असरालो जी - ।
१८- तीन सौ साधु जुदा २, चहू दिशा मे जावे जी।
मुसलाधार थमे नही, वर्षा छिन छिन जावे जी ।
१९- चम चम, चमके दामिनि, छम छम वर्षे धारो धार जी।
गट गडाहट, अम्बर करे, नीर वर्षे अपारो जी -।
२०- शीतल वायु चले घणी, सुरनर डिग २ जावे जी।
प्रभु जी कोउसग्ग मे खडे, ध्यान मे मन, न चलावे जी...।

"नेमी राजुल"

१ व्यावन आये सब मन भ ाये, पशुओं ने करी है पुकार।
जब तक राजुल देखन लगी, कंगना दिया है उतार।
कि देखो रथ फेर गये, मेरी क्या गुनाह तकसीर।
कि नेमी प्रभु तज गये

२ नौ भव की मेरी प्रीत माता, छिन में दीनी तोड़।
स्वर्ग मुक्त के कारण माता, जाए चढे गिरनार।
कि मुझको विसार गये, मेरी

३ नेम गया तो चलया नी जान दे, मतकर सोच विचार।
नेम सरीखा वर ढूंढ ल्याऊं, तेरे ताई भरतार।
कि विगड़ तेरा क्या गया, मेरी ..

४ गालियां तू मत दे माता, मैं नहीं गणका नार।
और पुरुष मेरे पिता व भाई, नेम मेरा भरतार।
कि मुझको विसार गये, मेरी ..

५ जाऊगी मैं नेम पिया पे, लेऊंगी संयम भार।
कर्म खपाऊगी अपने माता, विनती करूंगी अपार।
कि यही मन धार लिया, मेरी --

६ माता नूं जब मिलकर चाली, संग सहेली नार।
राह वाट जब बादल गिर गये, वर्षा हुई अपार।
कि रह नेमी मिल गये, मेरी

७ सग सहेली चीर सुखावे, बैठी है राजुल नार।
राजमती का रूप देखके, हो गया हाल वेहाल।
कि देखो मन चल गया, मेरी .

८ ध्यान डिगेन्दा मुनिवर देखे, बोली राजुल नार।
ऐसा संयम पालो प्रभु जी, हो जाये वेड़ा पार।
कि रह नेमि दृढ किया, मेरी...

९ राजुल रह नेमी मिलकर दोनो, जाए चढे गिरनार।
नेमनाथ के दर्शन करके, लीना संयम धार।
कि शिवरमणी वर लई, मेरी

१० दान शील तप भावना भावो, यह जग मे तत्वसार।
कर्म खपाये अपने री माता, हो गया जय २ कार।
कि सिद्धो मे विराज गये, मेरी—

❀ नेम विवाह वैराग्य ❀

नेम जी की जज बडी भारी देखन को आये नर नारी

१- अनगिणत घोडा और हाथी, मनुष्य की गिणती नही आती।
आगे ध्वजा जो फर्राती, रमत मे धरती थर्राती॥
दोहा—समुद्र विजय जी का लाडला, नेम जिन्हो का नाम।
राजुल को ले आये परणवा, उग्रसैन के धाम।
प्रसन्न होई नगरी सब भारी

२- कौसम्बी वागा अतिभारी, जरी गोटन की छवि न्यारी।
कलगी तुररा सुखकारी, मालगर मोतियन की डारी॥
दोहा—कानो कुण्डल जगमगे, शीश मुकुट झलकार।
कोड भानू की करू उपमा, शोभा अधिक अपार॥
बाज रहा बाजा टकमारो ——

३- छूट रही हुक्का तुर्राई, ब्याहन को आये बडे भाई।
झरोखे राजुल भी आई, नेम को देखी सुख पाई॥
दोहा—उग्रसैन जी तिन समय, करने सोच विचार।
बहुत जीव इकट्ठा कीना, वाडा भरा तिन वार॥
करी सब भोजन की तैयारी . .. .

४- निकट जब तोरन को आये, पशु जीव सब कुरलाये ॥
नेम जी मुखों फरमाये, यह सब जीव क्यों लाये ॥
दोहा—पाका भोजन होवसी, मारन वास्ते यह।
यह बचन सुनी नेम जी, थर थर काम्पे देह ॥
भाव से चढ़ गए गिरनारी .. ...

५- पीछे से राजुल जब आई, हाथ तब पकड़ों हैं माई।
कहां तू जावे मेरी जाई, और वर लाऊँ तुझ ताई।
दोहा—मेरे तो वर एक है, हो गये नेमकुमार।
और वर कबहुं न प्रणमू, छोड करो विचार ॥
दीक्षा की राजुल ने करी तैयारी

६- सहेली सब ही समझावे, हृदय एक राजुल नहीं लावे।
जगत सब झूठा दर्शावे, मैंरे मन नेम कुंवर भावे।
दोहा—तोड़ा कंगन तोड़ला, तोडा नव सर हार।
काजल टिकी पान सुपारी, सभी तजा सिंगार।
छोड़ बन चली गिरनारी .. ...

७- तजा सब सोलह श्रृङ्गारा, आभूपण रत्न जड़ित धारा।
लगे मुझको सब सुख खारा, छोड़ वो गये निराधारा
दोहा—माता पिता परिवार को, तजत न लागी वार।
वियोग कर वह चली आपसे, जाये चढ़ी गिरनार।
झुरती रह गई महतारी ...... — ...

८- दया दिल पशुओं की आई, त्याग तब दीनो छिन मांहि।
सब के बन्धन छुड़वाई, नेम जी गिरवर पे जाई।
दोहा—राजुल नेम गिरनार पे, ध्याया उज्जवल ध्यान।
नेम से पहले राजुल जी को, उपज्या केवल ज्ञान ॥
हुई मुक्तिमें जय कारी............

"श्री नेमीनाथ जी का सजाह"

ऐसे यादवपति, ऐसे यादवपति परणवा
पधारया श्री गजमति ऐसे
उग्रसैन राजा की पुत्री ऐसी।
शास्त्र मे कही है आभा बीज जैमी ऐसे
व्यावन आये श्री नेम कुमार।
वहुविध सज साधे कृष्ण मुरार ऐसे
शकेन्द्र ब्राह्मण रूप धरे।
प्रभु जी के आगे वह अर्ज करे- ऐसे
कृष्ण कहे रे ब्राह्मण किम आये।
पीले चावल तुझे किमने दिये ऐसे
ब्राह्मण रुप धरे तिन वार।
तोरण पर आये श्री नेम कुमार ऐसे
पशुओ के वाडे मे पाटा भरा।
करुणा आई रथ पाछा फेरा - — ऐसे
सयम लेई त्यागी, ऋद्धि छती।
केवल लई पाई मोक्ष गति .. . ऐसे
मुनि श्री नन्दलाल जी ने हुकम दिया।
जव रावल पिण्डी चौमासा किया ऐसे
सवत उन्नीसो अठसठ की साल।
पूज्य श्री खुव चन्द जी ने जोडी रिसाल ऐसे

"श्री महावीर स्वामी स्तोत्र"

ऐसे सन्त हुऐ जी महावीर ऐसे साधु हुए
जी महावीर। उनकी क्या करूँ तारीफ ऐसे
खड़े वह ध्यान लगा इक वार, आया गऊँया
चरावन ग्वाल, उसने देखया इक फकीर ऐसे
जब वह मुड़ कर आया पाली, प्रभु जी के
पास खड़ा असवाली, गऊयाँ मेरिया किधर गईया रघुवीर ऐसे
प्रभु जी न बोले उत्तर दीन, पाली ने मन में
क्रोध जो कीना, दीने ठोक कानो में कील ऐसे
ऐसा संगम वह दुख दीना, जोर ला लिया छः।
महीबा, प्रभु जी नहीं हुए दलगीर ऐसे
फिर वह पाली मन पछताया, प्रभु जी के चरणों
शीस नमाया, मुझ पर क्षमा करो महावीर ऐसे
जी रे खुशीराम कर जोडी, कितनी सिफत करा मैं
थोड़ी, इतनी नहीं मेरी ताफीक ऐसे

❀ धन्ना जी ❀

सांभल हो सुरता शूरने लागे जी वचन जताजना
कायर ने लागे नही कोय...... ..
नगरी तो राज गृहीनां वासियां, सेठ धन्ना जी जग में सार
पूर्व पुण्य से वह ऋद्धि पामिया, आठ नारी नां भरतार
एक दिन धन्ना जी बैठे पाटले, स्नान करे तिन वार।
आठों ही नारी मिलकर प्रेम में, कूड़ रही जलधार ..

सुभद्रा जी नारी चौथी तेहनी, मन मे भई दलगीर।
आसू तो निकले जा ने नैन मे, सयम हो लेवे मेरा वीर
प्रेम धरी ने धन्ना जो पूछिया, कामन क्यो भई हो उदास।
मंजा मत राखो मुझ मन आगली, कारण कहो मेरेपास
कामन कहे हो कथा माहरा, वीर ने चटया है वैराग।
एक २ नारी नित्त का परहरे, सयम लेने की लगी लाय
धन्ना जी कहे भोली बावली, कायर दिखे है तेरा वीर।
सयम लेने की दिल मे ठानी, फिर क्यो करे है वो ढील
कामन करे ओ कथा माहरा, मुख से बनाओ फोकर बात
इन मुख छोडी ना बाजो सूरमा, प्रीतम तब जानू थारी साँच
इतने मे धन्ना जी उठकर बोलिया, कामन रहो हमसे दूर।
सयम तो लेवे इन अवसर, जब बाजेगे जग मे शूर
कामन कहेओ कथा माहरा, किया इमी के बस बोल।
हसी की मॉची मत कीजो माहिवा, हिवडा तो लीजे बाहर खोल
सयम लेना प्रीतम सोहला, चलना है कठिन दिचार।
बाईस परिसह सहना दोहला, ममता मारी ने समताधार
उत्तर पर उत्तर हुआ प्रीत गना, आया साला जी के भवन मझार
हेला तो मारे इन अवसरे, उतरो न कायर नीचे आप
साले बहनोई सयम आदरे, श्री वीर जिनन्द जी के पास।
शालभद्र जीस्वार्थ सिद्ध गये, धन्ना जी शिवपुर बास

"बारह मासा श्री महावीर स्वामी का"

❀ दोहा ❀

आदिनाथ जिनराज थी, सेवू श्री वर्द्धमान।
वदू वाणीशारदा चचल करे जवान।

८ कत्तक कर्म खपावन कारन,
अनार्ज देश पधारे प्रभु हमारे।
प्रथम किया दो दिवस पारना,
वहुल विप्र के द्वारे खीर आहारे।
वहुत सहे उपसर्ग परिसह तन के,
नागन हारे दुख अति खारे।
श्री महावीर जिनन्द प्रभु तो,
सोहन लाल वलिहारे तन मन वारे।
९ मघर मिथ्याती सुर संगम,
देवलोक से आया क्रोध वधाया।
षट मासा पर्यंत ओस ने,
वहुविध कष्ट दिखाया अति सताया।
वहत जतन कर ना दम होके,
फेर स्वर्ग को धाया नही क्षमाया।
सागर इन्द्र ते उस सुर ऊपर,
रिस से वज्र चलाया धरण गिराया।
१० पोह प्रभु जब चतुं कर्म खपाये,
प्रगटया केवल ज्ञान मुकत निशान।
लाखो श्रावक श्राविका चोदह हजार,
प्रमाण मुनीश्वर जान।
छतीस हजार आर्या माही,
चन्दन वाला स्यान चतुर सुजान।
ग्यारह गणधर श्री गुरु गोतम,
सब से अधिक प्रधान अति वुद्धवान।
११ माघ माह मिलकर सब संगत,
पावापुर में आई खुशी मनाई।

नाटक नाद बजत दुदभी मिलकर,
मुरा बजाई महिमा गाई।
नो लच्छी नो मल्ली राजे,
चौसठ थे सुर राई जान अधिकाई।
समोसरन को अद्भुत लीला,
योजन एक रचाई अधिक सुहाई।

१२ फागुन फिर उस समोसरन में,
श्री जिनराज बखानी सुंदर वानी।
भव जल पार उतारन हारी,
उत्तम नौका जानी ज्ञान निधानी।
कतक मास वदी तिथ पन्नी पायो,
पद निर्वाणी मुक्ति ठानी।
सोहन लाल जब चौसठ इन्द्रा,
पूर्व रीत समानी देह जलानी।

१३ सिद्ध धाम जब पाया प्रभु ने,
बहुजन भये उदास अति निराश।
तत क्षण श्री गुरु गोतम जी को,
उपज्यो केवल ग्वास भया प्रकाश।
धन जिनवर धन गोतम स्वामी,
मैं चरणों का दास पूरो आस।
मोहन लाल ब्राह्मण अमृतसर,
रचयी बारा मास कीया हुलास।

卐

जब देखे सुन्दर नार तो मन ललचावे।
ये नर्क गति जाने की विध प्रगटावे।
ये दृग दृष्टि जग में करती है अति खुआरी।
ये पर भव मे होवे तुम को दुःखकारी।
३ घ्राण इन्द्री वस्तु सुगन्धमय चाहती है।
फल फूल की खुशबु इसे बहुत भाती है।
केसर चंदन की सुगन्ध जब आती है।
मन को विषयों की तर्फ तुरन्त लाती है।
मत इस इन्द्री को करो नरो! तुम जारी।
ये पर भव में होवे तुम को दुःखकारी।
४ रस इन्द्री जग में ख्वार करे इस जन को।
खाने के सबब नर करे याचना धन को।
ललचे नित सुंदर भोजन रस दायक को।
सुन्दर खाने खा पुष्ट करे इस तन को।
तब तम रूपी निद्रा की चढ़े खुमारी।
ये पर भव में होवे तुमको दुःखकारी।
५ फरस इन्द्री सब इन्द्रियों से बली कहावे।
दिल को विषयन के कूप में चाहे डुबावे।
सेवे कुशील और नेम धर्म विसरावे।
भूषण अलंकारों से प्रीति बहु लावे।
इस इन्द्री के वस में है बहुत नरनारी।
ये पर भव में होवे तुम को दुःखकारी।
६ यह पांचों इन्द्री हैं काबू जिस नर के।
वह शिव पुर पहुंचे भव जल पार उतर के।
निस दिन बांधूं पद पंकज श्री जिनवर के।
ये छन्द कह्या द्विज सोहन लाल उचर के।

वह धन्य पुरुष जिन इन से प्रीत वसारी।
ये पर भव मे होवे नर को मुखकारी।

"भजन वृक्ष का"

तर्ज डयोढ का

१ उस धर्म वृक्ष का प्यारे उत्तम फल मुक्ति धाम है।
दृढ निश्चय है मूल एस का, विर्वा है अति तूल एस का।
सयम व्रत है फूल एस का, वहुत कठिन ये काम है।
न कर सकते जन मारे, इस धर्म वृक्ष का प्यारे
२ पाच महाव्रत इसकी डाले, सतरह विध से जो जन पाले।
सो ऐसा फल लैन सुखाले, भोगे सुख अभिराम हैं।
दुनिया से हो कर न्यारे, इस धर्म वृक्ष का प्यारे
३ तीन भान्ति के सुन्दर पत्र, निर्मल दर्शन ज्ञान चरित्र।
केवल रचना शा। अनुतर, रहे चौदस मे ठाम हैं।
विरला पहुचे इस द्वारे, इस धर्म वृक्ष का प्यारे
४ भव्य जनो के कोमल मन मे, ये तो उपजत है इक क्षण मे।
उत्तम कुल और श्रेष्ट घरन मे, वढता आठो याम है।
मिथ्या का घोर निवारे, उस धर्म वृक्ष का प्यारे
५ अति उच्चे पद द्वार जिनो का, ये फल है आहार तिनो का।
गुण गावे ससार तिनो का, मोहन लाल गुलाम है सोई।
मन वसे हमारे, इस धर्म वृक्ष का प्यारे

******

'भजन रेल का'

देखो कर्मो की वडियाई कैसी जग मे रेल चलाई।

॥ टेक ॥

१ पुद्गल का तन इंजन कीना,
द्वात्रिंशत से जोड़ जू दीना।
बीचत तंदूर उदर धर दीना,
राग द्वेंष की अग्नि जलाई।
देखो कर्मो की वडियाई...

२ नैन चिराग करत उज्जारे,
तृष्णा चीक रैन दिन मारे।
सांचे गुरु हैं गाढ हमारे,
भेद सकल जिन दिया बताई।
देखो कर्मो की वडियाई...

३ ये दुनियां का है स्टेशन,
जीव मुसाफिर सव ही चेतन।
धर्मास्तिकाया की लाईन,
चोदह राजुलोक विछाई।
देखो कर्मो की वडियाई...

४ इस के चार वड़े कारखाने,
चार गति आखर नर जाने।
लाख चौरासी हैन ठिकाने,
मील वरस गिन उमर गवाई।
देखो कर्मो की वडियाई...

५ है अति कठिन राह मुक्ति की,

इस मे सडक बनी समगत की।
अकसर टिकट मिले गत मत की,
जिस २ विध नर करत कमाई।
देखो कर्मों की वडियाई

६ चलत चलत मग इजन फटे,
काल चोर चेतन धन लूटे।
सोहन लाल माल सब छूटे,
यह देही फिर काम न आई।
देखो कर्मों की वडियाई .

****

"शाल भद्र जी"

शाल भद्र और धन धन्ना जी,
धन सुभद्रा जिन की नारी।
छतीस ऋद्धि छोड के सयम लेवे,
उन पुरुषो की बलिहारी ॥ टेक ॥

१ स्नान करन को बैठे धन्ना जी,
सुभद्रा जी ढोले पानी।
सुभद्रा जी आसु जब आवे,
याद करे अपना भाई।
धन्ना जी देखी ने पूछे,
पत्नि क्यो दलगीर हुई।
आठ रमणी मे सब से प्यारी,
किस कारण अधीर हुई।

सुभद्रा कहे तुम सुनो पिया जी,
मैं बात सुनी अचरज कारी ॥ छती ॥

२ मेरा भाई शाल भद्र जी,
नित २ छोड़े इक २ कामन।
रूप योवन में ऐसी सोवे,
जैसी रजनी दमक दामन।
मै भाई अब किसको कहुगी,
क्या करेगी मेरी जामन।
संयम लेने के बाद आज फिर,
कैसे चलेगा घर का नामन।
इसी वजह से मेरे पिया जी,
नैनों में आया पानी ॥ छतो ॥

३ बड़ा अफसोस मुझे आता है,
तेरा भाई है कायर।
जिस वस्तु को छोड़ना चाहे,
फिर क्यों देर करे उस पर।
कहना मुश्किल नहीं पिया जी,
करना मुश्किल ज्यादा तर।
एक व तुम छोड़ दिखाओ,
फिर उपदेश करो सब पर।
ए वक्त कहना सच मानु तेरा,
आज ही छोड़ी आठो नारी ॥ छातो ॥

४ मैं भाई तुम सब बहनां,
संयम लेने की मर्जी।
आठो पद्मनी मिलकर सारी,
करे पिया से अर्जी।

ए क्या बात करी प्रीतम जी,
हम तो तुम मे खुद गर्जी।
पल्ला झाड के धन्ना जी आए,
जहा बैठे शाल भद्र जी।
देवी दयाल कहे तीनो उत्तम,
ले मयम आत्मा तारी ॥ छती ॥

❀ अंजना का जीवन ❀

(बैंत) महेन्द्र पुर दे बाग दा करा वर्णन,
जित्थे केसर क्यारी सी महक रही।
ओमे बाग विच सखिया खेल रहिया,
हसन खेलन ते वाणी विनोद भरी।
इक सखि ने आखया अजना नु,
हुन सानू तू क्यो विछोड चली।
प्रेम नाल लाया बूटा पक्क गया,
पक्के बूटे दा रस निचोड चली।
गम डाडा सानु तेरे जानदा ए,
सीने विच वेखो जिवें कटार चली।
सदमे महागे तेरी जुदाई वाले,
कूज वन तो उडार तू मार चली।
पखा वालिया नू वेपख करके,
साडे दिल दी कली मरोड चली।
सर सब्ज बाग लहरावदा सी,
ओस बाग नू अज सुका चली।

मंत्रीवर सी बैठे सलाह करदे,
विधुप्रभ कुमार योग्य वर होसी।
पर पंडित बोलया उमर थोड़ी,
संयम लैके करना कल्याण होसी।

मरकत मणि दी शोभा सी कुमर अन्दर,
स्फटिक रत्न दी ओदे च सीलताई।
चन्द वांग पया चेहरा चमकदा ए,
ऐसे जन्म च मोक्ष दी टिकट लई।

कुमार चर्म शरीरी दी गल सुनके,
हुन तां अंजना ने मत्था टेक दित्ता।
धन धन कुमर तेरे जन्म नू ए,
जिन्हें कर्मा दा जाल हटा लित्ता।

कुमार पवन भी धीर गम्भीर सखि,
ओदे मत्थे ते नूर पया चमकदा ए।
जिदा सूर्य दे वांग तेज झलकदा ए,
रत्नपुरी दा लाल इक दमकदा ए।

सिंह नाल सियार दा मेल कोई न,
मरकत मणि दी शोभा नही कांच दी ए।
कित्थे चर्म शरीरी कुमार विधु,
कित्थे पवन दा मेल रचावनी ए।

अज सखि तू सुन लै गल मेरी,
कित्थे विधु ते कित्थे पवन भवधारी।
सोनें पीतल दे विच जिवें फर्क दिसे,
इक अमृत ते दूजा ए विष भारी।

कुमार पवन भी अज ओस बाग अन्दर,
एहना सखिआ दी गल सुन लीती।
निन्दा सुन तलवार झट खिच लई,
अखा लाल पीली गुस्से नाल कीती।

पवन गर्ज के शेर दे वाग आया,
तद मत्री ने धीरज खूब दित्ती।
रोगी बन्दी शरणागत बालक कन्या नू,
नही मारन दी शास्त्र सलाह दित्ती।

ऐदा लेना बदला मन धार लीता,
शादी करके एहनू बिसार नाई।
पिता तुल्य मी गल तुआडी मन लीती,
शादी करके एहनू बिसार नाई।

रोप धरके दोनों शहर आये,
हुन व्याह दी भारी तैयारी कीती।
वज गज जलूस महेन्द्र पुर आया,
रस्म शादी दी सारी अदा कीती।

डर्द गिर्द बैठे भाई अजना दे,
अखा विचो पये नीर वहांवदे ने।
हृदय नाल लाया मा ने अजना नू,
बाप प्रेम दे नाल समझावदा ए।

बेटी लाज रखी अपने कुल दी तू,
सौहरे घर नूं स्वर्ग बना लेवी।
सस सौहरे दी सेवा बजा के ते,
चन वाग त इज्जत चमका लेवी।

ल देके तोरया बाप ने सी,
आके रत्न पुरी विच पैर आया।
पैर पांदियां ई पासा उलट गया,
दिन वेले अन्धेरा ही आन छाया।

दासी बाप ने दिती सी दाज अन्दर,
बसन्त तिलका नू अंजना नाल ल्याई।
सुन्ने महल विच दोनों कैद कीती,
दिल जरा न प्रेम दी मेहर आई।

दिन दिन करके बारह वर्ष बीते,
ते बारह वर्ष न पवन ने पैर आया।
गल बाग दी दिल विच रड़कदी ए,
ओसे रड़क ने दिल विच छेद पाया।

मन मारके दिल नूं तोड़ के ते,
आहां भरदियां दा समय निकलदा ए।
सारियां आशा निराशा ने लुट लईयां,
पर कसूर मेरा नहियों दिसदा ए।

किसे प्रेमी दा प्रेम छुड़ाया होसी,
पशु पक्षियाँ दा विछोड़ा पाया होसी।
बनदे कम्म च रोड़ा अटकाया होसी,
ओस पाप दा फल मैं पाया होसी।

रो धो के बारह वर्ष बीते,
युद्ध च पवन चले गल सुन पाई।
सिर उपर धरया मटका दही वाला,
पति देव दे शगुन मनान आई।

मति देविया दी मोनी चाल देखो,
रुठे पति नू किवें मनान चली।
कदी अंजना बल न नजर कीती,
तो भी अंजना दर्शन पान चली।

हृदय फट गया भैडी गल उत्तो,
फटे विच न प्रेम दी बू आवे।
ओसे था उते, क्रोध ईर्षा सी,
ओनू देख के बाग दी याद आवे।

इन्द्राणी बाग सी ओदे च सुन्दरताई,
रूप यौवन दी पूर्ण बहार दिस्से।
जद पवन ने देखया अंजना नू,
ओदे मत्थे ते गुस्से दी लहर दिसे।

निन्दा सुन मेरी खुशी होवन्दी सी,
अज खुशी मैं सारी बता देवा।
ऐहनू पैरा दे विच कुचला के ते,
ओस निन्दा दा बदला चुका लेवा।

हाथी छुटे सी सति दे बल ओने,
डिगी गिरी ते आ बेहोश होई।
अंग अंग तोडे ओदे हाथियां ने,
दही टुल मटकी चकनाचूर होई।

धरती उत्तो उठाके तिलका ने,
ओनू लयाके महल दे विच पाया।
दोनों रोदियां ने अपने कम उत्ते,
कर्म करण वेले न ख्याल आया।

ओदर पवन ने युद्ध वल मुख कीता,
रात मान सरोवर दे उते आई।
कुमर लेट रहे अपने पलंग उत्ते,
चकवा चकवी दे रूदन दी आवाज आई।

रूदन सुन के मंत्री नूं गल पुच्छी,
चकवा चकवी दा विरह सुनावंदा ए।
रात वेले ड़ाडा ए वियोग सहन्दे,
पंछी अपना प्रेम जतलांवदा ए।

गल सोचो कुमार ने दिल अन्दर,
अंजना छडया नूं बारह वर्ष होये।
मेरे मानव कोलों ने ए पंक्षी चंगे,
जेहड़े प्रेम दे विच ने सने होये।

हुन चकवा चकवी दी गल सुनके,
कुमार अपने मन शरमांवदा ए।
इक वारी मिला जाके अंजना नूं'
मन्त्री वर नूं आख सुनांवदा ए।

खुशी होके मंत्री नाल आया,
झट वुहे दे वल सी हत्थ पाया।
बोली तिलका कौन एत्थे बोलदा ए,
मंत्री बोले कुमार पवन आया।

मंत्रीवर दी आवाज पहचान के ते,
झट तिलकां ने बुहा खोल दित्ता।
संकट खुलया ए अज अंजना दा,
ओनुं प्रेम दा प्याला पिला दित्ता।

रात रहे कुमर पास अजना दे,
हुन जान लगे अखो आसू आये।
प्रेम नाल मुन्द्री ओदे हत्थ पाके,
विदा लैके युद्ध स्थान आये।

युद्ध गया नू पज सत मास होये,
गर्भ प्रगट दे चिह्न भी नजर आये।
इक दासी ने आखया सस नू जा,
सस दोड के गुस्से दे नाल आये।

हाय जुल्म दी टहनी नू अग लगे,
जिन्हे मेरे कलेजे नू साड दित्ता।
दुध वाग चिट्टा सी कुल मेरा,
दुष्टे काला ज्या दाग तू ला दित्ता।

माता ऐडडे बोल न बोल मैंनूं,
तेरे बोल लगदे तीखे तीर मैंनू।
तेरे कुल नू मैं नहियो दाग लाया,
सच्च सच्च बताया ई मैं तैंनू।

हाय दुराचार फैला केते,
पापी पिण्ड तू अपना मजा लिता।
भैडे चदरे खेला नू खेल केते,
नक छुरी दे नाल कटा लिता।

हत्थ जोड के बेटी ने अर्ज कीती,
भैडे कम्म नू मैं नहियो जानदी आ।
बाराह वर्ष पति तो बगैर रहके,
किसे बल भी अख न लावनी आ।

बेलगाम जबान सम्भाल अपनी,
पाप करके फेर तूं बोलदी ए।
इक दिन न वेखया पवन जान्दा,
काले पाप नू कज के रखदी ए।

बारह वर्ष न पवन ने पैर पाया,
जदों गये लड़न रात लौट आये।
रात रहे अभागन दे पास माये,
जान्दे जान्दे अंगूठी पकड़ा गये।

तू करे चोरी नाले सीना जोरी,
दाव पेच तेरा नहियो चलना ई।
जाली मुन्दी दे नाल जे तूं चाहे छुटना,
पकड़ो दयो धके एहनूं कढना ई।

रोन्दी रोन्दी दे आंसू वी मुक गये,
पर सासू दे दिल न दया आई।
काला मुंह करके नीले पैर करके,
ओदी दासी नू नाले ई तोर आई।

आके पति नू गर्व दे नाल दस्या,
अपने मगरों कलंक उतार आई।
अंजना अंजन ही एत्थे बखेर दित्ता,
मैं वी पीयर दे वल ओनू तोर आई।

होके भरन दोनों जंगल विच बैके,
जदो रथी ने रथ चों उत्तार दित्ता।
गश खाके अंजना गिर पई,
झट दासी ने आन सम्भाल लीता।

सच्च प्रभु आखन कर्म वली हुन्दे,
घटा पाप दी मेरे ते छाई होई।
कलक लाके सिर ते अज मैंनू,
पूर्व कर्म दी याद दिलाई होई।

ऋिमे सति नू मे सताया होसी,
ओदे सिर ते जुल्म वहाया होसी।
अज ओंमें दे जुल्म दा भार पया,
गुरुदेव दी वाणी मैं अज सोची।

मेरे नाल सखि तू वी दुख सहन्दी,
वेकसूर नैनू मैं लपेट ल्याई,
वोली तिलका सुन तू गल मेरी,
मेरे कर्म ल्याये तू न नाल ल्याई।

दुनियादार कचैहरी च मुठ देके,
साहूकार वहूतेरे ने छुट जावन।
धर्मराज कचैहरी दा हुक्म डाढा,
पाई पाई दा ओ हिसाव लावन।

सुनसान जगल वेख दिल धड़के,
मेरा नरम कलेजा डोलदा ए।
शेर चीते वघयाट ते रिच्छ फिरदे,
कर्मा मारी दे नेड़े कोई न ढुकदा ए।

महेन्द्रपुर दे महल दे वहिर आईया
ते ड्योढीवान ने खवर सुना दित्ती।
सुन अजना नाम खुश होवदे न,
काले भेष ने खुशी मिटा दित्ती।

बच्चा वेख के खुशी दी लहर उठे,
शरीर अग सारे शुभ फड़कदे ने।
अजना मुनि दे वाक नू याद करदी,
सूरसैन जी कष्ट मिटावदे ने।

विमान अटक गया किसे गल उते,
ओस गल दी खोज दे विच आये।
मामे आन्दया वेटी पहचान लई,
ओनूं वेख के अखां चों नीर आवे।

नही देख सकदा बेटी दुःख तेरा,
चलो वैठो विमान दे विच जाओ।
अखो नीर भर अंजना वोल उठी,
पिता ससुर तज्या तुसी सोच आओ।

तेरे शील दी साक्षी विमान दित्ती,
मेरे दिल अन्दर तेरा शक कोई न।
प्राण नाल रखा सुन गल मेरी,
जग निन्दा दा दिल मेने डर कोई न।

खुशी हो विमान दे विच वैठी,
बसन्त तिलका कुमर खिलांवदी ए।
झुमका लटक रहा सी विमान अन्दर,
विजली वाग होनी लिशकां मारदी ए।

खुशी नाल बच्चा पया खेडदा सी,
उछल कूद दे विच सी डिग पया।
सारी खुशी काफूर दे वांग उडी,
झटपट विमान सी रोक लया।

गेन्दी पागल दे वाग सी माँ फिरदो,
दुखी हृदय अन्दर लगी चोट भारी।
मारे दुख खुशी नाल सहार लिते,
पुत्र गम ने कसर मिटाई सारी।

रोन्दी रोन्दी पहाड़ दे कोल आई,
पर्वत टुट होया चकनाचूर सारा।
बच्चा खुशी दे नाल पया खेलदा सी,
सिला ऊपर खेले लगे खूब प्यारा।

चुक मा ने कालजे नाल लाया,
खोई होई इमानत मी हत्थ आई।
पुना बैठ बिमान दे विच आईयाँ,
हनुपाटन दे विच अज खुशी छाई।

युद्ध विजय पाके कुमर लौट आयें,
घर घर दे विच आनन्द भारी।
मत्था टेक दित्ता मा बाप दे कोल,
पुच्छी बच्चे दी कुशल क्षेम सारी।

सारे सुखी ने बेटा परिवार अन्दर,
इक अजना ने दुख दित्ता भारी।
कुल दाग लाके सति धर्म खोया,
ऐदे दुख ने सी मेरी अक्ल मारी।

डुबदी नैया मैं अपनी बचान लई,
काला मुह करके अंजना बाहिर कडी।
ओवी करनी दा फल पई भोगदी ए,
ओनू बाहिर कड के छाती होई ठंडी।

प्रिय अंजना दी गल पवन सुनी,
सुनदे सार वेहोशी सी आन छाई।
मूर्छा टूटी ते रूदन मचान लगे,
वे कसूर सी अंजना मेरी माई।

मां सति ए अंजना जहान अन्दर,
ओस सति नूं दित्ता मैं दुःख भारी।
ऐस दुःख दा गम नहीं भुलना ए,
ए दाग न मिटेगा ऊमर सारी।

सति अंजना दे दर्शन न होन जब तक,
तब तक पानी न मुंह दे विच पावां।
पत्ता पत्ता मैं सारा ई टोल देवां,
हुन टोलन अंजना बल जावां।

गल सुनी सी मां ने पुत्र दी जद,
खूब रोंवदी नाले पछतांवदी ए।
होनी वस होके बहू टोर दित्ती,
पुत्र भेजन वेले मचलांदी ए।

ओस देवी दा दिल दुखाया सी मैं,
अज पुत्र वलों दुःख पांवदी मैं।
प्रभु रहम करीं जोड़ी आन मिले,
झोली अड़ तेथों भिक्षा चांवदी मैं।

आशा लै पवन ससुराल आया,
न मिली अंजना मन निराश होया।
वन वन दी विच ओनूं टोलदा ए,
आवाजां मारदा दिल हैरान होया।

कई दिन बीते अन्न पानी कीते,
वन वन दी खाक पया छानदा ए।
कदी शहर आवे, कदी वन जावे,
ओदी याद न दिनों भुलांवदा ए।

टोल टोल के मन निराश होया,
न कोई अंजना दासी दा पता पाया।
प्रण निभान लई चिता तैयार कीती,
सूरसैन दा गुप्तचर आया।

खुशी होके ओने सी अर्ज कीती,
हनुपाटन च अंजना विराज दी ए।
वाग वाग होया सुन अंजना नाम,
दिलो गमी नी डेरा उठावदी ए।

जदो मेल होया सी वियोगिया दा,
तदो प्रेम दे आसू वरसान लगे।
'हनुमान' नू चुक के गोद अन्दर,
खुशी हो कहे मेरे भाग जागे।

सारे सुन्चे अनदर खुशी वरस रही,
सारे अपनी २ गनो शरमावदे ने।
अंजना नीरज दे नाल समभावदी ए,
पूर्व कर्म लेखा आके लावदे ने।

कर्म नहीं जे किसी दे वस लोको,
ज्ञानी गुरु पये फरमावदे ने।
"स्वर्ण" समझ लीता कर्म जीव अन्दर
नये नये ही गुल खिलावदे ने।

(विहरमान)

श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो अर्ज हमारी ।
मैं भटकत आई प्रभु शरण तुम्हारी ॥

आप विराजो पुष्कलावती विजय में,
महाविदेह पुंडरिक नगरी मंझारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो .

चौंतिस अतिशय पैंतिस वाणी,
अनन्त बल ज्ञानी ज्ञान भंडारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो .

घट २ के सब भाव दिखत हैं,
दीजो शुद्ध समकित भाव दिदारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो...

बिन श्रद्धा प्रभु काल अनन्ता,
चार गति में दुःख पाया बहुभारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो .

मैं प्रभु क्रोधी मानी कपटी हूं लालची,
अवगुण भरया मुझ में है भारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो .

वन गिरि पर्वत नदियां है भारी ।
बीच में है विद्याधर विविध प्रकारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो .

देव सहाज नहीं पास हमारे,
उड़कर आऊं प्रभु पास कृपारी ।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो ...

करोड कर्मो का प्रभु अन्तर पढयो छ,
अनुभव ज्ञान देवो मेटो अन्धकारी।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो
जिस दिन आपका दर्श करूंगी,
वह दिन सफल गिनूंगी अवतारी।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो
वन्दना लो मान प्रभु जो पर उपकारी,
चरण कमल तो मैं जावा बलिहारी।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो
"यश" कुमर कहे शिव सुख दीजो,
जाप जपूंगी थारा वार हजारी।
श्री मन्दिर स्वामी सुन लेवो

(विहरमान)

प्रभु श्री श्री मन्दिर स्वाम दर्शन कब होसी।
प्रभु श्री श्री मन्दिर स्वाम सेवा कब होसी।
दर्शन की मन में अग्नि,
पर संग नहीं कोई साथ। दर्शन
कब वाणी कानो सुनसा,
प्रभु अमृत सरीखा वैन। दर्शन
चौतिस अतिशय विराजिया,
प्रभु वाणी गुण पैंतीस। दर्शन
आप वसो महाविदेह क्षेत्र में।
प्रभु मैं इन भरत मझार। दर्शन
पख होते तो उड कर आती,
प्रभु अवधि नहीं मेरे पास। दर्शन

कैसे आऊं, क्यों जाऊं जग २ की त्याग के।
माफ करो त्रुटियां हमारी भूल......
क्रोध मोह के जाल में, मैं फंस रहा नर नाथ हूं,
चौरासी के चक्र में, मैं घूम रहा बार २ हूं,
'दर्पण' को अब आश तेरी— —माफ

(विहरमान) ६

श्री सीमन्धिर जी महाराज,
तन की तपत बुझाने वाले।
मन की तपत बुझाने वाले,
अमृत जल बरसाने वाले। श्री..
चाहता दर्शन को मन मेरा,
मैं तो हूं आलम में घेरा।
दीजो ज्ञान मिटे दुःख मेरा,
भव की त्रास मिटाने वाले। श्री..
तस्कर पापों ने भरमाया,
जो नहीं करना सो करवाया।
रत्न के गहरा जाल बिछाया,
अब तो तू ही बचाने वाले। श्री...
तुझ बिन कौन उतारे पार,
कृपा कर दीजो जिन राज।
रख लो शरण पड़े की लाज,
भूले को राह बताने वाले। श्री...
संकट हरण तुम्हारा नाम,
दीजो आठों मुक्ति धाम।
अर्जा करे दर्शी राम,
बेडा पार लंघाने वाले। श्री—

(विहरमान) ७

श्री सीमन्दिर साहिब मेरा,
मैं चाहू तो दर्शन तेरा जी।
शिवनगरी मैंनू देवो जो डेरा,
मैं फेर न पाऊँ भव फेरा जी। श्री
प्रीत तुम्हारी प्रभु जी मीठी जो लागे,
मन मोहा दिल रलिया जी।
सुगन्ध लई द हर्ष न करिये,
ते ज्यो चम्पे दिया कलिया जी। श्री
हम इहा तुम ऊहा विराजे,
मैं क्रीकन आवा थारे थाई जी।
मनडा मेरा हर्ष हुलासे ते,
कर्म न छूटे जाए। जी—
भरतक्षेत्र मे कर्म जो पाये,
ते दूषम पञ्चम आरा जी।
हम पाये तुमने प्रकट कीने,
ते प्यारा लगे धर्म थारा जी। श्री—
दान शील तप भावना भावो,
ए जग मे तत्सारो जी।
कर्म खपाये ने मुक्ति विराजे,
वरतया जय २ कारो जी। श्री

कानों में कुण्डल जगमग सोवे,
भामण्डल चमके जी भारी । श्री सीमन्दिर...
सुरिया दा सुर वड़ा अभिनन्दु,
अखड़ियां दी धुंध है न्यारी । श्री सीमन्दिर...
पुण्या दा चन्द वड़ा जी अभिनन्दु,
असमु चौमासे दी रुत प्यारी ।श्री सीमन्दिर...
तुम दर्शन प्रभु आये सकल से,
बार २ वन्दना जी मेरी । श्री सीमन्दिर...
रतनचन्द कहे सुन देव जिनंदा,
भवसागर से तारो वलधारी । श्री सीमन्दिर...

****

(विहरमाण) १३

तिन तारक तिन लोक में ओ जिनजी,
मेरा मन लगे थारे ज्ञान में जी२ सतगुरु,
जी थारी कीर्तन मैं सुनी कान से ।
जीव सुखिया संसार में ओ जिन जी,
मेरा जीव दया रसतान में जी । २ थारीर्तन
उदय रत्न प्यारे हाथ में ओ जिनजी,
मैं तो परख लिया प्यारी सैन में । २ थारीर्तन
महाविदेह विच पयो वसयो जिनजी,
मैं तो देव न देखया दूजा जहान में । २ थारीर्तन
भव भव मैं भटक रहा ओ जिनजी,
मैं तो सुख पाया थारे ज्ञान मै । २ थारीर्तन
दान शील तप भावना ओ जिनजी,
जय २ वरतया प्यारी आन में जी । २ थारीर्तन

****

(विहरमाण) १४

पूर्व महाविदेह मे, पुखलावती विजय,
अरी राम, पुण्डरी घणी नगरी भली,
जिये जन्मया हो, श्री मन्दिर स्वाम,
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
तुम सुनयो हो हमारी अरदास कर जोडा,
ने वीनती, प्रभु के हो चर्णो की मै दास,
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
मैं तो प्रभु जी नू लादया सारवा, पीछे,
भवया हो, वहा मन्दिर मझार,
अब मरने थारे आविया तुम मेती हो हमरानिस्तार,
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
थारी चोसठ इन्द्र सेवा, करे नरनारी हो
निवावे सीस वाणी भली भगवन्ता,
दी, थानु सोवे हो अतिशय चौतीस,
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
मैं तो कर्म किये भव पाछले दुखम,
आरे हो, हमरा अवतार इक पुण्याई,
मोरी मोटकी जैन धर्म हो मैं तो लीना विचार
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
मैं तो मन माहो मग्न होय रही,
तुम सरीवा हो मैं तो लादया न देव,
रोम२ मे रम रहया तन मन मे हो रह थारी मेव
श्री मन्दिर जी नू साहिबा।
मैं तो लक्ष चोरासी मे न रूलु,
अचल पाऊ हो अचल पद पर थाम,

रिखरायचन्द जो की वेनती कर जोड़ी,
हो वन्दु सीस निवाय। श्री मन्दिर जी नूं
सम्मत अठारह पच्चीस में शहर वीका हो,
वीका नगर चौमास, देव गुरु प्रसाद से,
मेरे हिवड़े हो पाम्या हर्ष हुलास
श्री मन्दिर जी नूँ साहिवा

****

विहरमान १५

सीमन्दिर स्वामी अर्ज सुनो इक बार।
जी आप विराजो महाविदेह में, मैं इस भरत मंभार।
किसविध अन्तर बात सुनाऊ, लगी रही दिल नूं आसजी।
सीमन्दिर—
जी चर्म जिनेश्वर हुआ जगत मे त्रिशला नन्दन वीर।
जिनके आगे थे चौ ज्ञानी गोतम जैसे वजीर जी।
सीमन्दिर...
जी श्रेणिक राजा था प्रमत मे, नहीं त्याग पच्चखान।
वाहु अन्तर पहला जिन होसु भाख्यो श्री भगवान।
सीमन्दिर.
राज ग्रही का अर्जन माली, पाप किया था भारी।
छः महीने अन्तर माँही पहुंचया मोक्ष मंभार जी। सीमन्दिर
परदेशी राजा का रहता था, लोहे खड़ग विच हाथ।
उन को भी सुबाहु के माही, मोक्ष कही साक्षात। सीमन्दि
एवता कुमर नाव तराई इसी भव के माही।
वीरजिनन्द्र सुदिष्ट करी ने, दीना मोक्ष पहुंचाई। सीमन्दि
कहीं स्वर्ग कही शिवपुर भेजा इक भव में शिव थासी।
अन्तर जामी मुझे क्यों भूलो, दिल में उपजे हांसी। सीमन्दिर

जी आप कहो तो हाजिर नहीं था, निर्णय किम विध होमे।
हाजिर रही ने निर्णय करना, तो किम नही बताओ सीमन्दिर
मृगा लोढा था घर माही, कब ओ दर्शन आया।
कर दीना निस्तार प्रभ ने शास्त्र माही गाया सीमन्दिर
मुझे भरोसा आप का जी, सुनियो दीन दियाल।
मूव चन्द की यही अर्ज है मुख दीजो दुख टाल सीमन्दिर

(साधु के लक्षण) १६

पहला लक्षण साधु का जी क्षमा तना जी भण्डार।
कठिन वचन सहे लोक ना जी क्रोध न करो लगार।
मुनीश्वर धन्य २ ते अनगार—
दूजा लक्षण साध का जी, कपट सु रहे दूर।
कपटी गुरु जगत के जी, पहुचे नही हजूर मुनीश्वर
तीजे लक्षण साधु नो जी, लोभ न करे लगार।
लोभी गुरु जगत मे जी, शोभे नही ससार मुनीश्वर
चौथे लक्षण साधु नो जी, मद न करे लगार।
आठ मद जिनवर कहा जी, भरमावें ससार—मुनीश्वर
पाचवें लक्षण साधु नो जी, हल्का रहे द्रव्य भाव।
द्रव्ये तो भण्डे उपकरण सु जी, भावे विषय विकार मुनीवर
छठे लक्षण साधुनो जी झूठ न बोले लगार।
भावे तो गर्दन पड़ो जी, कोई मेलो तलवार मुनीश्वर
सातवें लक्षण साधु नो जी, सयम मे तल्लीन।
आठ पहर मगन रहे जी, तपस्या माही तल्लीन।
बारह भेद जिनवर कहो जी, ज्ञान तना जी भण्डार।
हेतु जुगत समझावता जी, देवे पार उतार मुनीश्वर
दसवे लक्षण साधुनो जी शील पाले नव वाड।

कभी मिट्टी कभी पानी,
कभी नरदेव विकलेन्द्रि
कभी तेउ कभी वाउ,
बचालोगे तो क्या होगा। ।श्री ..

इसी संसार सागर में,
प्रभो मेरी डूबती नैया,
करी करुणा किनारे पर,
लगादोगे तो क्या होगा। श्री

करो प्रभु पार भवोदधि से,
निजात्म सम्पदा दीजो,
सेवक को अपना वल्लभ।
बना लोगे तो क्या होगा श्री ..

****

(विहरमान) २०

तर्ज—तेरे प्यार का आश्रय ..

श्री मन्दिर प्रभु तू ही सहारा,
तरसता है दर्शन को जिया हमारा।
कहीं पर है नदियां, कही पर है खाई,
कहीं पर्वतों की है उंचो चढ़ाई।
क्योंकर मैं आउं यह दूं मै दुहाई,
तुमने तो मुझको है बिल्कुल विसारा। श्री ..
शक्ति नही जो उड़ कर आउं,
चरणों की धूली आ मस्तक लगाऊं।
किसको मैं अपनी कहानी सुनाऊं,
गूंगे का भगवन् समझ लो इशारा। श्री ..

ज्ञान की आँखें भुलाओ में खलदो,
काट डाले कर्मों को अब कनिमल दो।
दया से ही बस तार दो निर्बल को,
खुला है तुम्हारे दया का भण्डार। श्री.
श्री मन्दिर प्रभु न हो सहारा,
तमन्ना है दर्शन को जिया हमारा।

* * *

(विहरमान २१)

श्री मन्दिर प्रभु तेरे दर्शन को चाऊँ,
मैं दिन रात तेरा ही ध्यान ध्याऊँ।
मोह के भवर में मैं ऐसी फसी हूँ,
जग में आवागमन में लगी हूँ,
कृपा करके अब ना मैं चरणों में आऊँ। श्री..
इगानी है दुनिया विकट रास्ते हैं,
ओड़ महावीर विरले ही लाघते हैं,
मैं निबल भी तेरा दर खटखटाऊँ। श्री
कर्मदल के बादल घटाटोप छाये,
मेरी आत्मा को यह निर्बल बनाये,
सबल बन सकें ऐसा वरदान चाहूँ। श्री
मैं मानू यह भगवन तुम्हीं आधार हो,
'स्वर्ण' की नैया के पतवार हो,
चरण रज से जीवन को पावन बनाऊँ। श्री —
श्री मन्दिर प्रभु तेरे दर्शन को चाऊँ
मैं दिन रात तेरा ही ध्यान ध्याऊँ।

* * *

(विहरमान २२)

तर्ज—चुप २ खड़े हो

श्री मन्दिर प्रभु तेरा ही आधार है,
तेरा ही आधार प्रभु तू जगतार है।
महाविदेह क्षेत्रों में आप ही विराजते,
भवप्राणियों को भवसिन्धु से तिरावते,
करूणा निधान प्रभु तेरा हीआधार है। श्री .
कंचन सी काया प्रभु आपकी हो शोभती,
देख २ छवि मेरे नयनों को मोहती,
तुम ही तिरावन हार तेरा ही आधार है। श्री .
आड़े पर्वत वन नदियाँ सघन है,
वेताड़गिरि पर्वत एक ही अखण्ड है,
किमकर आऊं मेरा ध्यान दिन रात है। श्री .
लाख चौरासी जीव योनि से आया हूं,
एक ही सहारा प्रभु तेरा ही पाया हूं,
मोहनीय कर्म की माया अपरम्पार है। श्री .
अनमोल रत्न जीवन पाया कठिन मे,
जन्म जरा न मरण छूटा न मुझसे,
दीनाबंधु दीन की यह छोटी सी पुकार है। श्री .
विक्रम सम्वत दो हजार सात में,
कोटा नगर रामपुरा बाजार में,
चन्दन और मुल की नैय्या फिर पार है। श्री ..
तेरा ही आधार प्रभु तू ही जगतार है।

***

(गणधर) १

श्री वीर प्रभु जी के गनधर प्रथम पाट सिरनामी।
मैं साधु नित अनगार सुधर्मा स्वामी
सब छोड दिया ससार जगत की माया,
गुरु भेटया त्रिलोकी नाथ आपजिन राया,
गन्धर की पदवी पाई सुधारी काया,
चौदह पूर्व का ज्ञान हमे समझाया,
ए करे धर्म उद्योत मोक्ष के गामी २
मैं साधु नित अनगार सुधर्मा।
पूण आयु को वर्ष एक सौ वारी,
पचास वर्ष ग्रहवास रहा सुखकारी,
फिर माग पकडया मोक्ष तणा गुणधारी,
शुद्ध पाले पाच आचार आत्मातारी,
ए ज्ञान चार प्रकाश प्रकट है नामी,
मैं साधु नित अनगार सुधर्मा स्वामी।
छदमस्त व्यालिस वर्ष रहा ऋषि राया,
फिर शुद्ध भावो मे उज्जवल ध्यान है ध्याया,
कर्मो की उडाई पोट मोहनीय माया,
घट प्रगट देखी तीन लोक अभिरामी,
मैं साधु नित अनगार सुधर्मा स्वामी।
सूरत है सब मे अधिक आकी प्यारी,
दर्शन दौलत है इन्द्र लोक अवतारी,
केवल पर्याय आठ वर्ष की धारी,
फिर गये मोक्ष तब देखी रचना सारी,
जम्बू जी बैठे पाट मोक्ष के गामी,
मैं साधु नित अनगार

जिन्हों के चरणों का निशदिन लईए शरना,
आ बैठ धर्म की नाव समुन्द्र तरना,
ए जप कर तपकर लो पाप से डरना,
मै अर्ज करूं कर जोड़ नाथ के चरणा,
नन्द लाल तना गुण गाये हर्ष अति पामी,

***

(गणधर) २

जी चौविस में श्री वीर जिनेश्वर शासन मांही शृंगारी,
जी चौदह सहस्त्र मुनिश्वर कहिये गौतम अधिकारी।
गणधर जी परउपकारी ··
जी बार २ मैं वांधु ग्यारह चर्णा तो वारी।
गणधर जी
जी अग्नि भूति ओ महा मुनिशवर ए शुद्ध अनगारी,
जी पांच महाव्रत पाल मुनिश्वर दूषण सब टाली।
गणधर जी ··
जी वायुभूति विकट स्वामी सुधर्मा गुणधारी,
श्री वीर जिनन्द्र जी के पाट विराजे भव्य जीवातारी।
गणधर जी ··
जी छटा गणधर मण्डी हुआ छोड़ दिया ससारी,
जी क्रोध मान माया मद जीत्या तारयो ब्रह्मचारी,
गणधर जी···
जी मौरी पुत्र महा मुनीश्वर ए शुद्ध अनगारी,
ची आप तरे औरों को तारया पाखण्डी मद गाली।
गणधर जी···

जी अकम्पित जी अचल जी ने आत्मा निस्तारी,
जी कर्म तोड के मुक्त विराजे जाता बलिहारी ।
गणधर जी

जी मेनाराज श्री प्रभास सिमर दिया सुखकारी,
जी जाप जपदया पाप विनासे मुक्ता की तैयारी ।
गणधर जी

जी जाप जपन्दया पाप विनासे सिमर दिया सुखकारी,
जी डाकन शाकन भूत प्रेता जावे सब टाली ।
गणधर जी

जैन धर्म की करो पालना क्षमा खडगधारी,
जी वैरो कर्मा नू अनगे करिये मुक्ता की तैयारी ।
गणधर जी

जी माघ २ श्री टोडरमल जी बाल ब्रह्मचारी,
जी रिखबदास उम प्रकासे सुन जो नर नारी ।
गणधर जी

(गणधर) ३

गणधर के २ चरण मे शीश धरो ससार से तरना है,
इन जपदया २ सुख सम्पत्ति मिले मिटे भव२ फिरना है ।
श्री इन्द्र भूति जी महाराज हुए,
सब मुनियो के सरताज हुए
तुम सयम २ के प्रताप से सूत्र मे वरना है ।
गणधर के २ चरण

श्री अग्नि भूति जी पुन्यवान हुए,
वायु भूति गुणवान हुए,
रिखब हृदय २ धार के हो निशदिन रटना है ।
गणधर के

श्री सुधर्मा जी ज्ञानी हुए,
महावीर चमन के माली हुए,
घर घर में २ ज्ञान फैला दिया सूत्र की रचना है।
गणधर के

मण्डी पुत्र गुणों के सागर है,
मोरी पुत्र गुणों के आगर है,
अकम्पित २ हृदय धार ले जे आनन्द पाना है।
गणधर के ·

श्री अचल प्रभु जी अचल करो,
मेतारज सारे पाप हरो,
प्रभास जी २ की महिमा फैल रही अन्धकार को हरना है
गणधर के ··

अब एही तमन्ना मेरी है,
तारो भव से करो न देरी है,
सुदर्शना २ चरण में आ गई हो निशदिन तरना है।
गणधर के ··

* * *

(गणधर) ४

ऐसे गणधार जी को वन्दना हमारी।
ऐसे मुनिराज जी को वन्दना हमारी ।।
वन्दना हमारी वन्दना हमारी। ऐसे ··
इन्द्रभूति अग्निभूति वायुभूति जी,
विकट मुनि सुधर्मा वीरपाटधारी। ऐसे
मंडीपुत्र मोरीपुत्र अंकरसालिया,
अचल मेतारज श्री प्रभा आत्मा तारी। ऐसे...

इह ग्यारह गणधर वीर जी व्याख्याने,
अमोलक ऋषि मुनि जैन सम्प्रदाई।
ऐसे गणधार जी को वन्दना हमारी।
ऐसे मुनिराज जी को वन्दना हमारी॥
वन्दना हमारी वन्दना हमारी।

***

(गणधर) ५

ग्यारह ही गणधर नित नमू छ,
वीर जिनन्द जी का शिष्य रे।
भवसिन्धु पार उतार जी,
कृपा करे दीना नाथ रे। भवसिन्धु—
इन्द्रभूति जी ने अग्निभूति जी,
वायूभूति तीजा जान रे। भवसिन्धु
विक्तमुनि जी ने सुधर्मा स्वामी,
जम्बू सरीखा जान रे। भवसिन्धु
मंडी पुत्र जी ने मौरा पुत्र जी,
अरु पिता जय २ कार रे। भवसिन्धु—
अचल मेतारज ने नित उठ वान्दु,
प्रभा जी का ध्यान रे। भवसिन्धु—
नाम लिया थी रोग नमावे,
आवे आनन्द अपार रे। भवसिन्धु
चौदह पूर्व नू ज्ञान वन्यो छ,
पाम्या छ केवल ज्ञान रे। भवसिन्धु.
विचरत २ भ्रमरा मे आविये,
आठो ठान जी दीक्षा काल रे। भवसिन्धु—
गुरु समारा रत्न कुवर जी,

कोना छोपट उपकार रे। भवसिन्धु..
बाल कुमारी चन्दन वाला,
चर्णा तो जावे बलिहार रे। भवसिन्धु.

*

(गणधर) ६

वीर प्रभु के गणधर मैं तो नमती चरण,
गुण गाना सदा ओ गुण गाना सदा।
वायुभूति हैं तात तुम्हारे,
माता पृथ्वी के नन्द प्यारे।
वह है इन्द्रभूति और अग्निभूति। गुण...
वायुभूति विकटमुनि ध्याऊं,
स्वामी सुधर्मा जी को शीश झुकाऊं।
सुन लो मंडी मोरी आशा पूरो मेरी। गुण...
अंकपिता अचल सुख पावे,
मेतारज मुनि मोक्ष सुधारे।
नमो श्री प्रभास मैं तो करूँ। गुण..
चवदे पूर्व आप हो धारी,
ग्यारह गणधरों ने आत्मातारी।
वह है मोक्षगामी सबके अन्तरयामी। गुण—
सम्वत २००८ के माँही।
फागुन सुधि वह पूर्णम आई।
करती चचल अजी प्रभु जी तारो जल्दी। गुण...

*

(गणधर) ७

वीर प्रभु जी के गणधर मनाऊ मैं,
सच्चा सुख पाऊ मैं जी सच्चा सुख—
वीर शरण जब इन्द्रभूति आया था,
करके प्रश्न तब सशय मिटाया था,
अग्नि भूति जी को शीश भुकाऊ मैं।
सच्चा सुख पाऊ मैं जी—

वायुभूति विकटमुनि करुणा निधान थे,
सुधर्मा स्वामी जिन शासन शृगार थे,
वीरपाटधारी जी के मगल गाऊ मैं।
सच्चा सुख पाऊ मैं जी—
मडीपुत्र मोरीपुत्र जीवन सुधारा था,
अकपिता ने लिया वीर का सहारा था,
अचलभूति जी के गुणो को सुनाऊ मैं।
सच्चा सुख पाऊ मैं जी
मेताराज प्रभास गणधर चरणो मे रहकर,
मुक्ति मे पहुचे केवल ज्ञान को पाकर,
जीवन बनाकर 'स्वर्ण' मुक्ति को पाऊ मैं।
सच्चा सुख पाऊ मैं जी

&

रूप चन्द जी महाराज की स्तुति

पुण्य की रत्ती जागी जी, रूप चन्द महाराज त्यागी जैन
वरागी जी ..

१ जी सम्वत अठारह साल अठाठ शहर लुधियाना
जी माघ वदी दिन दसवीं के विच हुआ महाराज का आना
पुण्य...

२ जी विच नगर दे चैन जो होई खुशी होई घर घर में
जी भागवान दे घर मै आये भावडया दे जन्मे
पुण्य...

३ जी पिता अमोलक राय जिन्हों के, मंगला देवी माई।
जी उतम पुरुष उन्हां घर आये, पल पल कला सुहाई।
पुण्य

४ जी होय सयाने लगे विराजन, फेर कोटले आये।
जी जो साधु मुख पति वाला, सब के स्थानक जाये।
पुण्य

५ जी चढ़या नसीबा धर्म ज्यू पक्के, ज्यू २ होय जवान।
जी पल २ में प्रणाम चढान, सुनन रोज व्याख्यान।
पुण्य

६ जी फागुन वदी दुवास्ती नूं, विरख साध की शिक्षा।
श्री नन्द लाल महाराज अगाड़ी, लई चरण में दीक्षा।
पुण्य

७ जी नगर बड़ौदे दीक्षा लीनी, बांगर देश मंझार।
जी रति राम दे टोले दे विच साधु होया प्रकाश।
पुण्य

८ जी वाई परिसह सहन जू लगे, दोष व्यालीस टाल।

***

जी देस २ मे फिरे विचरते जप सयम दे नाल ।
पुण्य

९ जी न खोटी न खरी किसे दी, जरा छिद्र न फोले ।
जी निश्चय वचन अटल उन्हो के, जो कुछ मुख मे बोले ।
पुण्य

१० जी इको वेला आहार चुकेदे, इक दो वेला पानी ।
आठ पहर मुख से पढते रटना, भगवता दी वाणी ।
पुण्य

११ जी आगे से सरनाटा पैदा, जिस पासे नू जावे ।
जी बाहर जान का नेम जो कीना, जगल देश मे जावे ।
पुण्य

१२ जी द्रव्य त्यागी हाट हवेली, शाल दुशाले छेद ।
जी, कोई अगाडी बोल न सकदा, ऐसा मस्तक तेज ।
पुण्य

१३ जी एसा सूक्ष्म सुभाव उन्हो का, देखो अजब तमाशा ।
जी जे खडका तिनके का होवे, नीद न आवे मासा ।
पुण्य

१४ जी एक समय मालेरकोटले, वस्त्र लै गये चोर ।
जी एक चादर चौमासा कीना, तप सयम दे जोर ।
पुण्य

१५ जी जो भाई स्थानक मे आवे, ऊची बात न करदे ।
जी जैसे हस्ती डरे शेर से, ऐसे दूरो डरदे ।
पुण्य

१६ जी जो भाई स्थानक मे आवे, लग्न जिन्हा नू भारी ।
जी जो आवे सो पैदल आवे, न ल्यावे असवारी ।
पुण्य

१७ जी जो सवारी लै के आवे, भुल चुक अनजान ।
तो उसके शहर में जाने का, इक साल दा पच्चखान ।
पुण्य—

१८ जी जो सुनी सो कहूं मुख से, झूठ जरा न बोलूं ।
जी जहा २ चौमासे कीने, उसको वैसे आखूं ।
पुण्य...

१९ जी चार कषाय भस्म जो कीनी, दृष्टि टिकाई आन ।
जी इक चौमासा अलवर कीना, इक किया सनाम ।
पुण्य ..

२० जी दो चौमासे मलेरकोटले, सत किये समाने ।
जी इक चोमासा खोते कीना, सत कनेके ठाने ।
पुण्य —

२१ जी दो चौमासे नाभे कीने, दो कीने पटियाले ।
जी इक चौमासा वडेचा कीना, इकौ छीटावाले ।
पुण्य—

२२ जी छः चौमासे रायकोट में, सत किये भदौड़ ।
जी उपदेशॉ दी झड़ी लगाई, घर घर मचया शोर ।
पुण्य...

२३ जी इक चोमासा फरीदकोट में, दस किये जगरांवॉ ।
जी ऐसे उत्तम महाराज के, चरणी सीस नवावां ।
पुण्य...

२४ जी सम्वत् उन्नी सौ साल सैंती, होये चौमासे व्यालीं ।
जी जेठ वदि दुवास्ती नू उत्तम क्रिया पाली ।
पुण्य...

२५ जी उसी रोज जगरावा दे विच, भव पूरे गये हो।
जी महाराज देवलोक पधारे, वजे रात के दो।
पुण्य

२६ जी महाराज की उमर बनाऊ फर्क न रखु कोये।
जी माल उनाठ चार महीने, दो दिन ऊपर होये।
पुण्य

२७ जी महाराज का काल जो होया, साधु गये सब डोल।
जी उन साधा का नाम वतावां जो उस वेले कोल।
पुण्य

२८ जी विहारी लाल जी महेश राय जी, कर्म चन्द धनपाल।
जी विरग भान जी पाली राय जी कुन्दन ए? साध मतपाम
पुण्य

२९ जी भाईया ने विमान वनाया महाराज जी सुते।
जी दिन चढदे नू आये टुगाने पये ज्यान्दे उत्ते।
पुण्य

३० जी महाराज जी नू लैके चले, वाजे गाजे अग्गे
जी टक्के रुपये, खूब लुटाये—याचक लुटन लगे।
पुण्य

३१ जी छोना मल गुरु दयाल का मशहूर है बाग।
जी उसी वाग मे मे नन्दन लेकर, दिया मरीगा दाग।
पुण्य

३२ जी शेरु राम जैनी भाईयो के नित नमावे मीस।
जी 'अकल' वुद्ध वहुतेरी पाई वहुती करदा रीस।
पुण्य

३३ जी जिन वाणी नू पढके होया मुक्त पुरी दा वास।
जी साधु मार्ग को भुक २ नन्दन करदा शेरु राम।
पुण्य—

हरिचन्द्र का सजाह

१ हरी चन्द की सुनो वार्ता, खोलो हकीकत सारी।
नगरी अयोध्या राज करे गा, धर्म रूप अवतारी ॥
२ ऐसा दानी दान करेगा, भक्ति है अपारी।
सुपने दे विच मनस देई नौ खन्ड पृथ्वी सारी।
३ सुत्ता उठा जब हरि चन्द राजा मुख से वचन उचारे।
इतना दान मै किस को देवां सुन तारा वन्ती नारे।
४ विश्वामित्र आन खलोता हरि चन्द के द्वारे।
तीन वचन राजा से मांगे मुख से वचन उचारे।
५ आए मुनि का आदर कीना आसन पर बिठलाए।
तिन प्रकमा लई मुनि से चरणी शीश नवावे।
६ राज पाठ सब दिया मुनि को जरा भ्रम न लाई।
राजा जी मुझे देवो दक्षणा मुनिवर आख सुनाई।
७ मोरा मोती हरिचन्द विच थाल दे ल्याए।
राजा रानी हाथ जोड़ के पास मुनि दे आये।
८ ए वस्तु हमारी राजा देख मुनि घबराये।
हरिचन्द कहे सुनो मुनि जी मत इतना घबराये।
९ तारा वन्ती नार वेच के रुनी दास ले जावे।
जल्दी दाम हमारा बटो दक्षिणा अपनी पावो।
१० रुनी दास और तारा वन्ती दोनो नग्न कराके।
जेवर वस्त्र छीन लयो बिन वस्त्र अंग लगाके।
११ बड़ी भीड़ राजा को दीनी राजो बाहर कराके।
तीखी धुप गजब दा पैन्डा राहे काशी में जाके।
१२ विश्वामित्र बड़ा दिरौधो थां थां प्योद लगावे।
लग रही प्यास नही जल पीना हर का नाम ध्याके।

१३ विश्वामित्र कर्गी मुनयादी विच बनारस जाके।
तीन जीव ललाम जु हुन्दे टोटी पिटे बाजारे।
१४ दो पुरुष एक सुन्दर औरत विकदी विच बजारे।
विश्वामित्र कीमत पावे फोरन के तीन भारे।
१५ हरिचन्द राजा की कीमत भगी आके पावे।
दो भारन ते छोरन देकें घर अपने ले आवे।
१६ रनी दास और तारा वन्ती डेढ भार मुल पावे।
ले गई वेश्वा घर अपने जा मूडे पर बिठलावे।
१७ बिलु ताप रानी ने कीता ए की जुल्म कमावे।
शिव दयाल ये भावी प्रबल लीला लिखी न जावे।
१८ बिलु ताप रानी दा सुन के सहुकार टुर आया।
विश्वामित्र ताईं बुलाके बात कही समझाया।
१९ तारा वन्ती मैंनू दे दे ज्यादा कीमत पाके।
सहुकार ने नफा जो दीदा ते आदी छुडवाके।
२० रनी दास और तारा वन्ती सहुकार घर रहन्दी।
सहुकार ने धर्म जू पालया मारी चितकन कहन्दी।
२१ कतना पिसना उस दा कर दी विपदा सिर पर सहन्दी।
शिव दयाल मत वन्ती तारा नाम गुरा दा लदो।
२२ हरिचन्द भगी दे घर दा पानी रोज ले आवे।
सुका सीदा लै अन्गों से भोजन रोज बनावे।
२३ अधी रात पहर दा तडका हरिया भोजन पावे।
विश्वा मित्र साधु दे पिज नित भोजन नू आवे।
२४ इक दिन हरिया गया नीर नू मूह पर घडा टिकाया।
विश्वामित्र टीम मारके तीन टुकडे कर आया।
२५ हरिया कहन्दा सुन भाई भङ्गी फुट गया घडा तुम्हारा।
झाटू लैके भगन आई हरिचन्द को मारा।

२६ हरिचन्द का मालिक चूड़ा हो गया दुख दाई।
पानी भरना छुड़वा दिया फिर चक्की हत्थ फड़ाई।
२७ कोमल हाथों से पीसया न जावे भंगन छड़ी चलावे।
शिवदयाल ये भावी प्रबल लीला लिखी न जावे।

२८ भंगी कहन्दा सुन भाई हरिया काम करो दिल देके।
विच मसानी काम तुम्हारा वैठो बाहर जा के।
२९ रात दिवस राखी करना मत कोई मुरदा आवे।
ता मुरदे फूंकन देना सवा रुपैया लैके।
३० हरिया जांदा विच मसानी जाके फ़ेरा पावे।
करे दलीलां धरती फोले मस्तक हत्थ लगावे।
३१ हरिया कहन्दा भागन कर्मन भावी कौन मिटावे।
होनी होवे जो हो के रहेगी सोईयों सिद्ध करावे।
३२ भावी वरती देवतयाने देख सभा लगाई।
विच सभा दे द्रोपदा नारी नगन होन को आई।
३३ रामचन्द्र बनवास सिधारे सीता रावण चुराई।
शिवदयाल ए भावी प्रबल हरिचन्द पे आई।

३४ इक रुनीदास गया जू खेलन घर दे वाहर जाके।
बाल अवस्था खेल प्यारी चित मुड़या विच लाके।
३५ सारे बालक गये बाग नूं देख बाग मन भावे।
खिल रहे फुल सुनहरी सुन्दर इक तो इक सुहावे।
३६ रुनी दास ने तोड़ २ फुल विच झोलो दे पावे।
विश्वा मित्र वड़ा विरोधी थां थां प्योद लगावे।
३७ वनया नाग वड़या विच वाड़ी, फुल्लों में छिप जावे।
उसी नाग ने डंक जूं मारया, रूनी दास मर जावे।
३८ रूनी दास गिरा धरती पर, सब वालक डर जावे।
मारे आवाजा वोले नाही, सब वालक नठ जावे।

३९ दाडे २ आये नगर मे, घर तारा दे जावे।
रुनी दास मर गया बाग मे, सारा हाल सुनावें।
४० सुन तारा पिट नीली होई, महूकार घर है नही।
हाय २ करदी गई बाग मे, देखे लडके ताई।
४१ पुत्र पुत्र कर आवाजा मारे, कर कर लम्बी बाही।
हाय रुन्ना कुछ पेश न जावे, की कीता रुब्ब साई।
४२ छोड अकेली चल्या मैनु, मां कटारी मरागी।
नहीं पुत्र दो गल्ला करलै, नही ता नाल मरागी।
४३ नाग बन्नी ने चुक्या बालक, विच भोली दे पावे।
विलाप रानी ने कीता, की कोई आख सुनावे।
४४ बाहरो बाहर लै गई इस नू, दिन थोडा रह जावे।
रुनी दास दे फूकन खातिर विच मसानी जावे।
४५ रुनी दास दा बाप जू हरिया, रहन्दा विच मसानी।
ता मुर्दे नू फूकन देन्दा, सवा रुपया लेके।
४६ नजर पडी जब तारा उते, हरिया कौन आ बहन्दा।
इस रानी ऐन्दे पत्तो आई, हरिया मुख से कहन्दा।
४७ रानी ने दिखलाया बालक, यह है पुत्र तुम्हारा।
आज बाग मे गया जू खेलन, इस सप ने मारा।
४८ हरिचन्द ने देख्या बालक, सारा हाल दा नारा।
सवा रुपया नू वी देदे, हरिया मुख से कहन्दा।
४९ पल्ले पैसा इक न मेरे, पर २ करदी गुलामी।
पल्ले रोवें है गुजरा सुन, भरता मेरे स्वामी।
५० मर पुत्र दा सोग न मैनू इस मालिक दा भावे।
सारो मुश्किल पड दिया मेरा, धर्म छीन हो जावे।

५१ इतनी बात सुनी तारा ने, जबाब कोई न आवे।
रूनी दास दा कफन जाके, हरिये हत्थ फड़ावे।
५२ सवा रुपये दे विच कफन, हरिचन्द ने पाया।
जल्दी मुरदा फूक दिया, फिर जेरा भ्रम नही लाया।
५३ संस्कार किया जब रूनी दास का, तारा सोच विचारे।
जा बैठी यमुना दे घाट पर, रो रो धाड़ा मारे।
५४ किसी सेठ का गवाचा बालक, फिरे ढूढता सारे।
उसी सेठ ने करी मुनयादी, पता निशान निकाले।
५५ जिस सेठ का गवाचा बालक, नाल सेठ जावे।
जेहड़ा बालक गया बाग में, सोईयों डाकनी खावे।
५६ जोश आया तब राजे ताई, हुक्म देवो अभी जाके।
विच मसानी हरिये नू आखो, कतल करो अभी आके।
५७ तलवार खेंच लई हरिचन्द ने रुदन करे बड़े भारी।
धर्म हमारा छीन हो जावे, जो औरत न मारी।
५८ इतनी बात सुनी ब्रह्मा ने, गरुड़ करी असवारी।
हरि चन्द जद मारन लगा, पकड़े हत्थ मुरारी।
५९ हरि चन्द जैसा राजा होवे, तारा वन्ती नारी।
रूनी दास जैसे पुत्र होवे, विश्वा मित्र भिखारी।

***